

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186767

UNIVERSAL
LIBRARY

कठवल्लीउपनिषद् ,

अनुवादक—

रायबहादुर बाबू जालिमसिंह

—:~:—

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित व प्रकाशित ।

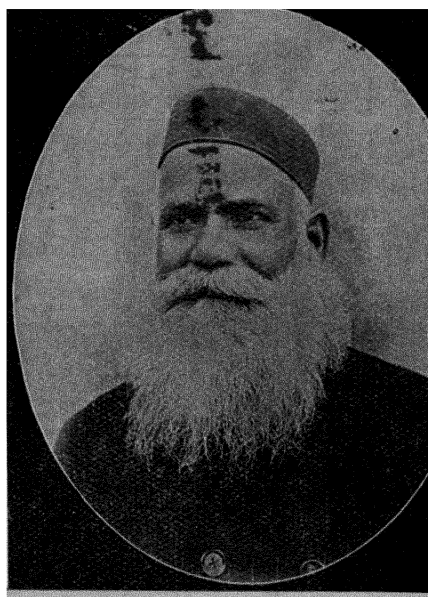
सन् १९२३ ई०

पाँचवीं बार •

—:~:—

लखनऊ

All Rights Reserved.



रायबहादुर बाबू जालिमसिंह

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां
मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् ।
यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा
यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥
यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रिया-
ण्यर्वाकृतीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः ।
षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः
तं वन्दे मरमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको , जो अनन्त निजरूप ।
जेहिजानेजगभ्रमसकल , मिटै अन्धतमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं , नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं , रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद , ताका करूं विचार ।
भाषामें तिस अर्थको , लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो , सो मैं करूं बखान ।
परमानन्द सहाय ते , जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट , अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू , जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये
उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर

असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषाटीका रचीगई है । इस टीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्त की ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायें तरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसका है प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्ति के अनुसार लिखा गया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्या का भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्र का पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंही से सिद्ध किया गया है अपनी कल्पना कुछ नहीं की गई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गया है ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबाद-भिन्नपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उससे टीकाकर्ता को सूचना करै ताकि अशुद्धता दूर होजावै ।

कठवल्ली उपनिषद् ।

मूलम् ।

उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ओम्, उशन्, ह, वै, वाजश्रवसः, सर्ववेदसम्, ददौ, तस्य, ह, नचिकेताः, नाम, पुत्रः, आस ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

हवै=निश्चय करके

उशन्=यज्ञ के फल की इच्छा करता हुआ

वाजश्रवसः=वाजश्रवा का पुत्र उद्दालक ऋषि

सर्ववेदसम्=सब धन को विश्वजित यज्ञ में

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

ददौ=देता भया

तस्य=तिसका

ह=ही

नचिकेताः=नचिकेता

नाम=नाम

पुत्रः=एक पुत्र

आस=था

नोट—वाज नाम अन्न का है तिस अन्न के दान करने से हुआ है श्रव याने यज्ञ जिसका तिसका नाम है वाजश्रवा तिसका जो पुत्र है उसका नाम है वाजश्रवस उसी का नाम उद्दालक भी है वह उद्दालक यज्ञ के फल की इच्छा करता हुआ विश्वजित नामक यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देता भया ॥ १ ॥

मूलम् ।

त ॐ ह कुमार ॐ सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश
सोऽमन्यत ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, ह, कुमारम्, सन्तम्, दक्षिणासु, नीयमानासु, श्रद्धा, आवि-
वेश, सः, अमन्यत ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	तम्=तिस नचिकेता को		श्रद्धा=श्रद्धा
कुमारं संतम्=कुमार अवस्था होत			आविवेश=होती भई
सन्ते			+ च=और
ह=भी			सः=वह
दक्षिणासु=दक्षिणा में गौओं को			अमन्यत=विचार करता भया
नीयमानासु=ले जाने पर			

नोट—वह नचिकेता जिसकी आयु पांच वर्ष से अधिक न थी
ऐसा सोचता भया कि वेदोक्त यज्ञ के विगुण व्यतिक्रम होने से
अनिष्टफल की प्राप्ति होती है जब ऐसी बुद्धि उसकी हुई तब
वह पिताके अनिष्ट फल की निवृत्ति के वास्ते विचार करता है ॥ २ ॥

जैसे कि दूसरे मन्त्र में लिखा है—

मूलम् ।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ॥

अनन्दानाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

पीतोदकाः, जग्धतृणाः, दुग्धदोहाः, निरिन्द्रियाः, अनन्दाः, नाम,
ते, लोकाः, तान्, सः, गच्छति, ताः, ददत् ॥

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 पीतोदकाः=पान करलिया है जल
 जिन्होंने याने आगे जल
 पान करने की शक्ति
 नहीं है जिनको
 जग्धतृणाः=खालिया है घास जिन्होंने
 याने अब घास खानेकी
 शक्ति नहीं है जिनको
 दुग्धदोहाः=दोह लिया गया है दुग्ध
 जिनका याने आगे को
 प्रसूतयोग्य नहीं हैं जो
 त्रिरिन्द्रियाः=निष्फल होगई हैं इन्द्रि-
 यां जिनकी याने मरने के
 समीप हैं जो

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 ताः=ऐसी गौबों को
 यः=जो पुरुष
 ददत्=देता है
 ते=वे
 + ये=जो
 अनन्दाः=आनन्दरहित
 नाम=वाले
 लोकाः=लोक हैं
 तान्=तिनको
 सः=वह
 गच्छति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

सहोवाच पितरं तत कस्मै मान्दास्यसीति द्वितीयं तृतीयन्त
 ॐ होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

सः, ह, उवाच, पितरम्, तत, कस्मै, माम्, दास्यसि, इति, द्वितीयम्,
 तृतीयम्, तम्, ह, उवाच, मृत्यवे, त्वा, ददामि, इति ॥

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 सः=वह नचिकेता
 ह=निरुचय करके
 पितरम्=पितासे
 उवाच=कहताभया कि
 तत=हे तात हे पिता
 कस्मै=किसके प्रति

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 माम्=मुझको
 दास्यसि=देगा तू
 इति=इसप्रकार से
 + यदा=जब
 द्वितीयम्=दूसरी
 तृतीयम्=तीसरी बार

सः=बह नचिकेता
 ह=हठकरके
 उवाच=कहताभया
 त्वा=तुम्हको
 मृत्यवे=मृत्युके प्रति

ददामि=देऊंगा मैं
 इति=ऐसा तब
 उद्दालकः=उद्दालक
 आह=कहताभया

मूलम् ।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः किंस्वित् यमस्य कर्तव्यं
 यन्मयाद्य करिष्यति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

बहूनाम्, एमि, प्रथमः, बहूनाम्, एमि, मध्यमः, किंस्वित्, यमस्य,
 कर्तव्यम्, यत्, मया, अद्य, करिष्यति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ

बहूनाम्=बहुतेरों में
 प्रथमः=प्रथम
 एमि=होता हूं मैं
 + च=और
 बहूनाम्=बहुतेरों में
 मध्यमः=मध्यम
 एमि=होता हूं मैं

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ

किंस्वित्=क्या
 यमस्य=यमराज का
 कर्तव्यम्=प्रयोजन है
 + यत्=जो
 मया=मुझकरके
 अद्य=अब
 करिष्यति=सिद्ध होगा

नोट—ऐसा नचिकेता अपने पिता के कहने पर अपने मनमें वि-
 चार करता भया और जब उद्दालक को शाप के पीछे पश्चात्ताप
 होनेलगा तब नचिकेता अगले मन्त्र में समझाता है ॥

मूलम् ।

अनुपश्य यथा पूर्वं प्रतिपश्य तथापरे सस्यमिव मर्त्यः पच्यते
 सस्यमिव जायते पुनः ॥ ६ ॥

पवच्छेदः ।

अनुपश्य, यथा, पूर्वे, प्रतिपश्य, तथा, अपरे, सस्यम्, इव, मर्त्यः,
पच्यते, सस्यम्, इव, जायते, पुनः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ हे तात=हे पिता
यथा=जैसे
पूर्वे=पूर्व तुम्हारे पिता
पितामह आदि
वर्तते थे उनको

अनुपश्य=देखो
तथा=तैसेही
अपरे=अन्य जो शिवि
दशरथादि हुये हैं
उनको

प्रतिपश्य=अच्छी तरह से
देखो अर्थात् जैसे
वे लोक अपने व-
चनों को पालते थे

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

वैसेही आप भी
अपने वचन को
पालन करो

सस्यम् इव=धान के वृक्ष के
समान

मर्त्यः=मनुष्य भी

पच्यते=परिपक्व होकर नाश
होता है

+ च=और

सस्यम् इव=धान के वृक्षवत्

पुनः=फिर

मनुष्यः=मनुष्य मर करके
जायते=उत्पन्न होता है

नोट—नचिकेता पितासे कहता है कि जैसे तुम्हारे पिता पितामहादि
अपने वचनों की पालना करते आये हैं और दशरथादिकों ने जैसे
किया है वैसे आपभी अपने वचनकी पालना करो अर्थात् हमको यम-
पुरी जानेकी आज्ञा देवो यह शरीर तो धान के वृक्षवत् उत्पत्ति नाश
होताही रहता है मेरे में मोह को त्यागकर यमपुरी भोजनेवाले वचन
को आज्ञा देकर सत्य करो ॥ ६ ॥ जब पिताने नचिकेताको यमराज
के पास जाने की आज्ञादी तब वह शरीरसहित पितृभक्ति के प्रभावसे
यमपुर में गया और जब यमपुरी के द्वार पर पहुँचा तब उसको
मालूम हुआ कि यमराज किसी कार्य के प्रति देशान्तर को गये हैं तब

तिस पुरी के द्वारपर खड़ा रहा जब यमराज की स्त्री को मालूम हुआ कि एक अतिथि ब्राह्मण हमारे द्वारपर निराहार खड़ा है तब उसने आकर बड़े सत्कार से भोजन करने के लिये कहा तब नचिकेताने कहा कि बिना यमराज के भेंट किये मैं अन्न जलका ग्रहण नहीं करूँगा जब तीन रात्रि दिन नचिकेता निराहार खड़ा रहा और चौथे दिन यमराज आये तब उन की स्त्रीने नचिकेताके आनेका समाचार कहा और मन्त्र पढ़कर उनको समझाती है कि—

मूलम् ।

वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान् तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति
हर वैवस्वतोदकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

वैश्वानरः, प्रविशति, अतिथिः, ब्राह्मणः, गृहान्, तस्य, एताम्,
शान्तिम्, कुर्वन्ति, हर, वैवस्वत, उदकम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	वैवस्वत=हे विवस्वत सूर्य के पुत्र हे भगवन् + यथा=जैसे वैश्वानरः=वैश्वानर अग्नि गृहान्=घरों में प्रविशति=प्रवेश करता है + तथा एव=वैसाही + एषः=वह अतिथिः=अतिथि ब्राह्मणः=ब्राह्मण अग्निरूप		+ तव द्वारे=तुम्हारे द्वारपर + स्थितः=स्थित है उदकम्=जलको हर=ले जावो + च=और तस्य=उसके एताम्=इस + तैजसीम्=तेजको शान्तिम्=शान्ति + कुरु=करो

नोट—जिसके द्वारपर अतिथि भूखा रह जावे उसका जो फल है उस को अगले मन्त्र में यमराज की स्त्री कहती है ॥

मूलम् ।

आशा प्रतीक्षे सङ्गतं सूनृताश्चेष्टापूर्ते पुत्र पशूँश्च सर्वान्
एतद्वृद्धके पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥८॥

पदच्छेदः ।

आशा, प्रतीक्षे, सङ्गतम्, सूनृताम्, च, इष्टापूर्ते, पुत्र, पशून्, च,
सर्वान्, एतत्, वृद्धके, पुरुषस्य, अल्पमेधसः, यस्य, अनश्नन्, वसति,
ब्राह्मणः, गृहे ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यस्य=जिस

अल्पमेधसः=अल्पबुद्धिवाले

पुरुषस्य=पुरुष के

गृहे=गृह बिषे

अनश्नन्=भूखा

ब्राह्मणः=ब्राह्मण

अतिथिः=अतिथि

वसति=वास करता है

एतत्=उसका भूखा रहना

तस्य=उस गृहस्थ पुरुषके

आशा प्रतीक्षे=स्वर्गादि सुख तथा

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मनन किये हुये

सुख की इच्छा को

संगतम्=सत्सङ्ग के फलको

सूनृतम्=प्रियवाणी बोलने
के फलको

इष्टापूर्ते=इष्टापूर्त कर्म को

+ च=और

सर्वान्=सब

पुत्रपशून्=पुत्र और पशुओं को

वृद्धके=नाश करता है

नोट—जब यमराज महाराज ने अपनी स्त्री से ऐसा सुना तब
शीघ्र द्वारपर आकर नचिकेता से कहते भये ॥

मूलम् ।

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सी गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः नमस्तेऽस्तु
ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतित्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

तिस्रः, रात्रीः, यत्, अवात्सीः, गृहे, मे, अनश्नन्, ब्रह्मन्,
अतिथिः, नमस्यः, नमः, ते, अस्तु, ब्रह्मन्, स्वस्ति, मे, अस्तु, तस्मात्,
प्रति, त्रीन्, वरान्, वृणीष्व ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

ब्रह्मन्=हे ब्रह्मन्
तिस्रः=तीन
रात्रीः=रात तक
मे=मेरे
गृहे=घर में
यत्=जो
अनशनन्=भूखा
अतिथिः=अतिथि होकर
अघात्सीः=रहा तू
+ ततः=तिस कारण से
नमस्यः=पूजनिय है तू
नमः=नमस्कार

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

ते=तेरे प्रति
अस्तु=होवै
ब्रह्मन्=हे ब्रह्मन्
+ यतः=जिससे
मे=मेरे लिये
स्वस्ति=कल्याण होवै
तस्मात्=तिस लिये
प्रति=तीन रातों के
बदले,
त्रीन्=तीन
घरान्=वरको
वृणीष्व=मांगले तू

नोट—नचिकेता से यमराज कहते हैं कि जो तू अतिथि होकर तीन रात्री मेरे द्वारपर भूखा खड़ा रहा है इसवास्ते तीन वर तू मांगले सो नचिकेता अब वरों को मांगता है ॥

मूलम् ।

शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्दीतमन्युर्गौतमो मामभि-
मृत्यो त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं
वृणे ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

शान्तसङ्कल्पः, सुमनाः, यथा, स्यात्, दीतमन्युः, गौतमः, मा,
अभि, मृत्यो, त्वत्प्रसृष्टम्, मा, अभिवदेत्, प्रतीतः, एतत्, त्रयाणाम्,
प्रथमं, वरं, वृणे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शान्तसङ्कल्पः=शान्तहुआ है स-	ङ्कल्प जिसका	मृत्यो=हे भगवान्	
सुमनाः=शुद्ध हुआ है चित्त	जिसका	प्रतीतः=प्रसन्न	
वीतमन्युः=दूर होगया है क्रोध	जिसका	स्यात्=हो	
यथा=ऐसा		च मा=और मुझसे	
गौतमः=उद्दालक मेरा पिता		अभिवदेत्=सम्भाषण करे	
त्वत्प्रसृष्टः=तुझ करके छूटे हुये		त्रयाणाम्=तीनों वरों में से	
माम् अभि=मुझसे		एतत्=इस	
		प्रथमम्=प्रथम	
		वरं=वरको	
		वृणे=मांगता हूं में	

नोट—नचिकेता कहता है कि हे मृत्यु भगवान् ! गौतम जो मेरा पिता है उसको जो यह चिन्ता होरही है कि मेरे पुत्रकी यम के पास जानेपर क्या जाने कैसी दशा होरही है सो इस सङ्कल्प से वह रहित होकर प्रसन्नचित्त हो और मेरे पर जो उसका क्रोध हुआथा वह भी दूर होजावै और जब मैं तुम्हारे यहां से फिर पिता के पास वापस जाऊं तब वह पूर्ववत् मेरे को जाने कि यह मेरा पुत्र है यह पहचाना वर मैं मांगता हूं उसके जवाब में मृत्यु भगवान् कहते हैं कि—

मूलम् ।

यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः सुखं
रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वा ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, पुरस्तात्, भविता, प्रतीतः, औद्दालकिः, आरुणिः,
मत्प्रसृष्टः, सुखम्, रात्रीः, शयिता, वीतमन्युः, त्वा, ददृशिवान्,
मृत्युमुखात्, प्रमुक्तम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
पुरस्तात्=पहले
+ आसीत्=था
+ तथा=वैसाही
औद्दालकिः=उद्दालक
आरुणिः=अरुणका पुत्र
वीतमन्युः=क्रोधसेरहित होता
हुआ
+ च=और
प्रतीतः=प्रसन्न होता हुआ

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

भविता=रहैगा
च=और
त्वाम्=तुम्हको
मृत्युमुखात्=मृत्युके मुखसे
प्रमुक्कम्=छुटाहुआ
ददृशिवान्=देखकर
मत्प्रसृष्टः=मेरेप्रसाद से
सुखम्=सुखपूर्वक
रात्रीः=रातोंतक
शयिता=सोवैया

मूलम् ।

स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति
उभे तीर्त्वा अशनापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

स्वर्गे, लोके, न, भयम्, किञ्चन, अस्ति, न, तत्र, त्वम्, न,
जरया, बिभेति, उभे, तीर्त्वा, अशनापिपासे, शोकातिगः, मोदते,
स्वर्गलोके ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

स्वर्गलोके=स्वर्गलोक में
किञ्चन=कुछभी
भयम्=भय
न=नहीं
अस्ति=है
+ च=और
तत्र=तहाँ

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

त्वम्=तुम मृत्यु भी
न=नहीं
अस्ति=हो
+ च=और
+ तत्र=तहाँ
जरया=जराभवस्थाकरके
+ कः=कोई पुरुष

न बिभेति=भयको नहीं
प्राप्त होता है
+ च=और
अशनापिपासे=क्षुधा और पिपासा
उभे=दोनोंको

तीर्त्वा=तरकरके
शोकातिगः=शोकसेरहित
होता हुआ
स्वर्गलोके=स्वर्गलोकमें
मोदते=हर्षको प्राप्त होता है

मूलम् ।

स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि तं श्रद्धधानाय मह्यम्
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

सः, त्वम्, अग्निम्, स्वर्ग्यम्, अध्येषि, मृत्यो, प्रब्रूहि, तम्,
श्रद्धधानाय, मह्यम्, स्वर्गलोकाः, अमृतत्वम्, भजन्ते, एतत्, द्वितीयेन,
वृणे, वरेण ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मृत्यो=हे मृत्यु भगवान् !
+ यदि=अगर
सः=वह
त्वम्=तुम
स्वर्ग्यम्=स्वर्ग साधक
अग्निम्=अग्नि को
अध्येषि=जानते हो
+ तु=तो
तम्=उसको
मह्यम्=बहु

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

श्रद्धा- } श्रद्धावान् के
नाय } =लिये
प्रब्रूहि=कहो
यं ज्ञात्वा=जिसको जानकर
स्वर्गलोकाः=स्वर्गनिवासी
अमृतत्वम्=अमरभाव को
भजन्ते=प्राप्त होते हैं
एतत्=इसको
द्वितीयेन=दूसरे
वरेण=वर करके
वृणे=मांगता हूँ मैं

मूलम् ।

प्रते ब्रवीमि तदुभे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्

अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठाम् विद्धि त्वमेननिहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

प्रते, ब्रवीमि, तत्, उ + मे, निबोध, स्वर्ग्यम्, अग्निम्, नचिकेतः,
प्रजानन्, अनन्तलोकाप्तिम्, अथो, प्रतिष्ठाम्, विद्धि, त्वम्, एनम्,
निहितम्, गुहायाम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

नचिकेतः=हे नचिकेता
अहम्=मैं
स्वर्ग्यम्=स्वर्गसाधक
अग्निम्=अग्नि को
प्रजानन्=जानता हुआ
ते=तेरे प्रति
ब्रवीमि=कहता हूँ
तत्=उसको
मे=मुझसे
निबोध=जान तू
उ=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अनन्तलो- } = स्वर्ग में पहुँ-
काप्तिम् } चानेवाली
अथो=और
प्रतिष्ठाम्=सबका आश्रयभूत
च=और
गुहायाम्=हृदयरूपी गुहामें
निहितम्=स्थित
एनम्=इस अग्नि को
त्वम्=तू
विद्धि=जान

मूलम् ।

लोकादिमग्निन्तमुवाच तस्मै या इष्टका यावतीर्वा यथा वा स
चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

लोकादिम्, अग्निम्, तम्, उवाच, तस्मै, याः, इष्टकाः, यावतीः,
वा, यथा, वा, सः, च, अपि, तत्, प्रत्यवदत्, यथोक्तं, अथ, अस्य,
मृत्युः, पुनः, एव, आह, तुष्टः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
लोकादिम्=लोकों के आदि कारण
अग्निम्=अग्नि को
च=और
याः=जो
इष्टकाः=ईंट के कुंड
यावतीः=जितनी होनी चाहिये
उसको
वा=और
यथा=जिस प्रकार का होना
चाहिये
तम्=तिस सबको

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै=नचिकेता के प्रति
यमः=यम भगवान्
उवाच=कहते भये
च=और
सः=वह नचिकेता
अपि=भी
तत्=उसको
प्रत्यवदत्=वैसा ही कहता भया
यथोक्तम्=जैसा कि यम महाराज
ने कहा था

नोट—जैसा यमराज भगवान् ने अग्निका विधान वर्णन किया था
वैसे ही नचिकेता समुझकर उनको सुनाता भया ॥

मूलम् ।

तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरन्तवेहाद्य ददामि भूयः तवैव
नाम्ना भवितायमग्निः सृक्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, अब्रवीत्, प्रीयमाणः, महात्मा, वरम्, तव, इह, अद्य,
ददामि, भूयः, तव, एव, नाम्ना, भविता, अयम्, अग्निः, सृक्काम्,
च, इमाम्, अनेकरूपाम्, गृहाण ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तम्=तिस नचिकेता से
प्रीयमाणः=प्रसन्न हो कर
महात्मा=यमराज
अब्रवीत्=कहते भये कि
+ इदम्=यह

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
वरम्=वर
तव=तुम्हको
ददामि=देता हूँ कि
इह=संसार में
अद्य=अब

अयम्=यह
अग्निः=अग्नि
तव एष=तेरे ही
नाम्ना=नाम करके
भाविता=प्रासेद्ध होगी

भूयः=और
इमाम्=इस
अनेकरूपाम्=विचित्र रूपवाली
सृङ्गाम्=मात्ता को
गृहाण=ग्रहण कर तू

मूलम् ।

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ब्रह्मजज्ञं
देवमीड्यं विदित्वा निचार्येमांश्च शान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

त्रिणाचिकेतः, त्रिभिः, एत्य, सन्धिम्, त्रिकर्मकृत्, तरति, जन्म-
मृत्यू, ब्रह्मजज्ञम्, देवम्, ईड्यम्, विदित्वा, निचार्य, इमां, शान्तिम्,
अत्यन्तम्, एति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
त्रिभिः=तीनों माता पिता
और आचार्य द्वारा
त्रिणाचिकेतः= { तीनबार ग्रहण किया
है अग्नि को जिसने
ऐसा अग्नि का उ-
पासक पुरुष
सन्धिम्= { अनुसन्धान यानी
स्वर वर्ण और मात्रा
को प्राप्त होकर
त्रिकर्मकृत्= { तीनोंकर्मोंको अर्थात्
यज्ञ अध्ययन और
दानको करता हुआ
जन्ममृत्यू=जन्म मरण को यानी
आवागमन को

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तरति=पार कर जाता है
+ च=और
ब्रह्मजज्ञम्=ब्रह्महिरण्यगर्भ से
उत्पन्न भये सर्वज्ञ
ईड्यम्=स्तुतिकरने योग्य
देवम्=वैश्वानर अग्नि आत्म-
देव को
विदित्वा=जानकर
+ च=और
निचार्य=अनुभव करके
इमाम्=इस
अत्यन्तम्=अत्यन्त
शान्तिम्=शान्ति को
एति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम् स मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

त्रिणाचिकेतः, त्रयम्, एतत्, विदित्वा, यः, एवम्, विद्वान्, चिनुते, नाचिकेतम्, सः, मृत्युपाशान्, पुरतः, प्रणोद्य, शोकातिगः, मोदते, स्वर्गलोके ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो

विद्वान्=विद्वान्

त्रिणाचिकेतः= { त्रिणाचिकेत संज्ञक
अग्निका सेवनकरने
वाला

एवम्=इस प्रकार

विदित्वा=जान करके

एतत्=इस

त्रयम्=तीन प्रकार की

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

नाचिकेतम्=नाचिकेत नामक अग्नि
को

चिनुते=उपासना करता है

सः=वह

पुरतः=पहिलेही से

मृत्युपाशान्=मृत्युके पाशों को

प्रणोद्य=काटकर

शोकातिगः=शोकरहित होता हुआ

स्वर्गलोके=स्वर्ग लोक में

मोदते=प्रसन्न होता है

मूलम् ।

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्योऽयमवृणीथा द्वितीयेन वरेण एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरमचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

पदच्छेदः ।

एषः, ते, अग्निः, नचिकेतः, स्वर्ग्यः, अयम्, अवृणीथाः, द्वितीयेन, वरेण, एतम्, अग्निम्, तव, एव, प्रवक्ष्यन्ति, जनासः, तृतीयम्, वरम्, नचिकेतः, वृणीष्व ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

एषः=यह
अयम्=वह
स्वर्ग्यः=स्वर्गसाधक
अग्निः=अग्नि है
नचिकेतः=हे नचिकेता
+ यम्=जिसको
अवृणीथाः=तू पूछता भया
द्वितीयेन=दूसरे
घरेण=वरकरके
ते=तेरे लिये
+ दत्तः=दिया मैंने

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

एतम्=इस
अग्निम्=अग्नि को
तघ एव=तेरेही
नाम्ना=नाम से
जनासः=लोक
प्रवक्ष्यन्ति=कथन करेंगे
नचिकेतः=हे नचिकेता
अद्य=अब
तृतीयम्=तीसरे
घरम्=घरको
वृणीष्व=मांगलेतू

मूलम् ।

येयम्प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके एतद्विद्या-
मनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेष वरस्तृतीयः ॥ २० ॥

पदच्छेदः ।

या, इयम्, प्रेते, विचिकित्सा, मनुष्ये, अस्ति, इति, एके, न, अ-
यम्, अस्ति, इति, च, एके, एतत्, विद्याम्, अनुशिष्टः, त्वया, अहम्,
वराणाम्, एषः, वरः, तृतीयः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ नाचिकेत उवाच=नचिकेता पूछता
भया कि
एके=कोई एक
+ आचार्याः=आचार्य
इति=ऐसा
+ वदन्ति=कहते हैं कि
प्रेते=मरेहुए

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मनुष्ये=पुरुष में
+ आत्मा=आत्मा
अस्ति=है
च=और
एके=कोई आचार्य
इति=ऐसा
+ वदन्ति=कहते हैं कि

नाऽस्ति=नहीं है
इयम्=यह
या=जो
विचिकित्सा=संशय है
तस्याः=तिसकी
+ निवृत्तिः=निवृत्ति
या=जो है
एतत्=इसको
अहम्=मैं

त्वया=आप करके
अनुशिष्टः=शिक्षित हुआ
विद्याम्=जानू
एषः=यह
तृतीयः=तीसरा
वरः=वर
वराणाम्=वर्षों में से
याचे=मांगता हूँ मैं

मूलम् ।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमगुरेष धर्मः अन्यं
वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम् ॥ २१ ॥

पदच्छेदः ।

देवैः, अत्र, अपि, विचिकित्सितम्, पुरा, न, हि, सुविज्ञेयम्, अगुः,
एषः, धर्मः, अन्यम्, वरम्, नचिकेतः, वृणीष्व, मा, मा, उपरोत्सीः,
अति, मा, सृज, एनम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अत्र=इस ब्रह्मविद्या
विषे
देवैः=देवतों करके
अपि=भी
पुरा=पहले से
विचिकित्सितम्=संशय किया गया
है
हि=क्योंकि
एषः=यह
अगुः=सूक्ष्म
धर्मः=धर्म

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

नसुविज्ञेयम्=अच्छे प्रकार जा-
ननेको अशक्य है
नचिकेतः=हे नचिकेता
अन्यम्=और
वरम्=वरको
वृणीष्व=मांगतेतू
माम्=मुझको
मा उपरोत्सीः=मत रोक
मा=मेरे किये
एनम्=इस वरको
अतिसृज=झोकावे तू

मूलम् ।

देवैरापि विचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ
वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य
कश्चित् ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ।

देवैः, अपि, विचिकित्सितम्, किल, त्वम्, च, मृत्यो, यत्,
न, सुविज्ञेयम्, आत्थ, वक्ता, च, अस्य, त्वादृक्, अन्यः, न, लभ्यः,
न, अन्यः, वरः, तुल्यः, एतस्य, कश्चित् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	अत्र=इस विषय में	+ परन्तु=परंतु	
	देवैः=देवतों करके	अस्य=इसका	
	अपि=भी	वक्ता=कहनेवाला	
विचिकित्सितम्=संशयकिया गया है		त्वादृक्=आपके तुल्य	
च=और		अन्यः=और कोई	
मृत्यो=हे मृत्युभगवान् !		न लभ्यः=मिलने योग्य नहीं है	
यत्=जो		च=और	
त्वम्=आप		अन्यः=दूसरा	
एनम्=इसको		कश्चित्=कोई	
नसुविज्ञेयम्=दुर्विज्ञेय		वरः=वर	
आत्थ=कहते हो		एतस्य=इसके	
किल=तो ठीक है		न तुल्यः=तुल्य भी नहीं है	

मूलम् ।

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥ २३ ॥

पदच्छेदः ।

शतायुषः, पुत्रपौत्रान्, वृणीष्व, बहून्, पशून्, हस्तिहिरण्यम्,

अश्वान्, भूमेः, महत्, आयतनम्, वृणीष्व, स्वयम्, च, जीव, शरदः,
यावत्, इच्छसि ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

शतायुषः=सौवर्षकी आयुवाले
पुत्रपौत्रान्=पुत्रपौत्रों को
वृणीष्व=मांगले तू
बहून्=बहुत से
पशून्=पशुओं को
हस्तिहिरण्यम्=हस्ती और द्रव्योंको
अश्वान्=घोड़ों को
भूमेः=पृथिवी के
महत्=बड़े

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

आयतनम्=स्थान को
वृणीष्व=मांग ले
च=और
स्वयम्=तूभी
यावत्=जबतक
इच्छसि=इच्छाकरै
तावत्=उतने
शरदः=वर्षोंतक
जीव=जीतारहै

मूलम् ।

एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकाञ्च महा-
भूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्तुल्यम्, यदि, मन्यसे, वरम्, वृणीष्व, वित्तम्, चिरजीविकाम्, च,
महाभूमौ, नचिकेतः, त्वम्, एधि, कामानाम्, त्वा, कामभाजम्, करोमि ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यदि=अगर
एतत्तुल्यम्=इस वर के तुल्य
नचिकेतः=हे नचिकेता
वित्तम्=धनको
च=और
चिरजीविकाम्=बड़ी आयु को
वरम्=भेष्ट
मन्यसे=समझता है तू
तु=तो

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

वृणीष्व=मांगले
महाभूमौ=महान्भूमि में
त्वम्=तू
एधि=वृद्धि को प्राप्तहो
कामानाम्=सब भोगों का
त्वा=तुझको
कामभाजम्=भोग्य के योग्य
करोमि=करताहूँ मैं

मूलम् ।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामाँश्छन्दतः प्रार्थयस्व
इमा इमाः सरथाः सतूर्या न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः आभिर्गत्प्र-
ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

पदच्छेदः ।

ये, ये, कामाः, दुर्लभाः, मर्त्यलोके, सर्वान्, कामान्, छन्दतः, प्रार्थयस्व,
इमाः, इमाः, सरथाः, सतूर्याः, न + हि, ईदृशाः, लम्भनीयाः, मनुष्यैः,
आभिः, मत्प्रताभिः, परिचारयस्व, नचिकेतः, मरणम्, मा, अनुप्राक्षीः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

ये ये=जो जो
कामाः=विषय भोग्य
मर्त्यलोके=मनुष्यलोक में
दुर्लभाः=दुर्लभ हैं
+ तान्=उन
सर्वान्=सब
कामान्=भोगों को
छन्दतः=अनुसार
प्रार्थयस्व=मांगले तू
+ यथा=जैसी
इमाः=ये
रामाः=अप्सरायें
सरथाः=सहित रथों के
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

सतूर्याः=सहित बाजों के हैं
ईदृशाः=वैसी स्त्रियां
इह=इस मनुष्यलोक में
मनुष्यैः=मनुष्यों करके
न लम्भनीयाः=नहीं प्राप्त होने योग्य
हैं
आभिः=इन
मत्प्रताभिः=मेरी वीहुई अप्सरों से
परिचारयस्व=अपनी सेवा करवा
नचिकेतः=हे नचिकेता ।
+ परन्तु=परंतु
मरणम्=मरणसम्बन्धी
प्रश्नम्=प्रश्नको
मानुप्राक्षीः=मत पूछ

मूलम् ।

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणाञ्जरयन्ति तेजः
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव बाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

पदच्छेदः ।

श्वोभावाः, मर्त्यस्य, यत्, अन्तक, एतत्, सर्वेन्द्रियाणाम्, जरयन्ति,
तेजः, अपि, सर्वम्, जीवितम्, अल्पम्, एव, तव, एव, वाहाः, तव,
नृत्यगीते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	अन्तक=हे यमराज हे नाश- कर्ता ।		एतत्=यह
	अक्ष=चूँकि		सर्वम्=सम्पूर्ण
	श्वोभावाः=ये संशययुक्त भाव- वाले पदार्थ		जीवितम्=आयु
	मर्त्यस्य=मनुष्य के		अल्पम्=अल्पही है
	सर्वेन्द्रियाणाम्=सब इन्द्रियों के		+ तस्मात्=इसलिये
	तेजः=तेज को		तव=आपके
	जरयन्ति=क्षीण करते हैं		वाहाः=रथादिक सवारियाँ
	अपि=और		+ च=और
	एव=निश्चय करके		नृत्यगीते=नाचना गाना
			तव एव=आपही के पास रहें

मूलम् ।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा जी-
विष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ २७ ॥

पदच्छेदः ।

न, वित्तेन, तर्पणीयः, मनुष्यः, लप्स्यामहे, वित्तम्, अद्राक्ष्म, चेत्,
त्वा, जीविष्यामः, यावत्, ईशिष्यसि, त्वम्, वरः, तु, मे, वरणीयः,
सः, एव ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मनुष्यः=मनुष्य
वित्तेन=धन करके
न तर्पणीयः=नृप होने योग्य नहीं है
वित्तम्=धन को
क्षप्स्यामहे=पावेंगे हम
चेत्=जब कि
अद्राक्ष्म=देखा है हमने
त्वा= त्वां=आपको
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

जीविष्यामः=जीतेरहेंगे हम
यावत्=जबतक
ईशिष्यासि=राज करोगे तुम
तु=परंतु
मे=मेरे
वरणीयः=मांगने योग्य
वरः=वर
सः एव=वही है मृतक
संबंधी है

मूलम् ।

अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः कथःस्थः प्रजानन् अभि-
ध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानति दीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

पदच्छेदः ।

अजीर्यताम्, अमृतानाम्, उपेत्य, जीर्यन्, मर्त्यः, कथःस्थः,
प्रजानन्, अभिध्यायन्, वर्णरतिप्रमोदान्, अति, दीर्घे, जीविते,
कः, रमेत ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अजीर्यताम्=जरारहित
अमृतानाम्=देवतन के
उपेत्य=प्राप्त होकर
जीर्यन्=जरामरणवान्
कथःस्थः=पृथिवी में रहने
वाला
कः=कौन
प्रजानन्=बिषेकी

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मर्त्यः=पुरुष
वर्णरतिप्रमोदान्={ रूपप्रतिविषया-
नन्द को यानी
अप्सरदि
विषयों को
अभिध्यायन्=विचार करताहुआ
अतिदीर्घे=अतिशय
जीविते=जीवनविषे
रमेत=रमण करेगा

मूलम् ।

यस्मिभिर्दं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यन्तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २६ ॥

पदच्छेदः ।

यस्मिन्, इदम्, विचिकित्सन्ति, मृत्यो, यत्साम्पराये, महति, ब्रूहि,
नः, तत्, यः, अयम्, वरः, गूढम्, अनुप्रविष्टः, न, अन्यम्, तस्मात्,
नचिकेताः, वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	यस्मिन्=जिस मृतक बिषे + चै=और		अयम्=यह गूढम्=कठिन + च=और
	यस्मिन् महति=जिस बड़ी साम्पराये=परलोक की गति बिषे		अनुप्रविष्टः=गुप्त वरः=वर
	यत्=जो इदम्=यह		तस्मात्=तिससे भिन्न अन्यम्=और
	विचिकित्सन्ति=संशय करते हैं तत्=तिसको नः=मेरे लिये		+ वरम्=वर को नचिकेताः=नचिकेता
	ब्रूहि=कह तू यः=जो		न=नहीं वृणीते=मांगता है

इति प्रथमाध्याये प्रथमावल्ली संपूर्णा ॥

मूलम् ।

ॐ अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः
तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाच्च उ प्रेयो वृणीते ॥१॥

पदच्छेदः ।

अन्यत्, श्रेयः, अन्यत्, उत, एव, प्रेयः, ते, उभे, नानार्थे, पुरुषम्,
सिनीतः, तयोः, श्रेयः, आददानस्य, साधु, भवति, हीयते, अर्थात्, यः,
उ, प्रेयः, वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यमराज उवाच=यमराज बोलते भये कि		तयोः=उन दोनों में से	
श्रेयः=श्रेय याने विद्या		श्रेयः=विद्या	
अन्यत्=और ही है		आददानस्य=मङ्गल करनेवाले का	
उत=और		साधु=करुणा	
प्रेयः=प्रेय याने अविद्या		भवति=होता है	
अन्यत् एव=औरही है		उ=और	
ते=वे		यः=जो	
उभे=दोनों		प्रेयः=अविद्या को	
नानार्थे=भिन्न भिन्न प्रयोजन		वृणीते=ग्रहण करता है	
के वास्ते		+ सः=वह	
पुरुषम्=पुरुषको		अर्थात्=पुरुषार्थ से	
सिनीतः=बांधते हैं		हीयते=हीन होता है	

मूलम् ।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयो
हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

श्रेयः, च, प्रेयः, च, मनुष्यम्, एतः, तौ, सम्परीत्य, विविनक्ति,
धीरः, श्रेयः, हि, धीरः, अभिप्रेयसः, वृणीते, प्रेयः, मन्दः, योगक्षेमात्,
वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
श्रेयः=श्रेय		श्रेयः=श्रेयको	
च=और		हि=ही	
प्रेयः=प्रेय		अभिप्रेयसः=प्रेय से भिन्न	
मनुष्यम्=मनुष्य को		वृणाते=ग्रहण करता है	
एतः=प्राप्त होते हैं		च=और	
तौ=उन दोनों को		मन्दः=मन्दबुद्धिवाला	
सम्परीत्य=देखकरके		पुरुष	
धीरः=बुद्धिमान् पुरुष		प्रेयः=प्रेयको ही	
विविनक्ति=पृथक् पृथक् करता है		योगक्षेमात्=योगक्षेमकरके	
धीरः=धीर पुरुष		वृणाते=ग्रहण करता है	

मूलम् ।

सत्त्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च कामानभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्त्राक्षीः
नैतांश्च सृङ्गां वित्तमयीमवाप्तो यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

सः, त्वम्, प्रियान्, प्रियरूपान्, च, कामान्, अभिध्यायन्,
नचिकेतः, अत्यस्त्राक्षीः, न, एताम्, सृङ्गाम्, वित्तमयीम्, अवाप्तः,
यस्याम्, मज्जन्ति, बहवः, मनुष्याः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः=सो		कामान्=भोगों को	
त्वम्=तू		अभिध्यायन्=विचारता हुआ	
नचिकेतः=हे नचिकेता		अत्यस्त्राक्षीः=त्यागताभया	
प्रियान्=प्रिय पुत्र कलत्र		एताम्=इस	
धनादिकों को		सृङ्गाम्=बाहुल्यता	
च=और		वित्तमयीम्=धनयुक्त कर्मगति	
प्रियरूपान्=प्रियरूप		को	

वस्थाम्=जिसमें
बहवः=बहुत से
मनुष्याः=मनुष्य

मज्जन्ति=ढूबते हैं
न=नहीं
अवासः=प्राप्त होता भया तू

मूलम् ।

दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता विद्याभी-
प्सिनन्नचिकेतसं मन्ये न त्वा कामा बहवो लोलुपन्तः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

दूरम्, एते, विपरीते, विषूची, अविद्या, या, च, विद्या, इति, ज्ञाता,
विद्याभीप्सिनम्, नचिकेतसम्, मन्ये, न, त्वा, कामाः, बहवः, लोलुपन्तः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

एते=ये दोनों
या=जो
विद्या=विद्या
च=और
अविद्या=अविद्या
इति=करके
ज्ञाता=पसिद्ध हैं
ते=वे
दूरम्=अत्यन्त
विपरीते=एक दूसरे से विरुद्ध
धर्मवाली
च=और

अन्वयः , पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

विषूची=भिन्न भिन्न फल
वाली हैं

त्वा=तुझ

नचिकेतसम्=नचिकेता को

विद्याभीप्सिनम्=विद्या का चाहने
वाला

मन्ये=मानता हूं मैं

+ हि=क्योंकि

+ त्वाम्=तुझको

बहवः=बहुत

कामाः=भोग भी

न लोलुपन्तः=नहीं लुभाते भये

मूलम् ।

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः
दंष्ट्रम्यमणाः परियन्ति मूढा अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

अविद्यायाम्, अन्तरे, वर्त्तमानाः, स्वयम्, धीराः, पण्डितम्मन्य-

मानाः, दन्द्रम्यमाणाः, परियन्ति, मूढाः, अन्धेन, एव, नीयमानाः,
यथा, अन्धाः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अविद्यायाम्=अविद्या के
अन्तरे=मध्य विषे
वर्त्तमानाः=वर्त्तते हुये
मूढाः=मूढ़जन
स्वयम्=अपने को
धीराः=धीर
परिडितम्=परिडित
मन्यमानाः=माननेवाले

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
दन्द्रम्यमाणाः= { अनेक कुटिल
भेष को धारण
करत हुये
परियन्ति=भ्रमते रहते हैं
यथा=जैसे
अन्धः=अंधा पुरुष
अन्धेन एव=अन्धे करके ही
नीयमानाः=लेगया हुआ अ-
मता है तैसे

मूलम् ।

न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम् अयं
लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

न, साम्परायः, प्रतिभाति, बालम्, प्रमाद्यन्तम्, वित्तमोहेन, मूढम्,
अयम्, लोकः, न, अस्ति, परः, इति, मानी, पुनः, पुनः, वशम्,
आपद्यते, मे ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
साम्परायः=शास्त्रोक्तकर्म
वित्तमोहेन=धन पुत्रादि मोह
करके
मूढम्=मूढ़
बालम्=अविवेकी
प्रमाद्यन्तम्=प्रमादी को
न प्रतिभाति=नहीं प्रकाशता है
अयम्=यही
लोकः=लोक है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
परः=परलोक
न अस्ति=नहीं है
इति=ऐसा
मानी=माननेवाला
पुरुष
पुनःपुनः=बारबार
मे=मुझ यमराज के
वशम्=वशको
आपद्यते=प्राप्त होता है

मूलम् ।

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोपि बहवो यन्न विद्युः
आश्चर्य्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्य्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः ॥
पदच्छेदः ।

श्रवणाय, अपि, बहुभिः, यः, न, लभ्यः, शृण्वन्तः, अपि, बहवः,
यम्, न, विद्युः, आश्चर्य्यः, वक्ता, कुशलः, अस्य, लब्धा, आश्चर्य्यः,
ज्ञाता, कुशलानुशिष्टः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
बहुभिः=बहुतों करके
श्रवणाय=सुनने के लिये
अपि=भी
न लभ्यः=नहीं प्राप्त होने योग्य
है
+ च=और
यम्=जिसको
शृण्वन्तः=सुनते हुए
अपि=भी
बहवः=बहुतेरे
न विद्युः=नहीं जानते हैं
इति=ऐसे

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

वक्ता=आत्मा का कहनेवाला
आश्चर्य्यः=आश्चर्य्यरूप है
च=और
अस्य=इसका
लब्धा=पानेवाला
कुशलः=निपुण है
च=और
अस्य=इसका
ज्ञाता=जाननेवाला
कुशलानुशिष्टः= { श्रोत्रिय ब्रह्मनेष्टि
आचार्य से शि-
क्षित हुआ भी
आश्चर्य्यः=आश्चर्य्यरूप है

मूलम् ।

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते
गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

न, नरेण, अवरेण, प्रोक्तः, एषः, सुविज्ञेयः, बहुधा, चिन्त्यमानः,
अनन्यप्रोक्ते, गतिः, अत्र, न, अस्ति, अणीयान्, हि, अतर्क्यम्,
अणुप्रमाणात् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अवरेण=अश्रेष्ठ तर्की
नरेण=पुरुष करके
बहुधा=बहुत प्रकार से
प्रोक्ताः=कहा हुआ और
चिन्त्यमानः=विचारा हुआ
एषः=यह आत्मा
न सुविज्ञेयः= { नहीं सम्यक्
प्रकार जानने
योग्य है
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अनन्यप्रोक्ते= { अद्वैतवादि आ-
चार्य करके
कहे हुये
अत्र=इस आत्मा बिषे
गतिः=कोई चिन्ता या शंका
न अस्ति=नहीं है
हि=क्योंकि
एषः आत्मा=यह आत्मा
अतर्क्यम्=तर्करहित
अणुप्रमाणत्वं=सूक्ष्म परमाणु से भी
अणीयान्=सूक्ष्म है

मूलम् ।

नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठ यान्त्वमापः
सत्यधृतिर्वतासित्वाद्दन्तो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

न, एषा, तर्केण, मतिः, आपनेया, प्रोक्ता, अन्येन, एव, सुज्ञानाय,
प्रेष्ठ, याम्, त्वम्, आपः, सत्यधृतिः, वत, असि, त्वादृक्, नः, भूयात्,
नचिकेतः, प्रष्टा ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
एषा=यह
मतिः=ब्रह्मविषयणीबुद्धि
तर्केण=तर्ककरके
न=नहीं
आपनेया=प्राप्त होने योग्य है
प्रेष्ठ=हे प्रियदर्शन
त्वम्=तू
सत्यधृतिः=सत्य धर्मालंबी
वत असि=ब्रेष्ठ है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
याम्=जिस ब्रह्मविषयणी
बुद्धि को
आपः=प्राप्त हुआ है तू
तत्=वह
अन्येन=आत्मवेत्ता करके
एव=ही
प्रोक्ता=उपदेश की हुई
सुज्ञानाय=आत्मज्ञानार्थ
+ भवति=होती है
नचिकेतः=हे नचिकेता

त्वादृक्=तेरे समान
नः=हमको
+ अन्यः=अन्य

प्रष्टा=प्रश्नकर्ता
+ अपि=भी
भूयात्=मिलै

मूलम् ।

जानाम्यहं शेषधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवन्तत् ततो
मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

जानामि, अहम्, शेषधिः, इति, अनित्यम्, न, हि, अध्रुवैः, प्राप्यते,
हि, ध्रुवम्, तत्, ततः, मया, नाचिकेतः, चितः, अग्निः, अनित्यैः,
द्रव्यैः, प्राप्तवान्, अस्मि, नित्यम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
शेषधिः=स्वर्गादि कर्म फल
अनित्यम्=अनित्य है
इति=ऐसा
अहम्=मैं
जानामि=जानता हूँ
हि=क्योंकि
अध्रुवैः=अनित्य यज्ञ अग्नि-
होत्रादि कर्म से
हि=निश्चय करके
ध्रुवम्=नित्य साक्षी आत्मा
न प्राप्यते=नहीं प्राप्त होता है
ततः=इसलिये

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
मया=मुझ करके
नाचिकेतः=नाचिकेत संज्ञक
अग्निः=अग्नि
अनित्यैः=अनित्य
द्रव्यैः=पशु आदि द्रव्यों करके
चितः=सेवन की गई है
च=और
+ तस्मात्=इस कारण
+ अहम्=मैं
नित्यम्=नित्य यम पदवी को
प्राप्तवान्=प्राप्त हुआ
अस्मि=हूँ

नोट—यमराज भगवान् कहते हैं कि मैंने ब्रह्मज्ञान के अनन्तर
नाचिकेत नामक अग्नि के उपासना द्वारा यमराजपदवी को नित्य जान
कर अपने को प्राप्त किया है सो उसको तू त्यागता भया इसलिये तू हे
नाचिकेता धन्य है धन्य है ॥

मूलम् ।

कामस्यासिञ्जगतः प्रतिष्ठां क्रतोरानन्त्यमभयस्य पारम् स्तोम मह-
दुरुगायम्प्रतिष्ठां दृष्ट्वा धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्त्राक्षीः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

कामस्य, आप्तिम्, जगतः, प्रतिष्ठाम्, क्रतोः, आनन्त्यम्, अभयस्य,
पारम्, स्तोम, महत्, उरुगायम्, प्रतिष्ठाम्, दृष्ट्वा, धृत्या, धीरः, नचिकेतः,
अत्यस्त्राक्षीः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

कामस्य=कामना की
आप्तिम्=प्राप्ति को
+ च=और
जगतः=जगत् के
प्रतिष्ठाम्=आश्रय को
+ च=और
क्रतोः=यज्ञ के
आनन्त्यम्=अनन्तफलको
च=और
अभयस्य=अभय याने
स्वर्ग के
पारम्=पार को अर्थात्
स्वर्ग की प्राप्ति को

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

च=और
स्तोम महत्=स्तुत्य ऐश्वर्य को
च=और
उरुगायम्=भारीगति को
च=और
प्रतिष्ठाम्=प्रतिष्ठा को
दृष्ट्वा=देख करके
धृत्या=धैर्यता से
धीरः=तू बुद्धिमान्
नचिकेतः=हे नचिकेता
अत्यस्त्राक्षीः=त्यागकरता
भया

मूलम् ।

तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितङ्गहरेष्टं पुराणम् अध्यात्मयोगाधि-
गमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, दुर्दर्शम्, गूढम्, अनुप्रविष्टम्, गुहाहितम्, गह्वरेष्टम्, पुराणम्,
अध्यात्मयोगाधिगमेन, देवम्, मत्वा, धीरः, हर्षशोकौ, जहाति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

तम्=उस
दुर्दर्शम्=दुर्दर्श
गूढम्=सघन
अनुप्रविष्टम्=छिपे हुये
गुहाहितम्=बुद्धिमें रखे हुये
च=और
गह्वरेष्टम्=अन्तःकरणरूपी
गुहा में स्थित हुये

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

पुराणम्=सनातन
देवम्=आत्मा को
अध्यात्मयोगा- } =आत्मविद्या के
धिगमन } =योग से
मत्वा=अनुभव करके
धीरः=धीरपुरुष
हर्षशोकौ=हर्षशोकको
जहाति=त्याग करता है

मूलम् ।

एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य स मोदते
मोदनीयं हि लब्ध्वा विवृतं हि सन्न नचिकेतसम्मन्ये ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, श्रुत्वा, सम्परिगृह्य, मर्त्यः, प्रवृह्य, धर्म्यम्, अणुम्, एतम्,
आप्य, सः, मोदते, मोदनीयम्, हि, लब्ध्वा, विवृतम्, हि, सन्न,
नचिकेतसम्, मन्ये ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

एतत्=इस
धर्म्यम्=धर्म करके
प्राप्य आत्मा को
श्रुत्वा=सुन करके
संपरिगृह्य=मनन करके
प्रवृह्य=पृथक् करके
च=और
एतम्=इस
अणुम्=अतिसूक्ष्म आत्मा को
आप्य=प्राप्त हो करके
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मोदनीयम्=हर्षकरनेयोग्य आत्माको
लब्ध्वा=पाकरके
सः=आत्मवेत्ता
मर्त्यः=पुरुष
मोदते=प्रसन्नहोता है
हि=इस लिये
हि=निश्चय करके
नचिकेतसम्=तुम्हें नचिकेता को
सन्न=ब्रह्म लोक के द्वार के
विवृतम्=सम्मुख
मन्ये=मानता हूं मैं

मूलम् ।

अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्र भूताश्च
भव्याश्च यत्तत्पश्यसि तद्द ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

अन्यत्र, धर्मात्, अन्यत्र, अधर्मात्, अन्यत्र, अस्मात्, कृताकृतात्,
अन्यत्र, भूतात्, च, भव्यात्, च, यत्, तत्, पश्यसि, तत्, वद ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

धर्मात्=धर्म से
अन्यत्र=पृथक् है
+ आत्मा=आत्मा
+ च=और
अधर्मात्=अधर्म से
अन्यत्र=पृथक् है
+ आत्मा=आत्मा
+ च=और
अस्मात्=हस
कृताकृतात्=कार्य कारण से
+ अपि=भी

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अन्यत्र=पृथक् है
+ आत्मा=आत्मा
च=और
भूतात्=भूतकाज से
च=और
भव्यात्=भविष्यत् काज से
अन्यत्र=पृथक् है
यत्=जिस
तत्=वस्तु को
पश्यसि=जानते हो आप
तत्=उसको
वद=कहिये

नोट—नचिकेताके प्रश्न का उत्तर यमराज भगवान् अगले तंत्रों
में देते हैं ॥

मूलम् ।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांश्चि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदि-
च्छन्तो ब्रह्मचर्यश्चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

सर्वे, वेदाः, यत्, पदम्, आमनन्ति, तपांसि, सर्वाणि, च, यत्,
वदन्ति, यत्, इच्छन्तः, ब्रह्मचर्यम्, चरन्ति, तत्, ते, पदम्, संग्रहेण,
ब्रवीमि, ओम्, इति, एतत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

सर्वे=सब
वेदाः=वेद
यत्=जिस
पदम्=पदको
आमनन्ति=प्रतिपादन करते हैं
च=और
सर्वाणि=सब
तपांसि=तपस्या
यत्=जिसको
वदन्ति=प्रतिपादन करते हैं
च=और
यत्=जिसको
इच्छन्तः=इच्छा करते हुए

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

मुमुक्षवः=मुमुक्षुजन
ब्रह्मचर्यम्=ब्रह्मचर्य को
चरन्ति=करते हैं
तत्=उस
पदम्=पदको
ते=तेरे लिये
संग्रहेण=संक्षेप से
ब्रवीमि=कहता हूँ मैं
एतत्=उसी पदको
ओम्=ओम्
इति=करके भी
वदन्ति=कहते हैं

मूलम् ।

एतद्वेवाक्षरम्ब्रह्म एतदेवाक्षरम् परम् एतद्वेवाक्षरं ज्ञात्वा यो
यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, हि, एव, अक्षरम्, ब्रह्म, एतत्, एव, अक्षरम्, परम्, एतत्,
हि, एव, अक्षरम्, ज्ञात्वा, यः, यत्, इच्छति, तस्य, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

एतत्=यही
एव हि=निश्चय करके
अक्षरम्=नाशरहित
ब्रह्म=अपर ब्रह्म है
+ च=और
एतत् एव=यही

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अक्षरम्=अविनाशी
परम्=परब्रह्म है
एतत् एव=इसही
अक्षरम्=अक्षरको
ज्ञात्वा=जान करके
+ यः=जो

यत्=जिसको
इच्छति=चाहता है
तस्य=उसी को

तत्=वह
भवति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् एतदालम्बनं ज्ञात्वा
ब्रह्मलोके महीयते ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, आलम्बनम्, श्रेष्ठम्, एतत्, आलम्बनम्, परम्, एतत्,
आलम्बनम्, ज्ञात्वा, ब्रह्मलोके, महीयते ॥

अन्वयः **पदार्थसहित**
 सूक्ष्म भावार्थ
एतत्=यह अकार
आलम्बनम्=आलम्बन
श्रेष्ठम्=श्रेष्ठ है
+ च=और
एतत्=यह
आलम्बनम्=आलम्बन
परम्=उत्कृष्ट है

अन्वयः **पदार्थसहित**
 सूक्ष्म भावार्थ
+ च=और
एतत्=इस
आलम्बनम्=आलम्बन
अकार को
ज्ञात्वा=जान करके
ब्रह्मलोके=ब्रह्मलोक में
महीयते=पूज्य होता है

मूलम् ।

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नः यं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् अजो-
नित्यः शाश्वतोऽयम् पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

न, जायते, म्रियते, वा, विपश्चिन्, न, अयम्, कुतश्चित्, न,
बभूव, कश्चित्, अजः, नित्यः, शाश्वतः, अयम्, पुराणः, न, हन्यते,
हन्यमाने, शरीरे ॥

अन्वयः **पदार्थसहित**
 सूक्ष्म भावार्थ
+ आत्मा=आत्मा
न जायते=नहीं उत्पन्न
होता है

अन्वयः **पदार्थसहित**
 सूक्ष्म भावार्थ
वा=और
न=नहीं
म्रियते=मरता है

+ परन्तु=परन्तु
 विपश्चित्=सबज्ञ है
 अयम्=यह आत्मा
 कुतश्चित्=किसी से
 कश्चित्=कभी
 न बभूव=नहीं हुआ है
 तस्मात् } =इस कारण से
 कारणात् }
 अयम्=यह आत्मा

अजः=अज याने जन्म
 रहित है
 नित्यः=नित्य है
 शाश्वतः=नाशरहित है
 पुराणः=आदि है
 अयम्=यह आत्मा
 शरीरे=शरीर के
 हन्यमाने=नाश होने पर भी
 न हन्यते=नहीं नाश होता है

मूलम् ।

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतम् उभौ तौ न
 विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

हन्ता, चेत्, मन्यते, हन्तुम्, हतः, चेत्, मन्यते, हतम्, उभौ, तौ,
 न, विजानीतः, न, अयम्, हन्ति, न, हन्यते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 चेत्=अगर
 हन्ता=मारने वाला पुरुष
 हन्तुम्=हननकरने को आत्मा
 मन्यते=मानता है
 च=और
 हतः=मारा हुआ पुरुष
 हतम्=हनन किया के कर्म
 को आत्मा

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 मन्यते=मानता है तो
 तौ उभौ=वे दोनों
 न विजानीतः=नहीं जानते हैं
 क्योंकि
 अयम्=यह आत्मा
 न हन्ति=न तो मारता है
 च=और
 न हन्यते=न मरता है

मूलम् ।

अणोरणीयान् महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्
 तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥२०॥

पदच्छेदः ।

अणोः, अणीयान्, महतः, महीयान्, आत्मा, अस्य, जन्तोः, निहितः, गुहायाम्, तम्, अक्रतुः, पश्यति, वीतशोकः, धातुः, प्रसादात्, महिमानम्, आत्मनः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अणोः=छोटेसे
अणीयान्=अति छोटा
महतः=बड़े से
महीयान्=अति बड़ा
आत्मा=आत्मा है
अस्य=इस
जन्तोः=जीव के
गुहायाम्=हृदयरूपी गुहा बिषे
+ सः=वह
निहितः=स्थित है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
च=और
अक्रतुः=निराकार
वीतशोकः=शोकरहित पुरुष
धातुः } =मन के प्रसाद से
प्रसादात् }
तम्=उस
आत्मनः=अपने
महिमानम्=महिमा को अथवा
अपने आत्मा को
पश्यति=देखता है

मूलम् ।

आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः कस्तम्पदामदं देवं
मदन्यो ज्ञातुमर्हति ॥ २१ ॥

पदच्छेदः ।

आसीनः, दूरम्, व्रजति, शयानः, याति, सर्वतः, कः, तम्, मदाम-
दम्, देवम्, मदन्यः, ज्ञातुम्, अर्हति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
आत्मा=आत्मा
आसीनः=स्थितहुआ हुआ
दूरम्=दूर
व्रजति=जाता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
च=और
शयानः=सोया हुआ
सर्वतः=सब तरफ
याति=फिरता है

तम्=तिस
मदामदम्=शरीरादि उपाधि के
संबंधवाले हर्षशोकवान्
देवम्=देव को

मदन्यः=मेरेसे अन्य
कः=कौन
ज्ञातुम्=जानने को
अर्हति=समर्थ होसक्ता है

नोट—यह आत्मा अवल स्थित है परन्तु मनआदि उपाधि साथ मिलकर ब्रह्मलोक पर्यन्त जाता है वैसेही स्वप्नमें इन्द्रियों के साथ मिल कर अनेक विषयों में रमण करता है ॥

मूलम् ।

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् महान्तम् विभुमात्मानं
मत्वा धीरो न शोचति ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ।

अशरीरम्, शरीरेषु, अनवस्थेषु, अवस्थितम्, महान्तम्, विभुम्,
आत्मानम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

शरीरेषु=शरीरों बिषे
अशरीरम्=शरीर रहित है
अनवस्थेषु=अनित्यों बिषे
अवस्थितम्=नित्य है
+ एवम्=ऐसे
महान्तम्=महान्

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

विभुम्=व्यापक
आत्मानम्=आत्मा को
मत्वा=जान करके
धीरः=बुद्धिमान् पुरुष
न शोचति=नहीं शोक को प्राप्त
होता है

मूलम् ।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम् ॥ २३ ॥

पदच्छेदः ।

न, अयम्, आत्मा, प्रवचनेन, लभ्यः, न, मेधया, न, बहुना, श्रुतेन,
यम्, एव, एषः, वृणुते, तेन, लभ्यः, तस्य, एषः, आत्मा, विवृणुते,
तनुम्, स्वाम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अयम्=यह
आत्मा=आत्मा
प्रवचनेन=बहुत वेदाध्ययन
करने से
न लभ्यः=नहीं प्राप्त होने योग्य है
च=और
मेधया=प्रमथार्थ धारणा शक्तिसे
न=नहीं
लभ्यः=प्राप्त होने योग्य है
च=और
बहुना=बहुत
श्रुतेन=शास्त्र के श्रवण
करने से
अपि=भी
न=नहीं

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
लभ्यः=प्राप्त होने योग्य है
यम्=जिसको
एव=निरन्तर करके
एषः=यह मुमुक्षु
वृणुते=इच्छा करता है
तेन=तिसही करके
लभ्यः=पाने योग्य है
च=और
तस्य=उसी को
एषः=यह
आत्मा=आत्मा
स्वाम्=अपने
तनुम्=स्वरूप को
विधृणुते=प्रकाश करता है

मूलम् ।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः ना शान्तमानसो वापि
प्रज्ञानेनैवमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ।

न, अविरतः, दुश्चरितात्, न, अशान्तः, न, असमाहितः, न,
अशान्तमानसः, वा, अपि, प्रज्ञानेन, एनम्, आप्नुयात् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
दुश्चरितात्=दुष्कृत कर्म से
अविरतः=नहीं निवृत्त भया
है जो
अशान्तः=नहीं शान्त हुआ
है जो

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
असमाहितः=नहीं एकाग्र किया
है चित्तको जिसने
वा=और
अशान्तमानसः=नहीं हुआ है शान्त
मन जिसका

एतैः पुरुषैः=ऐसे पुरुषों करके
 आत्मा=आत्मा
 न लभ्यः=प्राप्त होने योग्य
 नहीं है
 प्रज्ञानेन=ज्ञान करके

अपि=ही
 एनम्=इस आत्मा को
 पुरुषः=पुरुष
 आप्नुयात्=प्राप्त होता है

मूलम् ।

यस्य ब्रह्म च क्षेत्रं च उभे भवत ओदनम् मृत्युर्यस्योपसेचनं क
 इत्था वेद यत्र सः ॥ २५ ॥

द्वितीयावल्ली समाप्ता ।

पदच्छेदः ।

यस्य, ब्रह्म, च, क्षेत्रम्, च, उभे, भवतः, ओदनम्, मृत्युः, यस्य,
 उपसेचनम्, कः, इत्था, वेद, यत्र, सः ।

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ

च=और
 यस्य=जिसका
 ब्रह्म=ब्राह्मण
 च=और
 क्षेत्रम्=क्षेत्रिय
 उभे=दोनों
 ओदनम्=भात
 भवतः=होते हैं
 + च=और
 यस्य=जिसका

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्मभावार्थ

मृत्युः=मृत्यु
 उपसेचनम्=दाल साग है
 कः= यः=जो
 इत्था=इस प्रकार
 यत्र=इस बिषे
 वेद=जानता है
 सः=सोई
 आत्मा=आत्मा
 भवति=होता है

इति कठवल्लीउपनिषद्प्रथमाध्याये द्वितीया वल्ली

भाषाटीका समाप्ता ॥

मूलम् ।

ॐऋतं पिबन्तौ स्वकृतस्य लोके गुहाम्प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छाया-
तपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ऋतम्, पिबन्तौ, स्वकृतस्य, लोके, गुहाम्, प्रविष्टौ, परमे, परार्द्धे,
छायातपौ, ब्रह्मविदः, वदन्ति, पञ्चाग्नयः, ये, च, त्रिणाचिकेताः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	सुकृतस्य=अपने किये हुये कर्मों के		तौ=उन दोनों को ये=मो
	ऋतम्=सतरूप फल को		ब्रह्मविदः=ब्रह्मविद् हैं
	पिबन्तौ=पान किये हुये हैं जो		च=और
	च=और		पञ्चाग्नयः=गृहस्थी हैं
	लोके=शरीर में		च=और
	परमे=शुद्ध		त्रिणाचिकेताः=नाचिकेत नामक अग्नि के उपासक हैं
	परार्द्धे=हृदयाकाश विषे		ते=वे
	गुहाम्=बुद्धिरूपी गुहा को		छायातपौ=छाया धूपवत्
	प्रविष्टौ=जीव और साक्षीरूप होकर प्राप्त है जो		वदन्ति=कहते हैं

मूलम् ।

यः सेतुरीजानानामक्षरम् ब्रह्म यत्परम् अभयम् तितीर्षताम्पारं
नाचिकेतं शक्रेमहि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यः, सेतुः, ईजानानाम्, अक्षरम्, ब्रह्म, यत्, परम्, अभयम्,
तितीर्षताम्, पारम्, नाचिकेतम्, शक्रेमहि ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
परम्=परम
अक्षरम्=अक्षर
ब्रह्म=ब्रह्म है
तत्=सो
ईजानानाम्=यज्ञ करनेवालों को
सेतुः=सेतु है
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
तितीर्षताम्=संसार से तरनेवालोंके
अभयम्=निर्भय
पारम्=पार होने के लिये
नाचिकेतम्=नचिकेता नामक
अग्नि है
तत्सेतुम्=उसको सेतु
शक्रेमहि=जानते हैं हम

मूलम् ।

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु बुद्धिन्तु सारथिं
विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

आत्मानम्, रथिनम्, विद्धि, शरीरम्, रथम्, एव, तु, बुद्धिम्,
तु, सारथिम्, विद्धि, मनः, प्रग्रहम्, एव, च ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

आत्मानम्=आत्मा को
रथिनम्=रथ का स्वामी
विद्धि=जान तू
+ च=और
शरीरम्=शरीर को
रथम्=रथ
एव=निश्चय करके
+ विद्धि=जान तू
तु=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

बुद्धिम्=बुद्धि को
सारथिम्=सारथी
विद्धि=जान तू
च=और
मनः=मन को
प्रग्रहम्=बाग,
एव=निश्चय करके
विद्धि=जान तू

मूलम् ।

इन्द्रियाणि ह्यानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्
भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियाणि, हयान्, आहुः, विषयान्, तेषु, गोचरान्, आत्मेन्द्रिय-
मनोयुक्तम्, भोक्ता, इति, आहुः, मनीषिणः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियाणि=इन्द्रियों को
हयान्=घोड़े
आहुः=कहते हैं
विषयान्=विषयों को
तेषु=उनके
गोचरान्=मार्ग
आहुः=कहते हैं

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
आत्मेन्द्रिय- } शरीर इन्द्रिय मन के
मनोयुक्तम् } सहित
आत्मानम्=आत्मा को
मनीषिणः=विवेकी जन
भोक्ता इति=भोक्ता करके
आहुः=कहते हैं

मूलम् ।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि
दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, अयुक्तेन, मनसा, सदा, तस्य,
इन्द्रियाणि, अवश्यानि, दुष्टाश्वाः, इव, सारथेः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=और
यः=जो पुरुष
अयुक्तेन=अयुक्त
मनसा=मन करके
सदा=सदा
अविज्ञानवान्=अविवेकी
भवति=होता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तस्य=उसकी
इन्द्रियाणि=इन्द्रियां
सारथेः=सारथि के
दुष्टाश्वाः=दुष्ट घोड़ों के
इव=समान
अवश्यानि=बेवश
भवन्ति=होती हैं

मूलम् ।

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाणि
वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, युक्तेन, मनसा, सदा, तस्य, इन्द्रियाणि,
वश्यानि, सदश्वाः, इव, सारथेः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=और
यः=जो पुरुष
युक्तेन=युक्त
मनसा=मन करके
सदा=सदैव
विज्ञानवान्=विवेकी
भवति=होता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तस्य=उसकी
इन्द्रियाणि=इन्द्रियां
सारथेः=सारथी के
सदश्वाः इव=श्रेष्ठ घोड़ों के
समान
वश्यानि=वशीभूत
भवन्ति=होती हैं

मूलम् ।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाशुचिः न स तत्पदमाप्नोति
संसारं चाधिगच्छति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, अविज्ञानवान्, भवति, अमनस्कः, सदा, अशुचिः, न, सः,
तत्, पदम्, आप्नोति, संसारम्, च, अधिगच्छति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=और
यः=जो
अविज्ञानवान्=विवेक रहित
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अमनस्कः=मन की एका-
ग्रता से रहित
सदा=सदैव
अशुचिः=अपवित्र

भवति=होता है
सः=सो
तत्पदम्=उस पद को यानी
मोक्ष को
न=नहीं

आप्नोति=प्राप्त होता है
च=परन्तु
संसारम्=संसार को ही
अधिगच्छति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, समनस्कः, सदा, शुचिः, सः, तु, तत्, पदम्, आप्नोति, यस्मात्, भूयः, न, जायते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=और
यः=जो
विज्ञानवान्=विवेकी
समनस्कः=एकग्र चित्तवाला
सदा=सदा
शुचिः=पवित्र
भवति=होता है
सः=वह

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=निश्चय करके
तत्=उस
पदम्=पद को
आप्नोति=प्राप्त होता है
यस्मात्=जिस करके
भूयः=फिर
न=नहीं
जायते=उत्पन्न होता है

मूलम् ।

विज्ञानसार्थिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमम्पदम् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

विज्ञानसार्थिः, यः, तु, मनः, प्रग्रहवान्, नरः, सः, अध्वनः, पारम्, आप्नोति, तत्, विष्णोः, परमम्, पदम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
विज्ञान- } विज्ञान
सारथिः } =सारथी है
तु=और
मनः=मनरूपी
प्रग्रहवान्=बाग का ग्रहण करने
वाला
नरः=पुरुष है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

सः=वह
अध्वनः=संसार मार्ग के
पारम्=पार को
आप्नोति=प्राप्त होता है
तत्=सोई
विष्णोः=विष्णु का
परमम्=परम
पदम्=पद है

मूलम् ।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः मनसश्च परा बुद्धि-
बुद्धेरात्मा महान् परः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियेभ्यः, पराः, हि, अर्थाः, अर्थेभ्यः, च, परम्, मनः, मनसः,
च, परा, बुद्धिः, बुद्धेः, आत्मा, महान्, परः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

इन्द्रियेभ्यः=इन्द्रियों से
पराः=परे
हि=निश्चय करके
अर्थाः= { विषय हैं क्योंकि
इन्द्रियों की प्रवृत्ति
विषयों के आधीन है
अर्थेभ्यः=विषयों से
परम्=परे
मनः=मन है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

च=और
मनसः=मन से
परा=परे याने सूक्ष्म
बुद्धिः=बुद्धि है
च=और
बुद्धेः=बुद्धि से
परः=परे
महान्=महान्
आत्मा=हिरण्यगर्भ है

मूलम् ।

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः पुरुषाश्च परं किञ्चित्सा
काष्ठा सा परा गतिः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

महतः, परम्, अव्यक्तम्, अव्यक्तात्, पुरुषः, परः, पुरुषात्, न,
परम्, किञ्चित्, सा, काष्ठा, सा, परा, गतिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
महतः=हिरण्यगर्भ से		सा=तोई	
परम्=परे		काष्ठा=अवधि है यानी परम	
अव्यक्तम्=अव्याकृत है		आश्रय है	
अव्यक्तात्=अव्याकृतयाने माया से		च=और	
परः=परे		सा=तोई	
पुरुषः=आत्मा है		परा=सर्वोत्तम	
पुरुषात्=आत्मा से		गतिः=गति है अर्थात्	
परम्=परे		प्राप्त होने योग्य है	
न किञ्चित्=कुछ नहीं है			

मूलम् ।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते दृश्यते त्वग्रया बुद्ध्या सू-
क्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

एषः, सर्वेषु, भूतेषु, गूढात्मा, न, प्रकाशते, दृश्यते, तु, अग्रया,
बुद्ध्या, सूक्ष्मया, सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः=यह		सर्वेषु=सब	
गूढात्मा=गूढात्मा		भूतेषु=भूतों बिषे	

न=नहीं
 प्रकाशते= { प्रकाशता है यानी
 सबको नहीं देखाई
 देता है
 तु=परन्तु
 अग्रया=एकाम्र
 सूक्ष्मया=सूक्ष्म

बुद्ध्या=बुद्धिद्वारा
 सूक्ष्मदर्शिभिः=सूक्ष्मदर्शी ज्ञानियों
 करके
 दृश्यते= { देखा जाता है
 याने अनुभव किया
 जाता है

मूलम् ।

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तच्चच्छेज्ज्ञान आत्मनि ज्ञानमात्मनि महति
 नियच्छेत्तच्चच्छेच्चान्त आत्मनि ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

यच्छेत्, वाङ्मनसी, प्राज्ञः, तत्, यच्छेत्, ज्ञाने, आत्मनि, ज्ञानम्,
 आत्मनि, महति, नियच्छेत्, तत्, यच्छेत्, शान्ते, आत्मनि ॥

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 प्राज्ञः=बुद्धिमान् पुरुष
 वाक्=वाणी को
 मनसी=मन बिषे
 यच्छेत्=लय करै
 च=और
 तत्=उस मन को
 ज्ञाने=ज्ञानरूपी
 आत्मनि=आत्मा याने बुद्धि में
 यच्छेत्=लय करै
 च=और

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 ज्ञानम्=ज्ञान याने बुद्धि को
 महति=महान्
 आत्मनि=हिरण्यगर्भ में
 नियच्छेत्=लय करै
 + च=और
 तत्=तिस महानात्मा हिर-
 ण्यगर्भ को
 शान्ते=शान्त
 आत्मनि=अधिष्ठान आत्मा में
 यच्छेत्=लय करै

मूलम् ।

वसिष्ठत जाग्रत प्राप्य वराभिबोधत क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
 दुर्गम्यथस्तत्कवयो बद्धन्ति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य, वरान्, निबोधत, क्षुरस्य, धारा, निशिता, दुरत्यया, दुर्गम्, पथः, तत्, कवयः, वदन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ हे जन्तवः=हे मनुष्यो
+ यूयम्=तुम
उत्तिष्ठत=उठो
जाग्रत=जागो
च=और
वरान्=भोग्रिय ब्रह्मनेष्टि आ
चार्य को
प्राप्य=प्राप्त होकर
+ आत्मानम्=आत्मा को
निबोधत=जानो

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

ज्ञानम्=ज्ञान
क्षुरस्य=क्षुरी की
निशिता=तीक्ष्ण
धारा=धारकी तरह
दुरत्यया=कठिन है
च=और
तत्=उसीको
कवयः=विद्वान् लोक
दुर्गम् पथः=दुर्गम मार्ग
वदन्ति=कहते हैं

मूलम् ।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसभित्यमगन्धवच्च यत् अनाद्यन-
न्तम्महतः परन्ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

अशब्दं, अस्पर्शम्, अरूपम्, अव्ययम्, तथा, अरसम्, नित्यम्,
अगन्धवत्, च, यत्, अनादि, अनन्तम्, महतः, परम्, ध्रुवम्,
निचाय्य, तत्, मृत्युमुखात्, प्रमुच्यते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
अशब्दम्=शब्दरहित है
अस्पर्शम्=स्पर्शरहित है
अरूपम्=रूपरहित है
अव्ययम्=अविनाशी है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

तथा=और
अरसम्=रसरहित है
नित्यम्=नित्य है
अगन्धवत्=गन्धरहित है
च=और

अनादि=आदिरहित है
 अनन्तम्=अंतररहित है
 महत्=महत्तरव से
 परम्=परे है
 ध्रुवम्=अचल है

तत्=तिसको
 निचाय्य=ज्ञानकरके
 पुरुषः=पुरुष
 मृत्युमुखात्=मृत्यु के मुख से
 प्रमुच्यते=छूटजाता है

मूलम् ।

नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी
 ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

नाचिकेतम्, उपाख्यानम्, मृत्युप्रोक्तम्, सनातनम्, उक्त्वा, श्रुत्वा,
 च, मेधावी, ब्रह्मलोके, महीयते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 मृत्युप्रोक्तम्=मृत्युकरके कही
 हुई
 सनातनम्=सनातन
 नाचिकेतम्=नाचिकेतासम्बन्धी
 उपाख्यानम्=आख्यायिका को
 उक्त्वा=कथन करके

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ
 च=और
 श्रुत्वा=श्रवण करके
 मेधावी=बुद्धिमान् पुरुष
 ब्रह्मलोके=ब्रह्मलोक में
 महीयते=महिमा को प्राप्त
 होता है

मूलम् ।

य इमं परमं गुह्यं श्रावयेष्टु ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्धकाले वा
 तदानन्त्याय कल्पते तदानन्त्याय कल्पते इति ॥ १७ ॥

तृतीया वल्ली समाप्ता ।

पदच्छेदः ।

यः, इमम्, परमम्, गुह्यम्, श्रावयेत्, ब्रह्मसंसदि, प्रयतः, श्राद्ध-
 काले, वा, तत्, आनन्त्याय, कल्पते, तत्, 'आनन्त्याय' कल्पते, इति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
इमम्=इस
परमम्=परम
गुह्यम्=गोपनीय विद्या को
ब्रह्मसंसदि=ब्राह्मणों की सभा में
वा=अथवा
प्रयतः=पवित्र होकर

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

श्राद्धकाले=श्राद्धके समय बिषे
श्रावयेत्=सुनावै तो
तत्=वह सुनाना
आनन्त्याय=अनन्त फल के अर्थ
कल्पते=माना जाता है
आनन्त्याय=अनन्त फल के अर्थ
कल्पते=माना जाता है

इति कठवल्ली उपनिषद् प्रथमाध्याये तृतीया वल्ली भाषाटीका समाप्ता ॥

इति प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥

मूलम् ।

ॐ पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्त-
रात्मन् कश्चित्धीरः प्रत्यगात्मानमैशदावृतचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥१॥

पदच्छेदः ।

पराञ्चि, खानि, व्यतृणत्, स्वयम्भूः, तस्मात्, पराङ्, पश्यति, न,
अन्तरात्मन्, कश्चित्, धीरः, प्रत्यक्, आत्मानम्, ऐक्षत्, आवृतचक्षुः,
अमृतत्वम्, इच्छन् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

स्वयम्भूः=परमेश्वर
खानि=इन्द्रियों को
पराञ्चि=बाह्य विषयों की ओर
जानेवाली
व्यतृणत्=रचता भया
तस्मात्=तिसी कारण के
पराङ्=विषयों को ही
पश्यति=देखती है
अन्तरात्मन्=अन्तरात्मा को
न=नहीं देखती है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

कश्चित्=कोई विरला
धीरः=धीर पुरुष
अमृतत्वम्=अमरभाव को
इच्छन्=इच्छा करता हुआ
आवृतचक्षुः=चक्षु इन्द्रियों को विषयों
से हटा कर
प्रत्यक्=अन्तर
आत्मानम्=आत्मा को
ऐक्षत्=देखता है

मूलम् ।

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

पराचः, कामान्, अनुयन्ति, बालाः, ते, मृत्योः, यन्ति, विततस्य,
पाशम्, अथ, धीराः, अमृतत्वम्, विदित्वा, ध्रुवम्, अध्रुवेषु, इह, न,
प्रार्थयन्ते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
पराचः=बाह्य
कामान्=विषयों को
बालाः=अज्ञानी पुरुष
अनुयन्ति=प्राप्त होते हैं
च=और
ते=वेही
मृत्योः=मृत्यु के
विततस्य=फैले हुये
पाशम्=रस्सा को

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यन्ति=प्राप्त होते हैं
अथ=और
धीराः=विवेकी पुरुष
ध्रुवम्=नित्य
अमृतत्वम्=अमररूप आत्मा को
विदित्वा=जानकरके
इह=इस संसार बिषे
अध्रुवेषु=अनित्य भोगों को
न प्रार्थयन्ते=नहीं चाहते हैं

मूलम् ।

येन रूपं रसं गन्धं शब्दान् स्पर्शांश्च मैथुनान् एतेनैव विजा-
नाति किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

येन, रूपम्, रसम्, गन्धम्, शब्दान्, स्पर्शान्, च, मैथुनान्,
एतेन, एव, विजानाति, किम्, अत्र, परिशिष्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
येन=जिस साक्षिआत्मा करके
रूपम्=रूपको
रसम्=रसको
गन्धम्=गन्धको
शब्दान्=शब्दों को
स्पर्शान्=स्पर्शों को
च=और
मैथुनान्=मैथुनों को
एव=ठीक ठीक
+ पुरुषः=पुरुष
विजानाति=अच्छे प्रकार जानता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तत्=सोई
वै=निरखय करके
एतत्=यह ब्रह्म है
च=और
एतेन=इस आत्मा से और
किम्=क्या
अत्र=यहां
परिशिष्यते={ जानने को शेष रहता
है याने जानने योग्य
कुछ भी बाकी नहीं
रहता है

मूलम् ।

स्वप्नांतं जागरितान्तश्चोभौ येनानुपश्यति महान्तं विभुमात्मानं
मत्वा धीरो न शोचति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नान्तम्, जागरितान्तम्, च, उभौ, येन, अनुपश्यति, महान्तम्,
विभुम्, आत्मानम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
उभौ=दोनों यानी
स्वप्नान्तम्=स्वप्नकाल के पदार्थों
को
च=और
जागरितान्तम्=जाग्रतकाल के पदार्थों
को
येन=जिस साक्षि चेतन
करके

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
+ पुरुषः=पुरुष
अनुपश्यति=स्पष्ट देखता है
एतत्=वही
वै=निरखय करके
तत्=यह ब्रह्म है
+ च=और
महान्तम्=महान्
विभुम्=व्यापक

आत्मानम्=आत्मा को
मत्वा=जान करके
धीरः=धीर पुरुष

न शोचति=नहीं शोच को प्राप्त
होता है

मूलम् ।

य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात् ईशानम्भूतभव्यस्य न
ततो विजिगृप्सते एतत् वै तत् ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यः, इमम्, मध्वदम्, वेद, आत्मानम्, जीवम्, अन्तिकात्, ईशानम्,
भूतभव्यस्य, न, ततः, विजुगृप्सते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो कोई
इमम्=इस
मध्वदम्=कर्मफल का भोक्ता
अन्तिकात्=समीपवर्ती
भूतभव्यस्य=कालत्रय का
ईशानम्=नियामक
जीवम्=जीवरूप
आत्मानम्=आत्मा को

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
वेद=जानता है
सः=वह
ततः=फिर
न विजुगृप्सते=अपने आपकी रक्षाकी
इच्छा नहीं करता है
तत्=सोई आत्मा
वै=निश्चय करके
एतत्=यह प्रश्न है

मूलम् ।

यः पूर्वन्तपसो जातमद्भ्यः पूर्वमजायत गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो
भूतेभिर्यपश्यत एतद्वै तत् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

यः, पूर्वम्, तपसः, जातम्, अद्भ्यः, पूर्वम्, अजायत, गुहाम्,
प्रविश्य, तिष्ठन्तम्, यः, भूतेभिः, व्यपश्यत, एतत्, वै, तत् ।

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यः=जो
पूर्वम्=पहले
तपसः=ब्रह्मसे
जातम्=उत्पन्न हुआ है
च=और
अद्भ्यः=जलादि पंचतत्त्वों से
पूर्वम्=पूर्व
अजायत=उत्पन्न हुआ है
च=और
यः=जो
भूतेभिः=कार्यकारणसंघात के
सहित

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

गुहाम्=हृदयाकाशरूप
गुहाविषे
प्रविश्य=प्रवेशकरके
तिष्ठन्तम्=स्थित है
+ तद्धिरण्यम्=तिस हिरण्य-
गर्भ को
यः=जो पुरुष
व्यपश्यत=देखता है
तत्=सोई
वै=निश्चय करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

या प्राणेन सम्भवत्यदितिर्देवतामयी गुहां प्रविश्य तिष्ठन्ती या
भूतेभिर्व्यजायत एतद्वै तत् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

या, प्राणेन, सम्भवति, अदितिः, देवतामयी, गुहाम्, प्रविश्य,
तिष्ठन्तीम्, या, भूतेभिः, व्यजायत, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

या=जो
देवतामयी=देवतारूप
प्राणेन=प्राणकरके
सम्भवति=उत्पन्न होता है
+ सा=सोई
अदितिः=अदितिरूप है
च या=और जो

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

भूतेभिः= { सब भूतों के
साथ तादात्म्य-
ताको प्राप्त
होकर के
व्यजायत=उत्पन्न हुआ है
च=और
गुहाम्=हृदयाकाशविषे

प्रविश्य=प्रवेश करके
तिष्ठन्तीम्=स्थित है
तत्=तोई

वै=निश्चय
करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः दिवे दिव
ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

अरण्योः, निहितः, जातवेदाः, गर्भः, इव, सुभृतः, गर्भिणीभिः,
दिवे, दिवे, ईड्यः, जागृवद्भिः, हविष्मद्भिः, मनुष्येभिः, अग्निः,
“एतत्, वै, तत्” ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अरण्योः=क्षोभों अरणियों बिषे
जातवेदाः=वैश्वानर अग्नि
निहितः=स्थित है
इव=जैसे
गर्भिणीभिः=गर्भवती स्त्री करके
सुभृतः=भारण किया हुआ
गर्भः=गर्भ
+ निहितः=स्थित है
च=और
+ यः=जो
अग्निः=अग्नि

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
जागृवद्भिः= { जाग्रत् स्वभाव
वाले याने प्राणा-
याम के करनेवाले
च=और
हविष्मद्भिः=हवन के करने वाले
मनुष्येभिः=मनुष्यों करके
दिवे दिवे=प्रतिदिन
ईड्यः=स्तुति करने योग्य है
तत्=वही
वै=निश्चय करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

यतश्चोदेति सूर्योऽस्तं यत्र च गच्छति तन्देवाः सर्वेऽर्पितास्तदुना-
त्येति कश्चन एतद्वै तत् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

यतः, च, उदेति, सूर्यः, अस्तम्, यत्र, च, गच्छति, तम्, देवाः, सर्वे, अर्पिताः, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

च=और
यतः=जिस प्राणवायु अधि-
दैव करके
सूर्यः=सूर्य
उदेति=उदय होता है
च=और
यत्र=जिस बिषे
अस्तम्=अस्त को
गच्छति=प्राप्त होता है
तम्=तिसी में
सर्वे=सब

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

देवाः=देवता
अर्पिताः=अर्पित हैं
उ=और
तत्=उसको
कश्चन=कोई भी
न=नहीं
अत्येति=उत्सव कर
सक्ता है
तत्=तोई
वै=निश्चय करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

यत्, एव, इह, तत्, अमुत्र, यत्, अमुत्र, तत्, अनु, इह, मृत्योः, सः, मृत्युम्, आप्नोति, यः, इह, नाना, इव, पश्यति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
एव=निश्चय करके
इह=यहां है
तत्=तोई
अमुत्र=वहां है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
अमुत्र=वहां है
तत्=तोई
अन्विह=यहां है
यः=जो

इह=इस अद्वैत चेतन
बिषे
नाना=नानात्व यानी भेद
भाव
इव=सा

पश्यति=देखता
सः=सो
मृत्योः=मृत्यु से भी
मृत्युम्=मृत्यु को
आप्नोति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

मनसैवेदमाप्तव्यब्रह्म नानास्ति किञ्चन मृत्योः स मृत्युङ्गच्छति
य इह नानेव पश्यति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

मनसा, एव, इदम्, आप्तव्यम्, न, इह, नाना, अस्ति, किञ्चन,
मृत्योः, सः, मृत्युम्, गच्छति, यः, इह, नाना, इव, पश्यति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
मनसा=मन करके
एव=ही
इदम्=यह
आप्तव्यम्=प्राप्त होने योग्य है
इह=इस ब्रह्म बिषे
किञ्चन=किञ्चित्मात्र भी
नाना=नानात्व याने भेद
न=नहीं
अस्ति=है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो
इह=इस ब्रह्म बिषे
नाना इव=नानात्व को ही
पश्यति=देखता है
सः=वह
मृत्योः=मृत्यु से भी
मृत्युम्=मृत्युको यानी पुनःपुनः
जन्म मरण को
गच्छति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति ईशानो भूतभव्यस्य
न ततो विजुगुप्सते एतद्वै तत् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, मध्ये, आत्मनि, तिष्ठति, ईशानः, भूतभव्यस्य,
न, ततः, विजुगुप्सते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र
पुरुषः=पुरुष
आत्मनि=शरीर के
मध्ये=मध्य बिन्दु याने हृदया-
काश में
तिष्ठति=स्थित है
च=और
भूतभव्यस्य=कालत्रय का

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
ईशानः=मेरु है
ततः=इस बिन्दु
+ सः=वह
विजुगुप्सते=रक्षा करने की इच्छा
न=नहीं करता है
तत्=सोई
वै=निश्चय करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः ईशानो भूतभव्यस्य स
एवाय स उ श्वः एतद्वै तत् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, ज्योतिः, इव, अधूमकः, ईशानः, भूतभव्यस्य,
सः, एव, अद्य, सः, उ, श्वः, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र
पुरुषः=पुरुष
अधूमकः=धूमरहित
ज्योतिः=अग्नि की
इव=तरह प्रकाशमान है
च=और जो
भूतभव्यस्य=तीनों काल का
ईशानः=नियामक ईश्वर है
सः एव=सोई निश्चय करके

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अद्य=आज वर्तमान हैं
उ=और
सः=सोई
श्वः=कल याने भविष्यत् है
ततः=ताते
तत्=वही
वै=निश्चय करके
एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

यथोदक्रन्दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधावति एवं धर्मान् पृथक्पश्यँस्तानेवानु
विधावति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, उदकम्, दुर्गे, वृष्टम्, पर्वतेषु, विधावति, एवम्, धर्मान्, पृथक्, पश्यन्, तान्, एव, अनुविधावति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
उदकम्=जल
दुर्गे=कठिन
पर्वतेषु=पर्वत पर
वृष्टम्=बरसा हुआ
विधावति=निम्न देश में फैल कर
नष्ट होजाता है
एवम्=इसी प्रकार

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

धर्मान्=धर्मों को
पृथक्=भिन्न भिन्न
प्रतिशरीरम्=प्रतिशरीरमें
+ पुरुषः=जीवात्मा
पश्यन्=देखता हुआ
तान् एव=तिनहीं शरीरों को
अनुविधा- } वारंवार प्राप्त
वति } =होता है

मूलम् ।

यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्नन्तादृगेव भवति एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति गौतम ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, उदकम्, शुद्धे, शुद्धम्, आसिक्तम्, तादृक्, एव, भवति, एवम्, मुनेः, विजानतः, आत्मा, भवति, गौतम ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

गौतम=हे नधिकेता
यथा=जैसे
उदकम्=जल
शुद्धे=शुद्धस्थान में
आसिक्तम्=गिरा हुआ यानी बर्षा
हुआ
तादृक् एव=वैसा ही
शुद्धम्=शुद्ध

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

भवति=बना रहता है
एवम्=इसी प्रकार
विजानतः=ज्ञानी
मुनेः=मुनि का
आत्मा=आत्मा
+ सदा=सदा
शुद्धम्=शुद्ध
भवति=रहता है

द्वितीयाऽध्यायस्य चतुर्थी वल्ली समाप्ता ॥ ४ ॥

मूलम् ।

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते एतद्वै तत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

पुरम्, एकादशद्वारम्, अजस्य, अवक्रचेतसः, अनुष्ठाय, न, शोचति, विमुक्तः, च, विमुच्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अजस्य=जन्मरहित

अवक्रचेतसः=अकुटिल विज्ञानरूप
चेतन आत्मा का

+ इदम्=यह

एकादशद्वारम्=ग्यारह दरवाजे
वाला

पुरम्=पुररूपी शरीर है

+ यः=जो

तम्=उस पुरके स्वामी को

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अनुष्ठाय=ध्यान करके

न शोचति=शोक नहीं करता है
सः=वह

विमुक्तः=मुक्त हुआ

च=भी

विमुच्यते=मुक्त होता है

तत्=सोई

वै=निश्चय करके

एतत्=यह ब्रह्म है

मूलम् ।

हंश्चसः शुचिषदसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् नृषद्व-
रसद्वतसद्व्योमसदब्जा गोजा क्रतुजा अद्रिजा ऋतम्बृहत् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

हंसः, शुचिषत्, वसुः, अन्तरिक्षसत्, होता, वेदिषत्, अतिथिः,
दुरोणसत्, नृषत्, वरसत्, ऋतसत्, व्योमसत्, अब्जाः, गोजाः,
क्रतुजाः, अद्रिजाः, ऋतम्, बृहत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ अयम् आत्मा=यह आत्मा

हंसः=हंस है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

शुचिषत्=पवित्र आकाश में
स्थित है

वसुः=	{ वायुरूप होकर सबको अपनेविषे बसावने वाला है	वरसत्=देवताओं में स्थित है
अन्तरिक्ष सत्=अन्तरिक्ष में चलने वाला है		ऋतसत्=यज्ञ में स्थित है
होता=अग्निरूप है		व्योमसत्=आकाश में स्थित है
वेदिषत्=पृथिवी में स्थित है		अब्जाः=जलसे उत्पन्न हुआ है
अतिथिः=जलरूप होकर		गोजाः=पृथिवी से उत्पन्न हुआ है
दुरोणसत्=कलश विषे स्थित है		क्रतुजाः=यज्ञ से उत्पन्न हुआ है
नृसत्=मनुष्यों में स्थित है		अद्रिजाः=पर्वत से उत्पन्न भया है
		ऋतम्=सत्य है
		वृहत्=सब से बड़ा है

मूलम् ।

ऊर्ध्वप्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा
उपासते ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

ऊर्ध्वम्, प्राणम्, उन्नयति, अपानम्, प्रत्यक्, अस्यति, मध्ये,
वामनम्, आसीनम्, विश्वेदेवाः, उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो		तम्=उस	
प्राणम्=प्राणवायु को		वामनम्=भंगुष्ठमात्र शिव	
ऊर्ध्वम्=ऊपर की ओर		मध्ये=हृदयाकाश विषे	
उन्नयति=बेजाता है		आसीनम्=स्थित को	
च=और		विश्वे=सब	
अपानम्=अपानवायु को		देवाः=चक्षुरादि देवता	
प्रत्यक्=नीचे की ओर		उपासते=उपासना करते हैं	
अस्यति=कैकता है			

मूलम् ।

अस्य विस्त्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः देहादिमुच्यमानस्य किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

अस्य, विस्त्रंसमानस्य, शरीरस्थस्य, देहिनः, देहात्, विमुच्यमानस्य, किम्, अत्र, परिशिष्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
विस्त्रंसमानस्य=बाहर निकलनेवाले
+ च=और
विमुच्यमानस्य=देह को त्यागनेवाले
अस्य=इस
शरीरस्थस्य=शरीर बिषे स्थित
देहिनः=जीव आत्मा के
देहात्=देह से पृथक् होनेपर
किम्=क्या

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अत्र=इस त्यागेहुये शरीर बिषे
परिशिष्यते= { अवशेष रहता है
अर्थात् कुछ भी शेष
रहता नहीं
+ तस्मात्=इसलिये
एतत्=यही
वै=निरचय करके
तत्=वह ब्रह्म है

मूलम् ।

न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

न, प्राणेन, न, अपानेन, मर्त्यः, जीवति, कश्चन, इतरेण, तु, जीवन्ति, यस्मिन्, एतौ, उपाश्रितौ ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
कश्चन=कोई भी
मर्त्यः=मनुष्य
न प्राणेन=न प्राणों करके
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
न अपानेन=न अपान करके
जीवति=जीता है
+ परन्तु=परन्तु
इतरेण तु=औरही करके

जीवन्ति=जीवते हैं

यस्मिन्=जिस में

एतौ=वे दोनों प्राणापान

उपाश्रितौ=आश्रित हो रहे

हैं

+ तत् एव ब्रह्म=सोई ब्रह्म है

मूलम् ।

हन्त त इदम्प्रवक्ष्यामि गुह्यम्ब्रह्म सनातनम् यथा च मरणं प्राप्य
आत्मा भवति गौतम ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

हन्त, ते, इदम्, प्रवक्ष्यामि, गुह्यम्, ब्रह्म, सनातनम्, यथा, च,
मरणम्, प्राप्य, आत्मा, भवति, गौतम ॥

अन्वयः

पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

हन्त=अब
ते=तुझ से
इदम्=इस
सनातनम्=पुरातन
गुह्यम्=गोप्य
ब्रह्म=ब्रह्म को
प्रवक्ष्यामि=कहता हूँ
च=और
गौतम=हे नषिकेता

अन्वयः

पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जिस प्रकार
आत्मा=अज्ञानी पुरुष का आत्मा
मरणम्=मरण को
प्राप्य=प्राप्त होके
संसारम्=संसार को
भवति=पावता है
तम्=तिसका
शृणु=श्रवण कर

मूलम् ।

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति
यथा कर्म यथा श्रुतम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

योनिम्, अन्ये, प्रपद्यन्ते, शरीरत्वाय, देहिनः, स्थाणुम्, अन्ये,
अनुसंयन्ति, यथा, कर्म, यथा, श्रुतम् ॥

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 अन्ये=ज्ञानवान् से अन्य
 देहिनः=देहाभिमानी
 अज्ञानी
 शरीरत्वाय=शरीर के अर्थ
 योनिम्=अनेक योनिको
 यथाकर्म=कर्म के अनुसार
 च=और
 यथाश्रुतम्=प्रवृत्तिशास्त्र श्रवणा-
 नुसार
 प्रपद्यन्ते=प्राप्त होते हैं

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 अन्ये= { सकाम कर्म करने
 वालों से भी अन्य
 अत्यन्त मूढ़ पुरुष
 स्थाणुम्= { जङ्गमभाव को
 यानी वृक्ष पाषाण
 आदि को
 यथाकर्म=कर्मानुसार
 च=और
 यथाश्रुतम्=कपोल कल्पित शास्त्र
 श्रवणानुसार
 अनुसंयन्ति=प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

य एष सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं पुरुषो निर्मिमाणाः तदेव शुक्रं
 तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदुनात्येति कश्चन
 एतद्वै तत् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

यः, एषः, सुप्तेषु, जागर्ति, कामम्, कामम्, पुरुषः, निर्मिमाणाः,
 तत्, एव, शुक्रम्, तत्, ब्रह्म, तत्, एव, अमृतम्, उच्यते, तस्मिन्
 लोकाः, श्रिताः, सर्वे, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, तत् ।

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 यः=जो
 एषः=यह
 पुरुषः=पुरुष
 सुप्तेषु=स्वप्न बिषे
 कामंकामम्=वाञ्छित विषयों को
 निर्मिमाणाः=रचता हुआ
 जागर्ति=जागता है

अन्वयः **पदार्थसहित**
सूक्ष्म भावार्थ
 तत् एव=सोई
 तत्=वह
 शुक्रम्=शुद्ध
 ब्रह्म=ब्रह्म है
 च=और
 तत् एव=सोई
 अमृतम्=अविनाशी

उच्यते=कहा जाता है
 तस्मिन्=तिसही बिषे
 सर्वे=सब
 लोकाः=लोक
 श्रिताः=आश्रित हैं
 + च=और
 तत्=उसको

कश्चन=कोई भी
 न=नहीं
 अत्येति=उल्लंघन करता है
 + अस्मात् } =इसी कारण
 कारणात् } से
 एतत् वै=यही
 तत्=वह अथ है

मूलम् ।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव एकस्तथा
 सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

अग्निः, यथा, एकः, भुवनम्, प्रविष्टः, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः,
 बभूव, एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बहिः, च ॥

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
 एकः=एक
 अग्निः=अग्नि
 भुवनम्=भुवन बिषे
 प्रविष्टः=प्रवेश करता हुआ
 रूपम् रूपम्=रूपरूप से याने अनेक
 रूप से
 प्रतिरूपः=हर एक उपाधि के
 साथ तद्रूप
 बभूव=होता भया
 तथा=वैसेही

अन्वयः पदार्थसहित
 सूक्ष्म भावार्थ

सर्वभूता- } सब भूतों के अन्तर
 न्तरात्मा } =का आत्मा भी
 एकः=एक होता हुआ
 रूपम् रूपम्=देह देह के प्रति
 प्रतिरूपः=तादात्म्याऽध्यास
 करके
 बभूव=तद्रूपही होता भया
 च=और

बहिः= { आकाशवत् सबके
 बाहर भी स्थित
 होता भया

मूलम् ।

वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव एकस्तथा सर्व-
 भूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

वायुः, यथा, एकः, भुवनम्, प्रविष्टः, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः,
बभूव, एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बहिः, च ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे

एकः=एक

वायुः=वायु

भुवनम्=चतुर्दश लोक में

प्रविष्टः=प्रवेश करता हुआ

रूपम् रूपम्=शरीर शरीर प्रति

प्रतिरूपः=तद्रूप

बभूव=होता भया

तथा=वैसेही

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

सर्वभूता- } सब भूतों का
न्तरात्मा } =अन्तरात्मा

एकः=एक होता हुआ

रूपम् रूपम्=देह देह प्रति

प्रतिरूपः=तादात्म्यरूप

बभूव=होता भया

च=और

बहिः=बाहर भी आकाशवत्
व्याप्त होता भया

मूलम् ।

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

सूर्यः, यथा, सर्वलोकस्य, चक्षुः, न, लिप्यते, चाक्षुषैः, बाह्यदोषैः
एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, न, लिप्यते, लोकदुःखेन, बाह्यः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे

सूर्यः=सूर्य

सर्वलोकस्य=सब लोकों का

चक्षुः=नेत्रभूत होता हुआ

चाक्षुषैः=लोकों के चक्षुओं के

बाह्यदोषैः=बाह्यदोषों करके

न लिप्यते=नहीं लिप्यमान होता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

तथा=वैसेही

एकः=एक

सर्वभूता- } सब भूतों का
न्तरात्मा } =अन्तरात्मा

बाह्यः=पृथक् होता हुआ

लोकदुःखेन=लोकों के दुःखसे

न लिप्यते=नहीं लिप्यमान होता है

मूलम् ।

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति तमात्मस्थं
येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतमेतरेषाम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

एकः, वशी, सर्वभूतान्तरात्मा, एकम्, रूपम्, बहुधा, यः, करोति,
तम्, आत्मस्थम्, ये, अनुपश्यन्ति, धीराः, तेषाम्, सुखम्, शाश्वतम्,
न, इतरेषाम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

सर्वभूता- } सब भूतों का अन्तर
न्तरात्मा } =आत्मा
एकः=एक है
वशी=सबको वश करने
वाला है
एकम् रूपम्=अपने एकही रूपको
बहुधा=उपाधी करके बहुत
प्रकार का
यः=जो
करोति=करकेता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

तम्=तिस
आत्मस्थम्=शरीरमें स्थित आत्माको
ये=जो
धीराः=विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति=अनुभव करते हैं
तेषाम्=तिनकोही
शाश्वतम्=नित्य
सुखम्=सुखहोता है
इतरेषाम्=इतर पुरुषों को
न=नहीं होता है

मूलम् ।

नित्योनित्यानाञ्चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

नित्यः, अनित्यानाम्, चेतनः, चेतनानाम्, एकः, बहूनाम्, यः,
विदधाति, कामान्, तम्, आत्मस्थम्, ये, अनुपश्यन्ति, धीराः, तेषाम्,
शान्तिः, शाश्वती, न, इतरेषाम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो व्यापक आत्मा
अनित्यानाम्=अनित्य जेगत् आदि-
कों का
नित्यः=अधिष्ठान कारणरूप
नित है
च=और
चेतनानाम्=चेतनका भी
चेतनः=चेतन है
सः=सोई
एकः=एक हुआ हुआ
बहुनाम्=अनंत जीवों प्रति
कामान्=कर्मों अनुसार भोगोंको

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
विदधाति=देता है
तम्=तिस
आत्मस्थम्=बुद्धिमें स्थित आत्माको
ये=जो
धीराः=विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति=अनुभव करते हैं
तेषाम्=उनको
शाश्वती=नित्य
शान्तिः=शान्तिरूप मोक्ष
प्राप्त है
इतरेषाम्=औरों को
न=नहीं

मूलम् ।

तदेतदिति मन्यन्तेऽनिर्देश्यम्परमं सुखम् कथन्तु तद्विजानीयां
किमु भाति विभाति वा ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, इति, मन्यन्ते, अनिर्देश्यम्, परमम्, सुखम्, कथम्,
नु, तत्, विजानीयाम्, किमु, भाति, विभाति, वा ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यत्=जो
परमम्=उत्कृष्ट
सुखम्=सुख
अनिर्देश्यम्=कहने में आवै नहीं
तत्=सोई
एतत्=यह आत्मा ज्ञानस्वरूप है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
इति=ऐसा
+ ब्रह्मविदः=ब्रह्मवेत्ता
मन्यन्ते=मानते हैं
भगवन्=हे भगवन्
तत्=उस परमात्मा को
कथम् नु=कैसे

विजानीयाम्=जानूँ मैं

तत्=वह

किमु=कैसे

भाति=प्रकाशता है

वा=और

किमु=कैसे

विभाति=स्पष्टभासता है

नोट—नचिकेता यमराज भगवान् से कहता है कि हे भगवन् जो सुखरूप आत्मा ब्रह्मवेत्ताओं को प्राप्त है उसको मैं कैसे जानूँ ॥

मूलम् ।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकश्रेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः
तमेव भान्तप्रनुभाति सर्वन्तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥१५॥

पदच्छेदः ।

न, तत्र, सूर्यः, भाति, न, चन्द्रतारकम्, न, इमाः, विद्युतः, भान्ति,
कुतः, अयम्, अग्निः, तम्, एव, भान्तम्, अनुभाति, सर्वम्, तस्य,
भासा, सर्वम्, इदम्, विभाति ॥

अन्वयः

पदार्थसहित

सूक्ष्म भावार्थ

तत्र=तिस को

सूर्यः=सूर्य

न भाति=नहीं प्रकाश कर सका है

च=और

चन्द्रतारकम्=चंद्रमा सहित तारों के

न भाति=नहीं प्रकाश कर सका है

च=और

इमाः=ये

विद्युतः=बिजुलियां भी

न भान्ति=नहीं प्रकाश कर सकी हैं

+ तर्हि=तब

कुतः=कैसे

तम्=उसको

अन्वयः

पदार्थसहित

सूक्ष्म भावार्थ

अयम्=यह

अग्निः=भौतिक अग्नि

+ प्रकाश- } प्रकाश करेगी किन्तु
यिष्यति } =नहीं करेगी

तम् एव=तिसही

भान्तम्=प्रकाशमान के पीछे

सर्वम्=सब जगत्

अनुभाति=प्रकाशमान होता है

च=और

तस्य=तिसही के

भासा=प्रकाश करके

इदंसर्वम्=यह सम्पूर्ण सूर्यादि

विभाति=प्रकाशमान होता है

इति द्वितीयाध्याये पञ्चमवल्ली समाप्ता ॥ ५ ॥

मूलम् ।

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म
तदेवामृतमुच्यते तस्मिन्लोकाः श्रिताः सर्वे तदुनात्येति कश्चन एतद्वैतम् ॥

पदच्छेदः ।

ऊर्ध्वमूलः, अवाक्शाखः, एषः, अश्वत्थः, सनातनः, तत्, एव,
शुक्रम्, तत्, ब्रह्म, तत्, एव, अमृतम्, उच्यते, तस्मिन्, लोकाः,
श्रिताः, सर्वे, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, त्वैतम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
एषः=यह संसार
ऊर्ध्वमूलः=ऊर्ध्वमूल
अवाक्शाखः=नीचे शाखा वाला
सनातनः=अनादि काल का
अश्वत्थः=पीपल का वृक्ष है
तत् एव=तिस संसाररूपी वृक्ष
का मूल
शुक्रम्=शुद्ध
ब्रह्म=ब्रह्म है
च=और
तत् एव=वही
अमृतम्=अविनाशी

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
उच्यते=कहा जाता है
तस्मिन्=उस बिषे
सर्वे=सब
लोकाः=लोक
श्रिताः=आश्रयको प्राप्त हैं
उ=और
तत्=उस को
कश्चन=कोई भी
न अत्येति=नहीं उल्लंघन कर सका है
एतत्=यही
वै=निश्चय करके
तत्=वह ब्रह्म है

मूलम् ।

यदिदं किञ्च जगत्सर्वं प्राण एजति निःसृतम् महद्भयम् वज्रमुद्यतं
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यत्, इदम्, किञ्च, जगत्, सर्वम्, प्राणे, एजति, निःसृतम्,
महद्भयम्, वज्रम्, उद्यतम्, ये, एतत्, विदुः, अमृताः, ते भवन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

यत्=जो
किञ्च=कुछ
इदम्=यह
सर्वम्=सब
जगत्=जगत् है
तत्=सो
प्राणे=प्राणरूपी ब्रह्म बिषे
एजति=चलता है यानी उसीके
आश्रय है
च=और
ततः=तिसी से

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

निःसृतम्=निकसा भया है
महद्भयम्=बड़ा बड़ा भय
वाला है
वज्रम्=वज्र को
उद्यतम्=उठाये हुये है
ये=जो विवेकी जन
एतत्=इसको
विदुः=जानते हैं
ते=वे
अमृताः=अमर
भवन्ति=होते हैं

मूलम् ।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः भयादिन्द्रश्च वायुश्च
मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

भयात्, अस्य, अग्निः, तपति, भयात्, तपति, सूर्यः, भयात्, इन्द्रः,
च, वायुः, च, मृत्युः, धावति, पञ्चमः ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अस्य=इस परमात्मा के
भयात्=भयसे
अग्निः=अग्नि
तपति=तपता है
च=और
सूर्यः=सूर्य भी
अस्य=इसी के
भयात्=भय से

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

तपति=तपता है
च=और
इन्द्रः=इन्द्र
अस्य=इसके
भयात्=भय से
धावति=दौड़ता है यानी वर्षा
करता है
च=और

वायुः=वायु
अस्य=इसी के
भयात्=भय से
धावति=चलता है

च=और
पञ्चमः=पांचवां
मृत्युः=मृत्यु
धावति=दौड़ता है

मूलम् ।

इह चेदशकद्बोद्धुम्प्राक् शरीरस्य विस्त्रसः ततः सर्गेषु लोकेषु
शरीरत्वाय कल्पते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

इह, चेत्, अशकत्, बोद्धुम्, प्राक्, शरीरस्य, विस्त्रसः, ततः,
सर्गेषु, लोकेषु, शरीरत्वाय, कल्पते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

इह=इसी जन्म में
शरीरस्य=शरीर के
विस्त्रसः=पात होने से
प्राक्=पहले
चेत्=यदि
बोद्धुम्=जानने को
अशकत्=समर्थ भया
तदा=तो
+ संसार } = संसार के बंधन से
बंधनात् }
+ विमुच्यते=छूटजाता है

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ नचेत्=और अगर नहीं
+ बोद्धुम्=जानने को
असकत्=समर्थ भया
ततः=तो
सर्गेषु=पृथिवी आदि
लोकेषु=जोकों बिषे
शरीरत्वाय=शरीर धारणार्थ
कल्पते= { समर्थ होता है यानी
अनेक योनियों को
प्राप्त होता है

मूलम् ।

यथाऽदर्शे तथाऽऽत्मनि यथा स्वप्ने तथा पितृलोके यथाऽप्सु परीव
ददृशे तथा गन्धर्वलोके द्यायातपयोरिव ब्रह्मलोके ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, आदर्शे, तथा, आत्मनि, यथा, स्वप्ने, तथा, पितृलोके, यथा,
अप्सु, परि, इव, ददृशे, तथा, गन्धर्वलोके, द्यायातपयोः, इव, ब्रह्मलोके ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यथा=जैसे
आदर्श=दर्पण बिषे अपना
प्रतिबिंब
तथा=तैसे
आत्मनि=बुद्धि बिषे चिदाभास
दृशे=दिखाई पड़ता है
च=और
यथा=जैसे
स्वप्ने=स्वप्न बिषे
तथा=वैसेही
पितृलोके=पितृलोक बिषे
दृशे=दिखाई देता है
च=और
यथा=जैसे

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
परिद्व=चारोंतरफसे भरेहुये
अप्सु=जल बिषे
प्रतिबिंब
दृशे=दिखाई
देता है
तथा=तैसेही
गन्धर्वलोके=गन्धर्वलोक बिषे
च=और
छायातपयोः=छाया धूपकी
इव=तरह
अयम् आत्मा=यह आत्मा
ब्रह्मलोके=ब्रह्मलोक बिषे
दृशे=दिखाई देता है

मूलम् ।

इन्द्रियाणाम्पृथक्भावमुदयास्तमयौचयत् पृथगुत्पद्यमानानां मत्वा
धीरो न शोचति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियाणाम्, पृथक्, भावम्, उदयास्तमयौ, च, यत्, पृथक्,
उत्पद्यमानानाम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
च=और
पृथक्=भिन्न
उत्पद्यमानानाम्=उत्पन्न भये
इन्द्रियाणाम्=इन्द्रियों के
यत्=जो
पृथक्भावम्=भिन्न भाव हैं
तत्=इसको

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
उदयास्तमयौ= { उत्पत्ति प्रलय-
रूप अथवा जा-
ग्रत सुषुप्ति रूप
मत्वा=जान करके
धीरः=धीर पुरुष
न शोचति=शोक को नहीं प्राप्त
होता है

मूलम् ।

इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्त्वमुत्तमम् सत्त्वादधिमहानात्मा मह-
तोव्यक्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियेभ्यः, परम्, मनः, मनसः, सत्त्वम्, उत्तमम्, सत्त्वात्, अधि,
महान्, आत्मा, महतः, अव्यक्तम्, उत्तमम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियेभ्यः=इन्द्रियों से
परम्=परे याने श्रेष्ठ
मनः=मन है
मनसः=मन से
सत्त्वम्=बुद्धि
उत्तमम्=श्रेष्ठ है
सत्त्वात्=बुद्धि से भी

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
महानात्मा=महत्तत्त्व
अधि=श्रेष्ठ है
+ च=और
महतः=महत्तत्त्व से
अव्यक्तम्=अव्यक्त
उत्तमम्=श्रेष्ठ है

मूलम् ।

अव्यक्तात्तु परः पुरुषो व्यापकोऽलिंग एव च यत् ज्ञात्वा मुच्यते जन्तु-
रमृतत्वं च गच्छति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

अव्यक्तात्, तु, परः, पुरुषः, व्यापकः, अलिंगः, एव, च, यत्,
ज्ञात्वा, मुच्यते, जन्तुः, अमृतत्वम्, च, गच्छति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
तु=और
यत्=जिसको
ज्ञात्वा=जान करके
जन्तुः=मनुष्य
मुच्यते=मुक्त हो जाता है
च=और

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अमृतत्वम्=अमर भाव को
गच्छति=प्राप्त होता है
सः=वह
पुरुषः=पुरुष
अव्यक्तात्=अव्यक्त से
परः=परे है

व्यापकः=व्यापक है
च=और

एव=निरचय करके
अर्लिङ्गः=चिह्नरहित है

मूलम् ।

न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् हृदा मनीषा मनसाभिकृतो य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

न, सन्दृशे, तिष्ठति, रूपम्, अस्य, न, चक्षुषा, पश्यति, कश्चन, एनम्, हृदा, मनीषा, मनसा, अभिकृतः, ये, एतत्, विदुः, अमृताः, ते, भवन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अस्य=इस प्रत्यगात्माका
रूपम्=रूप
सन्दृशे=दर्शनविषे
न तिष्ठति=नहीं स्थित होता है
च=और
कश्चन=कोई भी
एनम्=इसको
चक्षुषा=चक्षुकरके
न पश्यति=नहीं देखता है
हृदा=हृदय में स्थित
मनीषा=बुद्धि करके

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ च=और
मनसा=मन करके
अभिकृतः=प्रकाशित हुवा
एतत्=यह ब्रह्म है
एवम्=इस प्रकार इसको
ये=जो
विदुः=जानते हैं
ते=वे
अमृताः=अमर
भवन्ति=होते हैं

मूलम् ।

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमाङ्गतिम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

यदा, पञ्च, अवतिष्ठन्ते, ज्ञानानि, मनसा, सह, बुद्धिः, च, न, विचेष्टते, ताम्, आहुः, परमाम्, गतिम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा=जिस काल बिषे		च=और	
पञ्च=पांचो		बुद्धिः=बुद्धि भी	
ज्ञानानि=ज्ञानेन्द्रियां		न विचेष्टते=नहीं चेष्टाकरती है	
सह=सहित		ताम्=उस अवस्था को	
मनसा=मनके		परमाम्=परम	
अवतिष्ठन्ते=आत्मा में स्थिर		गतिम्=गति	
होजाती हैं		आहुः=कहते हैं	

मूलम् ।

तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम् अप्रमत्तस्तदा भवति
योगो हि प्रभवाप्ययौ ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

ताम्, योगम्, इति, मन्यन्ते, स्थिराम्, इन्द्रियधारणाम्, अप्रमत्तः,
तदा, भवति, योगः, हि, प्रभवाप्ययौ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मुमुक्षुः=मुमुक्षु		हि=क्योंकि	
यदा=जब		योगः=योग	
इन्द्रियधारणाम्=इन्द्रियों के स्वभाव		प्रभवाप्ययौ=उत्पत्ति और ज्ञय	
स्थिराम्=स्थिर		रूप है	
कर्तुम्=करने को		+ च=और	
अप्रमत्तः=प्रमाद रहित होता है		ताम्=उस अवस्था को	
तदा=तब		योगम्=योग	
योगः=योग		इति=करके	
भवति=होता है		मन्यन्ते=मानते हैं	

मूलम् ।

नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न च धृषा अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र
कथं तदुपलभ्यते ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

न, एव, वाचा, न, मनसा, प्राप्तुम्, शक्यः, न, चक्षुषा, अस्ति, इति, ब्रुवतः, अन्यत्र, कथम्, तत्, उपलभ्यते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	तत्=वह ब्रह्म		अस्ति=अस्तिपद
	एव=निश्चय करके		इति=करके
	न वाचा=न वाणी से		कथम्=और किस प्रकार
	न मनसा=न मनसे		ब्रुवतः=श्रद्धावान् अस्तित्व-
	न चक्षुषा=न चक्षुसे		वा दियों करके
	प्राप्तुम्=पानेको		तत्=वह
	शक्यम्=शक्य है		उपलभ्यते=प्राप्त किया जाता है
	अन्यत्र=सिवाय		

मूलम् ।

अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेन चोभयोः अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्त्वभावः प्रसीदति ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

अस्ति, इति, एव, उपलब्धव्यः, तत्त्वभावेन, च, उभयोः, अस्ति, इति, एव, उपलब्धस्य, तत्त्वभावः, प्रसीदति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	अस्ति=है		उभयोः= { उन दोनों का याने सोपाधिक निरुपाधि- क आत्माका
	इति एव=ऐसेही		तत्त्वभावः=एकत्वभाव
	तत्त्वभावेन=तत्त्वभाव करके		अस्ति=है
	तत्=वह आत्मा		इति=इस करकेही
	उपलब्धव्यः=प्राप्त होने योग्य है		प्रसीदति=प्रतीत होता है ॥
	च=और		
	उपलब्धस्य=प्राप्त होने योग्य		

मूलम् ।

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदिश्रिताः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, सर्वे, प्रमुच्यन्ते, कामाः, ये, अस्य, हृदिश्रिताः, अथ, मर्त्यः, अमृतः, भवति, अत्र, ब्रह्म, समश्नुते ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अस्य=इस विद्वान् पुरुष के
हृदि=हृदयविषे
ये=जो
कामाः=कामना
श्रिताः=स्थित हैं
ते=वे
सर्वे=सब
यदा=जब
प्रमुच्यन्ते=छूट जाते हैं

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
अथ=तब
मर्त्यः=मनुष्य
अमृतः=अमर
भवति=होता है
+ च=और
अत्र=इसी जन्म में
ब्रह्म=ब्रह्मको
अश्नुते=प्राप्त होता है ॥

मूलम् ।

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्येतावदनुशासनम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, सर्वे, प्रभिद्यन्ते, हृदयस्य, इह, ग्रन्थयः, अथ, मर्त्यः, अमृतः, भवति, एतावत्, अनुशासनम् ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
यदा=जब
हृदयस्य=हृदय की
सर्वे=सम्पूर्ण

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ
ग्रन्थयः=ग्रन्थियां
इह=इसी जन्म में
प्रभिद्यन्ते=टूट जाती हैं

अथ=तब
मर्त्यः=मनुष्य
अमृतः=मरण रहित

भवति=होता है
एतावत्=इतनाही
अनुशासनम्=उपदेश है ॥

मूलम् ।

शतञ्चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मूर्द्धानमभिनिःसृतैकात-
योर्ध्वमायन्मृतत्वमेति विष्वक् अन्यो उत्क्रमणे भवन्ति ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

शतम्, च, एका, च, हृदयस्य, नाड्यः, तासाम्, मूर्द्धानम्,
अभिनिःसृता, एका, तथा, ऊर्ध्वम्, आयन्, अमृतत्वम्, एति,
विष्वक्, अन्याः उत्क्रमणे, भवन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

च=और
शतं एका=एकसौ एक
हृदयस्य=हृदय की
नाड्यः=नाडियाँ हैं
तासाम्=तिनमें से
मूर्द्धानम्=मस्तक को
अभिनिःसृता=भेद करके निकली गई
एका=एक नाडी है
तथा=इसी नाडी द्वारा
ऊर्ध्वम्=ऊपर को
आयन्=जाता हुआ

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

+ जीवः=जीव पुरुष
अमृतत्वम्=अमर भाव को
एति=प्राप्त होता है
च=और
अन्याः=इतर नाडियाँ
विष्वक्=सर्व ओर से
उत्क्रमणे=मरण बिधे जाने नाना
योनियों की प्राप्ति बिधे
भवन्ति=निमित्त कारण
होती हैं ॥

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः
तंस्वाच्छरिरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकां धैर्येण तं विद्याच्छुक्रममृतं
विद्याच्छुक्रममृतामिति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, अन्तरात्मा, सदा, जनानाम्, हृदये, सन्निविष्टः, तम्, स्वात्, शरीरात्, प्रवृहेत्, मुञ्जात्, इव, इषीकाम्, धैर्येण, तम्, विद्यात्, शुक्रम्, अमृतम्, तम्, विद्यात्, शुक्रम्, अमृतम्, इति ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र

पुरुषः=पुरुष

अन्तरात्मा=प्रत्यक् आत्मा

सदा=सर्वदा

जनानाम्=मनुष्यों के

हृदये=हृदयबिषे

सन्निविष्टः=स्थित है

तम्=तिसको

स्वात्=अपने

शरीरात्=शरीरसे

प्रवृहेत्=पृथक् करे

इव=जैसे

मुञ्जात्=मूँजसे

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

इषीकाम्=सरकंडेको

पृथक्=पृथक्

कुर्वन्ति=करते हैं

धैर्येण=धैर्य करके

तम्=तिसको

शुक्रम्=शुद्ध

अमृतम्=अमृतरूप

इति=ऐसा

तम्=तिसको

शुक्रम्=शुद्ध

अमृतम् इति=अमृतरूप ऐसा

विद्यात्=जानै ॥

मूलम् ।

मृत्युप्रोक्तान्नचिकेतोऽथ लब्ध्वा विद्यामेतां योगविधिञ्च कृत्स्नम्
ब्रह्मप्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युरन्योप्येवं यो विदध्यात्ममेव ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

मृत्युप्रोक्तम्, नचिकेतः, अथ, लब्ध्वा, विद्याम्, एताम्, योग-
विधिम्, च, कृत्स्नम्, ब्रह्मप्राप्तः, विरजः, अभूत्, विमृत्युः, अन्यः,
अपि, एवम्, यः, वित्, अध्यात्मम्, एव ॥

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

अथ=तदनन्तर

मृत्युप्रोक्तम्=मृत्यु करके कही हुई

एताम्=इस

अन्वयः पदार्थसहित
सूक्ष्म भावार्थ

विद्याम्=विद्याको

च=और

कृत्स्नम्=संपूर्ण

योगविधिम्=योगविधि को

नचिकेतः=नचिकेत

तच्छ्रुत्वा=पाकरके

ब्रह्मप्राप्तः=ब्रह्मको प्राप्त होता

हुआ

विरजः=धर्म अधर्मसे रहित

विमृत्युः=मृत्युरहित

अभूत्=होता भया

अन्याः अपि=और भी

एवम्=इस प्रकार

यः=जो

मुमुक्षुः=मुमुक्षुपुरुष

अध्यात्मम्=अध्यात्म विद्या को

वित्=जानने वाला है

सः=वह

अपि=भी

ब्रह्म=ब्रह्म को

आप्नोति=प्राप्त होता है ॥

मूलम् ।

ॐ स नावतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्वि नाव-
धीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ १६ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्समाप्तिमगात् शुभम् ॥

पदच्छेदः ।

सः, नौ, अवतु, सहनौ, भुनक्तु, सह, वीर्यम्, करवावहै, तेजस्वि,
नौ, अधीतम्, अस्तु, मा, विद्विषावहै ॥

अन्वयः पदार्थसहित

सूक्ष्म भावार्थ

सः=वह परमात्मा

नौ=हम गुरु शिष्य

दोनों को

सह=साथही

अवतु=रक्षा करै

+ च=और

नौ=हम दोनों को

सह=साथही

भुनक्तु=पाकन करै

+ च=और

अन्वयः पदार्थसहित

सूक्ष्म भावार्थ

+ आवाम्सह=हम दोनों साथही

वीर्यम्=सामर्थ्य को

करवावहै=प्राप्त होवें

नौ=हम दोनों का

अधीतम्=पढ़ा हुआ

तेजस्वि=तेजवान्

अस्तु=होवै

आवाम्=हम दोनों परस्पर

मा=न

विद्विषावहै=द्वेषको प्राप्त होवें ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्भाषाटीका समाप्ता ॥

कठवल्ली उपनिषद् का भावार्थ ।

मंत्रों का भावार्थ, जो उनके साथ छपनेसे रह गया है, नीचे दिया जाता है—

अध्याय १

भावार्थ । मंत्र १, पृष्ठ १—

यजुर्वेदीय काठकोपनिषद् द्वारा ब्रह्मविद्या का निरूपण करते हैं । ब्रह्मविद्या की प्राप्तिका साधन होने से इस ग्रंथका नाम भी उपनिषद् है, उपनिषद्का अर्थ ब्रह्मविद्या है, ये दोनों पर्याय शब्द हैं ॥ उपनिषद् करके कथन करीहुई जो ब्रह्मविद्या है, उसकी स्तुत्यर्थ और बोधकी सुगमतार्थ कथारूपसे वर्णन करते हैं ॥ वाज नाम अन्नका है तिसअन्नके अतिदान करने से हुआ है यश जिसका उसी का नाम है वाजश्रवा उस वाजश्रवा ऋषिकी जो संतान हो उसका नाम है वाजश्रवसा ॥ उद्दालक-ऋषि बहुत अन्नदान करता था इसलिये उसका दूसरा नाम वाजश्रवसा होताभया, वह उद्दालक ऋषि यज्ञके फलकी इच्छा करके विश्वजित् नामक यज्ञ करने को यजन करताभया, और उस यज्ञमें सर्वधनको ब्राह्मणों के प्रति दक्षिणा देताभया, और जो सुंदर २ दूध देनेवाली गौवें थीं उनको अपने पुत्रके लिये यज्ञ करने से पूर्वही अलग रख लेताभया ॥ और जो गौवें वृद्धाथीं उनको निष्फल जानकर यज्ञमें दक्षिणा के अर्थ ब्राह्मणों के प्रति देलाभया, उस उद्दालकका नचिकेता एक छोटा पांच बरसका लड़का था, वह पिताके कुटिल व्यवहार को देखकर और यज्ञसे पिताको अनिष्टफलकी प्राप्ति को जानकर उसको वेदोक्त यथार्थ वाक्योंमें भद्रा उत्पन्न होतीभई, और उस नचिकेताने अपने

मनमें विचार किया कि इसप्रकारके कुटिल व्यवहार करने से मेरे पिता को श्रेष्ठ यज्ञफलकी प्राप्ति न होगी, इसलिये मुझको उचित है कि मैं उसके हटानेका उपाय करूं, ऐसा संकल्प उसको उस कालमें होता भया जिस कालमें उसका पिता ऋत्विगादि ब्राह्मणों के प्रति दक्षिणा में उन गौवों को दे रहा था ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ २-

तथ्रहेति-नचिकेता गौवों को देखकर अपने चित्तमें विचार करता है कैसी वह गौवें हैं ॥ २ ॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ २-

पीतोदका इति-पान करलिया है पूर्वही जल जिन्होंने अर्थात् अब उनका जल पीनेकी सामर्थ्य नहीं है ॥ जग्धतृणाः ॥ भक्षण करलिया है घास को जिन्होंने अर्थात् अब घास खानेकी सामर्थ्य जिनमें नहीं है ॥ दुग्धदोहाः ॥ पूर्वही दोहन करलिया गया है दूध जिनका याने अब उनमें दूध देनेकी शक्ति नहीं रही है ॥ निरिन्द्रियाः ॥ गर्भके धारण करने की शक्ति से हीन है जो अर्थात् अतिबूढ़ी जो होगई हैं ॥ तान् ॥ ऐसी गौवों को जो दक्षिणामें देता है वह पुरुष ॥ अनन्दानाम ॥ असुखरूप जो लोक हैं अथवा योनि हैं उनमें बड़ दानका कर्त्ता जाता है ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ ३-

सहोवाचेति-पिताके अनिष्टफलके दूर करनेके लिये नचिकेता अपने पिता से कहता है हे तात ! किस ऋत्विग् के प्रति मेरे को आप दक्षिणामें देवोगे, ऐसा जब नचिकेताने पितासे कहा तब पिता नहीं बोला, फिर जब दूसरी तीसरी बार नचिकेताने पितासे कहा कि मेरेको किसके प्रति देवोगे, तब पिताने क्रोधित होकर कहा तुझको मृत्युके प्रति मैं दूंगा, पिताके इसप्रकारके वचन को ध्वज करके नचिकेता अपने मन में चिंतन करता है ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ ४-

बहूवामिति-पिताने मेरेको ऐसा क्यों कहा कि मैं तुमको यमप्रति दूंगा, शय्यद वह क्रोधके वशमें होकर ऐसा कहा होगा क्योंकि ॥ बहूनाम् ॥ बहुतेरे पुत्रों और शिष्यों के मध्यमें मैं प्रथम हूँ याने श्रेष्ठ हूँ क्योंकि बिना आज्ञा गुरुकी और पिताकी मैं न कहीं जाता हूँ और न किसी कामको करता हूँ, पिता और गुरुकी सेवामें परायण रहता हूँ और बहुतेरे शिष्यों और पुत्रों के मध्यमें मैं मध्यम हूँ, कनिष्ठ नहीं हूँ, क्योंकि गुरुकी सेवामें तत्पर रहता हूँ, और पिताकी आज्ञा को उल्लंघन नहीं करता हूँ, तब फिर मुझ ऐसे श्रद्धासम्पन्न पुत्रका त्याग करना पिताको अयुक्त है, और यमके पास मेरे जानेसे यमका भी कोई उपकार नहीं माबूम होता है, मुझको अपने पिताके लिये यम महाराजके प्रति क्या इष्ट कर्तव्य है, मेरा त्याग मेरा पिता व्यर्थही करता है ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ४-

इधर उद्दालकऋषि के चित्तमें बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि हा मैंने क्या किया क्यों मैंने अपने गुणवान् पुत्रका वृथाही त्याग कर दिया ॥ इतने में नचिकेता आकर अपने पिताको जब शोकातुर देखा तब विचार करने लगा कि अब वह उपाय करना चाहिये जिससे पिताका वचन मिथ्या न हो ऐसा विचार करके नचिकेता पिताके प्रति कहता है ॥ अनुपश्येति ॥ हे पिता ! जिस प्रकार आपके पिता और पितामह आदिकोंने अपने वचनकी पालना की है, और जिसप्रकार और महात्मा व राजऋषि लोक दशरथादिकों ने अपने वचन की पालना की है, उसीप्रकार आपभी अपने वचनकी पालना करें, मेरेको यमराज के पास जानेके लिये आज्ञा दीजिये, वचन को मिथ्या करने से कोई भी अजर अमर नहीं होता है, उलटाही अनर्थ को प्राप्त होता है, इसलिये आप अपने वचन को सत्य करो, मेरेको यमपुरी में जानेकी आज्ञा दो

यह शरीरादिक सब अनित्य हैं, खेतियोंकी तरह हैं, अर्थात् जैसे एक खेती पककर नष्ट होजाती, दूसरी बोई जाती है, इसी तरह मनुष्योंके भी पुराने शरीर नष्ट होकर नये उत्पन्न होते हैं, यह जो जन्ममरणरूपी कालचक्र है, सो सदैव चलताही रहता है, ऐसा विचारकर आप मेरेको अब यमके पास जानेके लिये आज्ञा दीजिये, और अपने वाक्य को सत्य करिये ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ ६-

वैश्वानर इति—जब कि नचिकेता ने अपने पिता को अनेक युक्तियों और प्रमाणों करके समझाया, तब पिता उदालक ने उसको यमपुरी जाने की आज्ञा दिया, नचिकेता पिताके तपके प्रभाव से अपने शरीरके सहित यमराजपुरी को गया, और राजगृहके द्वारपर जाकरके उसने महाराज यम के भृत्यों से कहा—मेरे पिताने मेरेको यमके भेटार्थ भेजा है, ऐसा यमसे जाकरके कहो, भृत्योंने कहा—यमराज किसी कार्य के लिये देशान्तर को गये हैं, उनकी स्त्री और पुत्र घरमें हैं, हम उनसे जाकर कहते हैं, भृत्योंने यमकी स्त्री और पुत्रों से कहा कि एक ब्राह्मण का बालक अतिथि होकर तुम्हारे द्वारपर खड़ा है, ऐसा सुनकर अतिथि-सत्कारके लिये वे सब दौड़ आये, और नचिकेतासे भोजनादिकों के करनेकी प्रार्थना की, नचिकेता ने कहा मेरा प्रयोजन यमराजके साथ है, जबतक यमराज नहीं आवेंगे, तबतक मैं भोजनादिकों को ग्रहण नहीं करूंगा, ऐसा कहकर तीन दिन, तीन रात्री, निराहार वहां पर खड़ा रहा, अतिथि को निराहार देखकर यमके नगरनिवासियों ने भी तीन दिनतक उपवास किया, चौथे दिन जब यमराज अपने घर आये तब उनसे उनकी स्त्री इसप्रकार कहती है ॥ वैश्वानरः ॥ हे वैवस्वत यम महाराज ! एक अतिथि ब्राह्मण अग्निरूप होकर आपके घरमें प्रवेश करना चाहता है, वह द्वारपर खड़ा है, उसका सत्कार, पाच

अर्घादिकों करके करिये, श्रेष्ठपुरुषों का धर्म अतिथि का सत्कार करना है, जो अतिथि का सत्कार नहीं करता है, उसको दोष जैसा आगेवाले मन्त्र में लिखा है होता है ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ ७—

आशाप्रतीक्षे इति—जैसे अशान्ताग्नि घरको जला देता है तैसे असत्कृत अतिथिभी सम्पूर्ण सामग्री के सहित घरको जला देता है ॥ आशाप्रतीक्षे ॥ परोक्ष स्वर्गादिकों की इच्छा का नाम आशा है, और अपरोक्ष राज्यादि सुखकी इच्छा का नाम प्रतीक्षा है ॥ देवताकी उपासनाजन्य जो फल है, उसका नाम संगत है, और प्रियभाषण से जो फल होता है, उसका नाम सूनृत है, और अग्निहोत्रादि यागजन्य जो फल है, उसका नाम इष्ट है, और वापी कूपादिकोंके बनवाने से जो फल होता है, उसका नाम पूर्त है, ॥ इन सबका और पुत्र और पशुओंका भी नाश उस अल्पबुद्धिवाले पुरुषके गृहमें होजाता है, जिसके द्वारपर अतिथि आकर भूखा रहजाता है, इसलिये हे यम ! आप शीघ्र जाकर प्रथम इस अतिथि ब्राह्मण का सत्कार करिये ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ९, पृष्ठ ७—

यमराज महाराज तुरन्त अतिथि ब्राह्मणके पास जाकर कहने लगे ॥ तिस्रोरात्रीर्यदिति ॥ हे ब्राह्मण ! आप तीन रात्री अन्नादिकों के बिनाही मेरे द्वारपर अतिथि होकर खड़े रहे इसलिये मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप मेरे अपराधको क्षमा करके तीन वर इच्छापूर्वक मांगिये, मैं बारंवार आपको नमस्कार करता हूँ, और जो कुछ मेरी अयोग्यता हो, उसको अपने अन्तःकरणसे दूर करिये, और आशीर्वाद दीजिये कि मेरा भद्र हो ॥ ९ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ८—

शांतसंकल्प इति—यमराज की आज्ञा सुनकर नचिकेता कहता है ॥

शान्तसंकरूपः ॥ हे मृत्यो महाराज ! आपके पास जानेसे मेरे पिता गौतमको जो ऐसी चिंता होरही है कि मेरे पुत्रकी यमके पास जानेसे क्या जाने कैसी अनिष्टदशा हुई होगी सो वह उनका संकरूप दूर होजावे, और प्रसन्न मन हों, और जो उनका क्रोध मेरे ऊपर हुआ था वहभी शान्त होजावे, और जब मैं आपका भेजा हुआ अपने घरकी सज्जें तब मेरे पिताको ऐसा मालूम हो कि यह वही मेरा पुत्र है, और पूर्ववत् मेरे में प्रीति करै, और यह प्रेत होकर यमराजके पाससे नहीं आया है, यह प्रथम वर तीनों वरोंमेंसे मांगता हूँ ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ६-

यथापुरस्तादिति—यमराज भगवान् कहते हैं हे नचिकेतः ! औदा-
लाकं ऋषि, तुम्हारा पिता है, जब तुम मेरे पाससे जावोगे, तब पूर्ववत् प्रीतियुक्त तुमसे मिलैगा, और ऐसा उसको विश्वास भी होगा कि यह वही मेरा पुत्र है, और मेरे प्रसाद से वह रात्री में सुखपूर्वक शयन करनेवालाभी होगा अर्थात् चिंतासे रहित होकर नींदभर सोवैगा और मृत्युके मुखसे छूटा हुआ तुमको देखकर क्रोधसे शांत होगा ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ १०-

स्वर्गलोक इति ॥ स्वर्गकी प्राप्तिका साधनभूत जो अग्नि है, तिसके पूछने की कामनावाला होकर प्रथम स्वर्ग के स्वरूपको नचिकेता पूछता है ॥ स्वर्गलोके ॥ स्वर्गलोक से यहांपर ब्रह्मलोक का ग्रहण है, ऐसे स्वर्गलोकमें जो रहते हैं, उनको रोगादिकों से जन्य किञ्चित् भी भय नहीं होता है, और न आप हे मृत्युभगवान् ! उस ब्रह्मलोक में रहकर किसीका नाश करते हैं, और न उस लोकमें जराअवस्थाका भय है, और क्षुधा पिपासा सताती है, इन सबको अतिक्रमण करके पुरुष उस लोक में आनन्द को भोगता है ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ११-

स त्वमग्निमिति—पूर्वोक्त गुणों करके युक्त स्वर्गसाधनभूत जो अग्नि है और जिसको आप जानते हैं उस विद्या को हे मृत्यो ! आप मुझ श्रद्धावान् नचिकेता के प्रति कहिये और तिसके अंग को भी मेरे प्रति कहिये और जिस अग्निविद्या करके कर्मी स्वर्गलोकमें जाकर अमर हो जाते हैं तिसको आप कृपा करके मुझे दीजिये यह दूसरा वर मैं मांगता हूँ ॥ १३ ॥

भावार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ११-१२-

प्रतेब्रवीमीति—नचिकेताकी प्रार्थना सुनकर भगवान् यमराज नचिकेता के प्रति अग्निविद्याका उपदेश करतेहैं ॥ प्रतेब्रवीमि ॥ हे नचिकेता ! स्वर्गका साधक जो अग्निविद्याहै उसको मैं जानता हूँ, उसको मैं कहताहूँ, अब तुम एकाग्र मन करके उस अग्निविद्या को मेरे से सुनो, वह अग्नि नाशसे रहित स्वर्गलोककी प्राप्तिका साधन है, वही विराटरूप जगत्की प्रतिष्ठा है, वही विद्वानों के हृदयरूपी गुहामें स्थित है, उसी करके कर्मी देवगतिको प्राप्त होते हैं ॥ १४ ॥

भावार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ १२-

लोकादिमिति—पृथिव्यादि लोकोंका सिद्ध करनेवाला प्रथम शरीर जो विराट् है, उसका साधक अग्नि है, तिसको नचिकेताके प्रति यमराजने कहा और हवनकुण्डमें जितनी ईंट लगती हैं उनके स्वरूप को और गिनती को भी यमने कहा, और कुण्ड बनाकर जिस प्रकार उसमें अग्नि स्थापन कीजाती है तिस विधि को भी यमने कहा, फिर नचिकेता से पूंछा कि हे नचिकेता ! तुमने मेरी उपदेश कीहुई विद्या को भली प्रकार जाना या नहीं, हे नचिकेता ! यदि तुम मुझ उपदेशकृत अग्निविद्या को समुझ गये हो तो कहो तब नचिकेताने कहा कि मैं सम्पूर्ण आप करके कहीहुई अग्निविद्या को जान लिया और यह

कह करके जिस रीति से यमने नचिकेताको प्रति अग्निविद्या कहा था उसी रीतिसे नचिकेताने यमराज को सुनादिया यमराज सुन करके बड़े प्रसन्न हुये और आगेवाले मन्त्रोंमें उसको एक और वर देने को कहा॥ १५॥

भावार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ १३-

तमब्रवीदिति-नचिकेता से उदारचित्त यमराज भगवान् कहते हैं हे नचिकेता ! हम तुम्हारी प्रज्ञा को देख तुमसे अति प्रसन्न हैं, तीन वर हमने तुमको देनेको कहा था, उनमें से दो वर हम तुमको दे चुके हैं, एक वर बाकी है, उसके सिवाय हम प्रसन्न होकर अपनी तरफ से तुमको चतुर्थ वर देते हैं, संसार में तुम्हारेही नामसे यह अग्निविद्या प्रसिद्ध होगी, अर्थात् सब लोक इसको नचिकेतसंज्ञक अग्नि कहेंगे, यह माला जो अनेक प्रकारकी हम तुम्हारे प्रति देते हैं, इसको तुम ग्रहण करो । नचिकेताने यमराज करके दी हुई मालाको ग्रहण किया ॥ १६ ॥

भावार्थ । मंत्र १७-१८, पृष्ठ १४-१५-

त्रिणाचिकेत इति-यमराज भगवान् अब नाचिकेतसंज्ञक अग्निविद्या के फल को कहते हैं । हे नचिकेता ! जो विद्वान् कुण्डके आकार का, उसमें लगेहुये ईंट को, उनके आकार और उनकी संख्या को जान कर त्रिणाचिकेत अग्नि को तीन बार स्थापन करके आत्मभावसे उसकी उपासना करता है वह मृत्युके पाशों से छूट जाता है अथवा अधर्म, अज्ञान और रागादि के पाशों से शरीरपात से पूर्वही उल्लङ्घन करके शोकरहित होकर आनन्दको प्राप्त होता है ॥ १७ । १८ ॥

भावार्थ । मंत्र १९, पृष्ठ १५-

एषतेऽग्निरिति-दूसरे वरके प्रकरण को अब समाप्त करते हैं ॥ एषतेऽग्निः ॥ यम कहते हैं हे नचिकेता ! यह स्वर्गका साधन-भूत अग्निविद्या को जो तुमने दूसरे वर करके मांगाथा मैंने तुम्हारे प्रति कहा,

यह अग्निविद्या संसारमें तुम्हारेही नाम करके लोक कथन करेंगे, अब तुम अपने तीसरे वरको मांगो ॥ १९ ॥

भावार्थ । मंत्र २०, पृष्ठ १६-

येयम्प्रेते इति-जो दो वर नचिकेताने यमराजसे पाये हैं, उनको अनित्य जानकर उनसे उपराम होकर और मुमुक्षु बनकर आत्माके याथा-त्म्यज्ञान को तीसरे वर करके नचिकेता मांगता है ॥ येयमिति ॥ हे महाराज ! जब संसार में प्राणधारी मनुष्य मरजाता है तब उस मृतक शरीर को देखकर कोई ऐसा कहता है कि देहादिसंघात से भिन्न लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा है सो इस शरीर में से चला गया और कोई ऐसा कहते हैं कि देहादि संघात से व्यतिरिक्त याने भिन्न होकर लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा नहीं है, वह इसी मृतक शरीर में मौजूद है इस प्रकार संदिग्ध जो आत्मतत्त्व है उसको मैं आप से जानना चाहता हूँ, आप मेरे गुरु हैं, इस तत्त्वज्ञान को तीसरे वर करके मैं आपसे मांगता हूँ ॥ २० ॥

भावार्थ । मंत्र २१, पृष्ठ १७-

देवैरत्रापीति-नचिकेता के तीसरे वरको सुनकर यमराज भगवान् नचिकेता की परीक्षा करते हैं, इस बात के जानने के लिये कि आया नचिकेता इस आत्मज्ञानरूपी तीसरे वरके योग्य है या नहीं, इसलिये प्रथम इस वरके बदले में और पदार्थोंका लोभ दिखाते हैं, ताकि वह लोभमें फँसकर आत्मविद्याको न चाहे, ॥ देवैरत्रापि ॥ हे नचिकेता ! देवतों को भी इस आत्मतत्त्व विषे संशयही है, वेभी यथार्थ नहीं जानते हैं, तब फिर मनुष्य तिस आत्मतत्त्वको कैसे निस्सन्देह जानेंगे, क्योंकि यह आत्मतत्त्व अतिदुर्विज्ञेय है, और जो सबका अधिष्ठान आत्मा है सो अतिसूक्ष्म है, इस वास्ते हे नचिकेता ! आत्मज्ञानसे अतिरिक्त और वरको तुम मांगो, इस वरके लेनेमें तुम हमसे हठ मत करो ॥ २१ ॥

भावार्थ । मंत्र २२, पृष्ठ १८-

देवैरत्रापीति—भगवान् यमकी बातोंको श्रवण करके अब नचिकेता कहता है, हे यम ! आप कहते हैं कि देवतों को भी इस आत्मतत्त्व बिषे संशय है, और फिर यह भी कहते हैं कि आत्मतत्त्व दुर्विज्ञेय है, इसलिये ऐसा मालूम होता है कि आत्मतत्त्वका वक्ता और द्रष्टा आपही हैं, आपसे अतिरिक्त और कोई दूसरा नहीं मुझको दिखाई देता है, और न इस वरके तुल्य और कोई वर मैं देखता हूँ, क्योंकि ब्रह्मात्मा से भिन्न सारा प्रपञ्च अनित्य है ॥ २२ ॥

भावार्थ । मंत्र २३, पृष्ठ १८-

शतायुष इति—यमराज नचिकेताके वैराग्यकी परीक्षामें प्रथम भोगोंको दिखाकरके उसको लोभायमान करते हैं ॥ शतायुषः ॥ हे नचिकेता ! सौ बरस जीनेवाले पुत्र और पौत्रोंको तुम मांगलो, बहुतसे हस्ती घोड़े आदिक पशुवोंको मांगलो, और स्वर्णको भी मांगलो, पृथिवीपर चक्रवर्ती राज्यको भी मांगलो, और जीनेकी इच्छापर्यन्त आयु मांगलो ॥ २३ ॥

भावार्थ । मंत्र २४, पृष्ठ १९-

एतत्तुल्यमिति—और ऊपर कहेहुये वस्तुके तुल्य और भी किसी वस्तुको तुम जानते हो उसको भी हमसे मांगलो, बड़े कीमती रत्नादिक को और चिरकाल आयुको मांगलो, और हे नचिकेता ! इस महान् भूमिका तू महाराजा हो और जिस पदार्थ की तुम्हारे में कामना हो उस पदार्थ को तुम मेरे आशीर्वाद से प्राप्त हो ॥ २४ ॥

भावार्थ । मंत्र २५, पृष्ठ २० ।

ये ये कामा इति—यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! इस लोकमें जो पदार्थ मनुष्योंको दुर्लभ हैं उन सबको इच्छापूर्वक मांगो, और जो स्वर्गीय पुरुषोंके भोगके लिये सुंदर २ अप्सरा हैं उनको भी तुम मांगो, और सुंदर २ रथोंको और अनेकप्रकार के बाजोंको भी तुम मांगो,

हे प्रियदर्शन ! अप्सरा मनुष्योंको दुर्लभ हैं, मुझ करके दीहुई अप्सराओं से तुम अपनी सेवा कराओ, और विषयानन्दको प्राप्त होवो, पर हे नचिकेता ! मरणसम्बन्धी वरको तुम मत मांगो, इस मेरी आज्ञाको उल्लङ्घन मत करो ॥ २५ ॥

भावार्थ । मंत्र २६, पृष्ठ २०-

श्वोभावा मर्त्यस्येति—यमराज महाराज जिन २ उत्तम भोगों की प्रशंसा करके नचिकेता को लोभाना चाहते थे उनको अनित्य जानकर उनमें जो दोष है उसको नचिकेता दिखाता है ॥ श्वोभावाः ॥ नचिकेता कहता है हे मृत्यो ! जिन भोगोंका आप हमको लोभ दिखाते हो वे सब क्षणभंगुर हैं, याने आज हैं कल नहीं, और जो अप्सरा आदिक हैं वे मनुष्य के इन्द्रियों के तेज को नाश करनेवाली हैं, धर्म, यश, प्रज्ञा आदिकों को नाश करके पुरुष का अनर्थ में डालनेवाली हैं, और मनुष्यकी जो आयु है वह भी अल्पही है, इसलिये ये सब अप्सरा आदिक भोग आपही के पास रहें, मैं इन नाशी भोगों को नहीं चाहता हूं ॥ २६ ॥

भावार्थ । मंत्र २७, पृष्ठ २१-

न विसेनेति—हे यम महाराज ! भोगोंके समुदाय करके कोई मनुष्य तृप्ति को नहीं प्राप्त होता है, और धनादिकोंकी प्राप्ति तो आपके दर्शन से ही होजायगी, इनके मांगनेकी कुछ आवश्यकता नहीं, और चिरकालतक जीना भी मुझको आप अपना शिष्य जान करके देंगे, इसके मांगनेकी कोई भी जरूरत नहीं, मैं अपना तीसरा वर जो आप से मांगा है वही लूंगा, आप कृपा करके वही वर दीजिये ॥ २७ ॥

भावार्थ । मंत्र २८, पृष्ठ २२-

अजीर्यतामिति—जिस पुरुषको उत्तम फलकी प्राप्ति होती हो तो उस उत्तम फलको त्याग करके निकृष्ट फलकी इच्छा करे तो वह मूर्ख है,

मैं अपने उत्तम फल को ही लेऊंगा ॥ अजीर्य्यताम् ॥ हे यम ! जरा मरण धर्मवाला जो मनुष्य है वह चिरकालस्थायी जो देवता हैं उनके समीप प्राप्त होकर और उनसे उत्तम फलकी प्राप्ति की इच्छा करके फिर कैसे निकृष्ट फलकी कामना करसक्ता है, मैं अपने उसी उत्तम वरको लेऊंगा जिसको कि मैंने मांगा है । मनुष्य जराआदिक दोषों से संयुक्त है और पृथिवीपर सुन्दर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करने से जो हर्ष होता है वह हर्ष दुःखरूप है उनमें और अतिदीर्घ आयु की कामना में कौन बुद्धिमान् पुरुष आसक्त होवैगा ॥ २८ ॥

भावार्थ । मंत्र २६, पृष्ठ २३-

यस्मिन्निति-नचिकेता कहता है, हे मृत्यो ! जिस आत्मतत्त्व प्रति देवता भी संशयको प्राप्त हैं, यानी शरीर से अतिरिक्त लोकान्तर, देशान्तर, जन्मान्तर विषे गमन करनेवाला कोई आत्मा है वा नहीं है, और जिसका निर्णय देवता भी नहीं करसक्ते हैं, तिस आत्मतत्त्वका निर्णय आप मेरे प्रति करिये, मैं जानता हूँ कि आत्माका ज्ञान गोप्य है, परन्तु मैं अपने इस गूढ़ वरको छोड़कर और किसी वरको नहीं चाहता हूँ और न लेऊंगा ॥ २९ ॥

इति कठोपनिषदि प्रथमावलिः ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र १, पृष्ठ २४-

जब यमराज ने नचिकेता की परीक्षा करके जाना कि वह आत्मविद्याका अधिकारी है तब विद्या और अविद्याका विभाग करके नचिकेता के प्रति आत्मविद्याको उपदेश करते हैं ॥ अन्यच्छ्रेय इति ॥ यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! मोक्षका हेतु जो विद्या है सो पृथक् है और विषय भोगका साधनकर्म पृथक् है, विद्या और कर्म यह दोनों भिन्न २ फलवाले होनेसे मोक्ष और विषय भोगका अर्थी जो पुरुष है तिसको

बन्धायमान करते हैं, उन दोनोंमें से जो श्रेय याने मोक्षका ग्रहण करने वाला है, उसको मोक्षरूपी नित्यफलकी प्राप्ति होती है, और जो अविद्यात्मक कर्मका ग्रहण करनेवाला है उसको निकृष्ट नाशी फल मिलता है और वह मोक्षसे गिरजाता है याने मोक्षको नहीं प्राप्त होता है ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ २४-

श्रेयश्चेति—(प्र०) जब पुरुषकेही आधीन मोक्ष और बन्धन के साधन हैं तब फिर क्यों नहीं पुरुष मोक्षकेही साधनों को करता है ॥ उ० ॥ मोक्ष और विषयभोग अर्थात् ब्रह्मविद्या और कर्मोंका भेदज्ञान लोगोंको नहीं है इसीलिये मोक्षके साधनों को लोक नहीं करते हैं, इसी वार्त्ताको मन्त्र भी कहता है ॥ श्रेयश्च प्रेयश्चेति ॥ श्रेय और प्रेय याने ब्रह्मविद्या और कर्म यह दोनों पुरुष को प्राप्त होने योग्य हैं, धीरपुरुष उन दोनों के फलको पृथक् २ करके देखता है, और विचार व अल्प परिश्रम करके साध्य महान् फलवाली जो आत्मविद्या है उसको ग्रहण करता है, और भारी परिश्रम करके साध्य अल्पनाशो फलवाला जो कर्म है, उसको त्यागता है जो अल्पबुद्धिवाला पुरुष है, वह योगक्षेम करके अविद्यारूपी कर्मोंका ही ग्रहण करता है ॥ २ ॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ २५-

स त्वमिति—यम कहते हैं हे नचिकेता ! तुम मोक्षके अधिकारी हो, तुमने पुत्रादिक और अप्सराआदिक जोकि प्रिय विषय हैं, उनको अनित्य और असार जानकर और उनमें दोषदृष्टि करके उनका त्याग किया है, यह तुम्हारी बड़ी बुद्धिमत्ता है, यह जो मूढ़जनोंकी प्रवृत्तिका विषयभूत धनादिक हैं, और जिसमें अनेक अज्ञानी पुरुष मग्न होते हैं, उन सबको तुमने त्याग किया है, तुम धन्य हो, धन्य हो ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ २६ ।

दूरमेत इति—विद्या और अविद्या के स्वरूप में और इन दोनों के

फलमें जो विरोध है उसको दिखलाते हैं ॥ दूरमेते ॥ यह जो वक्ष्यमाण विद्या और अविद्या हैं, सो दोनों स्वरूपसेही एक दूसरे के विरोधी और परस्पर बिलक्षण हैं, और भिन्न २ फलवाली भी हैं, कर्मरूप अविद्या विषयसुख का साधन है, और आत्मज्ञानरूप विद्या मोक्षका साधन है ॥ हे नचिकेता ! इन दोनों के मध्य विषे मैं तुमको विद्या अर्थात् मोक्षका अधिकारी मानता हूं ॥ क्योंकि अनेक प्रकार की जो कामना अप्सरा आदिक विषयभोग हैं उन सबको तुमने त्याग दिया ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ २६-

अविद्यामन्तर इति ॥ इसप्रकार मोक्षार्थी नचिकेता की स्तुति को करके यमराज अब शास्त्रविहित कर्मोंके अनुष्ठान करनेवाले अज्ञानियों की निंदा करते हैं ॥ अविद्यायामन्तरे ॥ अविद्या और अविद्याका कार्य्य जो कर्म है उसके अभिमानी जो अविवेकी मूढ़जन हैं, वे कहते हैं कि अलौकिक बुद्धिमान् हमहीं हैं, और अपने को ही शास्त्री पण्डित मानते हैं, और अपने तुल्य दूसरे किसीको भी नहीं मानते हैं, और अत्यन्त कुटिल मार्ग जो जरा मृत्यु रोग करके दूषित हैं तिसीकी वे इच्छा भी करते हैं, और इसीकारण वे अनेक प्रकारके अनर्थों कोही प्राप्त होते हैं, जैसे एक अन्धा दूसरे अन्धेको मार्ग दिखलाने केलिये ले जाता है, और आप भी गड्ढेमें गिरता है और दूसरेको भी गिराता है, तैसे वे पण्डित अभिमानी कर्मीभी हैं, आप तो अनर्थरूपी संसारको प्राप्त होते ही हैं औरों कोभी अपने साथ ले जाते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ २७-

नसांपराय इति-पूर्वोक्त मंत्र करके शास्त्रविहित कर्मों के करनेवालों की यमराज ने निंदा की है अब इस मन्त्र करके निषिद्धकर्मों के करने-वालों की भी यमराज निंदा करते हैं ॥ नेति ॥ सांपराय नाम परलोक का है, तिसकी प्राप्तिका साधन कर्म उपासना आदिक हैं, सो कर्म-

उपासना आदिक विवेक से शून्य पुरुषों को अच्छे नहीं लगते हैं, क्योंकि वे प्रमादी हैं, और न उनको कर्मउपासना का फल मिलता है, क्योंकि उनका चित्त स्त्री धनादिकों की प्राप्तिमें ही लगा रहता है, और धनके लोभसे उनके अन्तःकरण आच्छादित हैं, इसी वास्ते वे नास्तिक हैं, क्योंकि वह कहते हैं कि यह जो दृश्यमान स्त्री पुत्रादिकों करके युक्त लोक है वही सत्य है, जोकि दिखाई नहीं पड़ता है वह असत् है, यमराज भगवान् कहते हैं वे बार २ जन्मते मरते हैं, और पुनः २ मेरेही पास आते हैं, और मैंही उनको तुच्छयोनिमें डालकर शासना देताहूँ ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ २८—

श्रवणायापीति—यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! संसाररूपी चक्रमें भ्रमण करते जो अनेक पुरुष हैं उनमें से कोई बिरलाही तुम्हारे सदृश मोक्षका भागी होता है, क्योंकि आत्मतत्त्व बड़ा दुर्विज्ञेय है इसीवास्ते बहुत से पुरुषों को तो यह आत्मतत्त्व श्रवण करने को भी नहीं मिलता है, और बहुत से पुरुष नित्य श्रवण भी करते हैं तब भी नहीं जानसक्ते हैं, क्योंकि उनका अन्तःकरण मलीन है, यमराज कहते हैं जैसे इस आत्मा का श्रोता दुर्बल है तैसेही इसका वक्ताभी दुर्लभ है, इस आत्माको श्रवण करके भी जानना कठिन है, जिसने आत्माका साक्षात्कार कर लिया है, ऐसा ब्रह्मवित् आचार्य कोई बिरलाही संसार में होता है ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ २८—

न नरेणेति—आत्माके वक्ता और ज्ञाताकी दुर्लभता में जो कारण है उसको कहते हैं । जिसने आप अपने आत्माका साक्षात्कार नहीं किया है उस बलहीनका कहा हुआ यह आत्मा सम्यक् ज्ञात नहा होता है, क्योंकि बहुत प्रकार के वादियों का जो विवाद है वही आत्मा के जानने में हानि है, कोई कहता है आत्मा है, कोई कहता नहीं है, कोई

उसको कर्ता कहता है, कोई अकर्ता कहता है, कोई शुद्ध कोई अशुद्ध बताता है, इसप्रकार बहुत तरहके विवाद हैं, जिसके कारण आत्मा यथार्थ ज्ञात नहीं होता है ॥ प्र० ॥ तब फिर किस करके कहा हुआ आत्मा सुष्ठुज्ञात होता है ? ॥ उ० ॥ अनन्यप्रोक्तेति ॥ मैं ब्रह्मसे भिन्न नहीं हूं और न मेरेसे ब्रह्म भिन्न है इसप्रकार के ज्ञानवान् आचार्य के उपदेश से जो आत्मज्ञान है वह संशयात्मक और विपर्ययात्मक नहीं होता है, यह आत्मा अतिसूक्ष्म है, इसलिये विना आत्मवित् आचार्य के उपदेश से केवल तर्क करके प्राप्त होने योग्य नहीं ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ २६-

(नैषेति—(प्र०) स्वबुद्धि करके भी कोई एक तर्ककुशल पुरुष आत्मा को जानलेगा आचार्य की क्या आवश्यकता है ॥ उ० ॥ नैषा तर्केण ॥ यह जो आत्मविषयिणी बुद्धि है सो तर्क करके अर्थात् अपनी कल्पनामात्र करके प्राप्त होने के योग्य नहीं है । हे प्रेष्ठ ! हे प्रियतम ! नास्तिकसे भिन्न जो आस्तिक है उसीके उपदेश से यह आत्मज्ञान आत्मा के साक्षात्कार होनेका हेतु होता है । हे नचिकेता ! मेरी ऐसी इच्छा होती है कि जैसे तुम कुशल प्रश्नकर्ता हो, ऐसा दूसरा भी मिले, तुम सत्यधृति हो, अर्थात् अपनी धीरतासे, चलायमान न होनेवाले केवल एक तुमहीं हो, तुम्हारे ऐसे प्रश्नका करता मैंने दूसरा कोई नहीं देखा है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ३०-

जानाम्यहमिति—यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! कर्मोंका फलरूप जो निधि है वह अनित्य है, और ज्ञानसे उत्पन्न जो मोक्षरूपी फल है वह नित्य है, यह मोक्षफल अनित्य साधनों याने कर्मों करके प्राप्त नहीं होता है, कर्मों का अनित्यफल द्रव्य पशु आदिक हैं, उन्हीं

करके चयन करी हुई स्वर्गसुखसाधक अग्नि है, तिसी करके मैं चिर-स्थायी यमपदवी को प्राप्त हुआ हूँ, सोभी अनित्यही है ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ३१-

कामस्येति-यम कहते हैं हे नचिकेता ! संपूर्ण कामनाओं की अवधिको और चराचरात्मक जगत् का आधार जो हिरण्यगर्भ है उसकी यज्ञके अनन्तफलको स्वर्ग की प्राप्ति के तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त होने योग्य भारी गति को प्रतिष्ठा को देख करके धीरता त्याग करता भया तू धन्य है तेरे बराबर संसार में कोई नहीं है तू ब्रह्मविद्या के योग्य है ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ ३१-

तं दुर्दर्शमिति-यमराज भगवान् अब नचिकेता के प्रति आ-मलाभ के साधनों को और उनके फलको दिखलाते हैं ॥ तं दुर्दर्शमिति ॥ हे नचिकेता ! जिस आत्मा के जानने की इच्छा करके तुम मुझसे पूछते हो सो वह आत्मा अध्यात्मयोग करके अधिगम्य है अर्थात् चित्त की एकाग्रता करके ही जाना जाता है, और उसको मनके निरोधद्वारा साक्षात्कार करके बुद्धिमान् पुरुष हर्ष शोक से रहित हो जाता है, वह आत्मा असमाहित चित्तवाले पुरुषों करके प्राप्त होने को अशक्य है, माया के काय्यों करके आवृत है, कार्य्य कारण समुदायकों को रच करके उसमेंही व्यापक होकर स्थित है, और जीवों के बुद्धिरूपी गुहा-विषे स्थित है, और सनातन है ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ३२-

एतच्छ्रुत्वेति-मूलके सहित संसार का नाशक जो तत्त्वज्ञान है तिसको दिखला करके अब आनन्द की प्राप्ति के साधन को कहते हैं ॥ एतच्छ्रुत्वा ॥ इस धर्म से प्राप्य सूक्ष्म आत्मतत्त्व को गुरुमुख से श्रवण करके, मनन करके, निदिध्यासन करके और साक्षात्कार करके विद्वान्

हर्षको प्राप्त होता है, हे नचिकेता ! इसप्रकार के आत्मारूपी मन्दिर में तुम प्रवेश होने के योग्य हो ॥ १३ ॥

भाषार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ३३-

अन्यत्रेति-नचिकेता यमराज से पूछता है ॥ अन्यत्रधर्मात् ॥ हे महाराज ! फल और कारक के सहित यज्ञादिरूप जो धर्म है उससे भी जो पृथक् है, और शास्त्रअहित जो हिंसादिरूप अधर्म है, उससे भी जो पृथक् है और हमारी बुद्धि का विषय जो कृत्य अकृत्य है अर्थात् कार्यकारण है उससे भी जो पृथक् है, और भूत भविष्यत् वर्तमान जो तीनकाल हैं उससे भी जो पृथक् है, उस वस्तुको, यदि आप जानते हों, तो मुझसे कृपा करके मेरे प्रति कहिये ॥ १४ ॥

भाषार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ ३३-

सर्वे वेदा इति-साधनों से विना तत्त्वज्ञानका होना असंभव है, इसलिये नचिकेता के प्रति प्रथम यमराज आत्मज्ञान के साधनों को कहते हैं ॥ सर्वे वेदाः ॥ सम्पूर्ण वेदान्त जिस आत्मपद को प्रतिपादन करते हैं और सम्पूर्ण तपरूप कर्म चित्तकी शुद्धिद्वारा जिस पदको प्रतिपादन करते हैं और जिस पदकी प्राप्ति की इच्छा करके मुमुक्षुजन ब्रह्मचर्य्य को धारण करते हैं, उस आत्मपदको मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ ॥ हे नचिकेता ! ॐमित्येतत् ॥ ॐ यह जो अक्षर है सोई ब्रह्मका वाचक है, और सोई ब्रह्मका प्रतीक भी है, इसीलिये यही ब्रह्म है ॥ समाहित चित्तवालों को ॐकार के उच्चारण करने से साक्षीचेतनका ज्ञान होता है, इसलिये यही ब्रह्म है, इसही ॐकार को आश्रय करके ' ब्रह्माहमस्मि ' मैं ही ब्रह्म हूँ ऐसा चिन्तन करे, या इसमें ही ब्रह्मदृष्टि करे ॥ १५ ॥

भाषार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ ३४-

एतादिति-आत्मज्ञानका साधनभूत जो प्रणव की उपासना है तिसको कहकर अब ॐकार अक्षर की स्तुति और फल को कहते हैं ।

यह जा प्रणवरूप- अक्षर है, वही ब्रह्मरूप है, इसी को पर अपररूप ब्रह्म जान करके और ध्यान करके उपासक पर अपररूप ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है, अर्थात् उपासक यदि परब्रह्मरूप होनेकी इच्छाको करता है तो वह परब्रह्म होता है, यदि अपर ब्रह्म जो हिरण्यगर्भ है उसकी प्राप्ति की इच्छा करता है तो हिरण्यगर्भभाव को प्राप्त होता है अर्थात् जब निर्गुणब्रह्म की उपासना अंकार अक्षर करके करता है तो वह निर्गुण ब्रह्म होजाता है और जब सगुण ब्रह्म की उपासना अंकार अक्षर करके करता है तो सगुण ब्रह्म होजाता है ॥ १६ ॥

भावार्थ । मंत्र १७, पृष्ठ ३५-

एतदालम्बनमिति-एतत् ॥ यह जो अंकाररूप अक्षर है सोई आलम्बन करने के योग्य है ॥ और ब्रह्मके ध्यान का उपकारी जो गायत्री आदिक वेद के मन्त्र हैं, उनसे भी यह श्रेष्ठ है, यह अंकारही परब्रह्मके ध्यान का उपकारी है, परब्रह्मकी प्राप्ति इसी के आलंबन करने से होती है, इसी अंकार अक्षरकी उपासना करके ब्रह्मलोक में उपासक महिमा को प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

भावार्थ । मंत्र १८, पृष्ठ ३५-

न जायतइति-मन्द और मध्यम अधिकारीके भेद करके दो प्रकार की उपासना को यमने नचिकेता के प्रति पूर्व कहा, अब उत्तम अधिकारी के प्रति निरुपाधिक आत्मतत्त्व को नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नजायते म्रियते वा ॥ विपरिचतः ॥ चैतन्य नित्य स्वरूप आत्मा न जन्मता है, और न मरता है, और न नाशको प्राप्त होता है ॥ नायं बभूव ॥ यह आत्मा किसी कारण से भी उत्पन्न नहीं हुआ है, क्योंकि इसका कोई कारण नहीं है, सबका कारण यह आपही है, और शरीरादिक कार्योंके नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता है, इसीलिये आत्मा अज है, नित्य है, शाश्वत है, और बुद्धिबुद्धि से रहित है ॥ १८ ॥

भावार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ ३६-

हन्तेति-यदि हन्ता हनन क्रिया का कर्त्ता आत्मा को मानता है, या हननक्रिया का कर्म आत्मा को मानता है, तो ये दोनों आत्माको नहीं जानते हैं, क्योंकि आत्मा न किसीको मारता है, और न हनन-क्रिया का कर्म होता है, जितने धर्माऽधर्मादिक हैं सब आत्मा के अज्ञान करकेही होते हैं, आत्मा के ज्ञान करके इनकी निवृत्ति हो-जाती है ॥ १६ ॥

भावार्थ । मंत्र २०, पृष्ठ ३६-

अणोरणीयान्, महतोमहीयान्-अति सूक्ष्म जो मनादिक हैं उनसे भी सूक्ष्म है, और नैयायिकोंने जो महत् परिमाणवाले आकाशादिक माने हैं उनसे भी अति बड़ा है, इसी कारण आत्माका नाश नहीं होता है और ब्रह्मा से लेकर जितने प्राणी हैं उन सबकी बुद्धिरूपी गुहामें स्थित है, तिस आत्मा को निष्काम शोकरहित पुरुष मनआदि कारणों की प्रसन्नता याने शुद्धता से अपने आपे में देखता है ॥ २० ॥

भावार्थ । मंत्र २१, पृष्ठ ३७-

आसीनइति-आसीनः ॥ जाग्रत् और स्वप्न में मन आदिकों को व्यापारों के साथ आत्मा साक्षिरूप से स्थित हुआ दूर देश को गमन कर जाता है अर्थात् मन आदिकों में प्रतिबिम्ब रूप होकर उनके साथ दूर देश को गमन करता हुआ प्रतीत होता है, वास्तव से वह गमन नहीं करता है, क्योंकि वह सर्वत्र पूर्ण है और जब कारण जो इन्द्रियां हैं उनके उपरम होने से विशेष ज्ञान का अभाव होजाता है, तब सुषुप्त अवस्था कही जाती है और तब सामान्य ज्ञानवाला आत्मा कहा जाता है और वही बुद्धि आदिक संघात के साथ तादात्म्याध्यास होने के कारण धनादि प्रयुक्त मदवाला कहा जाता है, वास्तव से तो

वह मदरहित है, यमराज कहते हैं ऐसे प्रकाशस्वरूप आत्मा को मुक्त विवेकी पुरुष से भिन्न दूसरा कौन जानने को समर्थ होसक्ता है ॥ २१ ॥

भावार्थ । मंत्र २२, पृष्ठ ३८-

अशरीरमिति—अब आत्मज्ञान के फल को कहते हैं, हे नचिकेता ! अनित्य जो संपूर्ण शरीर हैं उनमें साक्षीरूप होकर नित्य-आत्मा स्थित है, और आप स्थूल सूक्ष्मकारण तीनों शरीरों से रहित हैं, सबसे महान् भी है और सर्वत्र व्यापक है, इसप्रकार आत्मा को अपने भीतर ब्रह्म से अभिन्न जानकर विवेकी पुरुष शोक को प्राप्त नहीं होता है, अर्थात् अकर्तृत्वादिरूप बन्धसे रहित होकर अपने में स्थित होजाता है ॥ २२ ॥

भावार्थ । मंत्र २३, पृष्ठ ३८-

नायमिति—यम महाराज कहते हैं कि यह आत्मा वेदों के अध्ययन करके भी लभ्य नहीं है, याने जाना नहीं जाता है, और न ग्रन्थों के धारण करनेवाली शक्ति से जाना जाता है, और न अनेक शास्त्रों के श्रवण करने से (प्र०) फिर किस साधन करके आत्मा का लाभ होता है (उ०) जो मुमुक्षु अपने आत्मा को श्रवण मननादिकों करके चिन्तन करता है, उसीको वह प्राप्त होता है, उसी मुमुक्षु को दृढाकाश में यह आत्मा अपने आनन्दस्वरूप को प्रकाश करता है ॥ २३ ॥

भावार्थ । मंत्र २४, पृष्ठ ३९-

नाविरत इति—शमदमादि साधनों करके ही आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, शमदमादि साधनों के विना नहीं होती है, इसी को इस मन्त्र में यमराज नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नाविरतः ॥ हे नचिकेता ! जो पुरुष भोगों में अशान्त है याने जिसका मन विषय भोगों से शान्त नहीं हुआ है और जो विक्षिप्त चित्त होता हुआ समाधि के फलअणिमादि सिद्धियों की इच्छा करनेवाला है वह आत्मज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं होता है ॥ पर जो विषयभोगों से तिष्ठत होकर शान्त हुआ

है और समाहित चित्तवाला है और अग्निमादि सिद्धियों की जिसको इच्छा नहीं है वही ब्रह्मवित् आचार्य्य के उपदेश से आत्मज्ञान को प्राप्त होता है ॥ २४ ॥

भाषार्थ । मंत्र २५, पृष्ठ ४०—

यस्येति—हे नचिकेता ! जिस तमःप्रधान मायोपाधि ईश्वर के ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों अर्थात् चराचरात्मक सम्पूर्ण जगत् भात हैं, और लोकनाशक मृत्यु साग-दाल है, तिस शुद्धस्वरूप ईश्वर को भली-प्रकार जानता हूं, दूसरा मेरे से समान नहीं है, अब सावधान होकर मेरे अमृतरूपी वचनों को सुनो ॥ २५ ॥

इति कठोपनिषदि द्वितीयावलिः ॥ २ ॥

भाषार्थ । मंत्र १, पृष्ठ ४१—

ऋतं पिबन्तौ—पूर्व कथनकृत विद्या अविद्या-के स्वरूप के साधनों को और उनके फलको निरूपण करते हैं ॥ ऋतं पिबन्तौ ॥ पूर्वजन्मों में किये जो सुकृत असुकृत कर्म हैं, उनके फलको अवश्य ही भोगना पड़ता है, जीव और ईश्वर दोनों इस शरीर के उत्कृष्ट हृद्याकाश के अन्तर बुद्धिरूपी गुहा बिषे छाया धूपकी तरह याने विलक्षण धर्मको धारते हुये स्थित हैं, जीव कर्मों के फल का भोक्ता है, और ईश्वर उसका साक्षी अभोक्ता है, इस अलौकिक ज्ञान को वही प्राप्त होते हैं जिन्होंने नाचिकेत संज्ञक पञ्चअग्नि याने दाक्षिणात्य, गार्हस्थ्य, आहवनीय, सभ्य और आवध्य को स्थापन किया है, चाहे वे ब्रह्मज्ञानी हों चाहे गृहस्थी हों, इस प्रकार ब्रह्मवित् लोक कथन करते हैं । हे नचिकेता ! तुम इस वल्ली में मन लगाकर श्रवण करो, अवश्य अपने इच्छित पद को प्राप्त होगे और भी पुरुष इस तुम्हारे मेरे संवाद को श्रवण मनन करके अपने शुद्ध मनोरथ को प्राप्त होंगे ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ ४१-

यइति—जो नाचिकेत संज्ञक विराट् अग्नि को स्थापना करते हैं, वही कर्मी कहे जाते हैं, उन कर्मियों के लिये यह अग्नि दुःखरूप संसार से तारने का सेतु है, ऐसे नाचिकेत संज्ञक अग्नि के जानने और चयन करने को मैंहीं समर्थ हूं, और संसाररूपी समुद्र का पार जो मोक्षपद है, और ब्रह्मवेत्तों के प्राप्त होने योग्य जो परब्रह्म है, और जिसका नाम अक्षर है, अर्थात् जो कभी भी नाशको प्राप्त नहीं होता है, और जो षट्भाव विकार से रहित अपना आत्मा है, उसको मैंहीं जानने को समर्थ हूं, मेरे करके ज्ञात जो परब्रह्म है, उसी को परम्परा करके और भी ज्ञानीलोग जानकर मोक्ष को प्राप्त होजाते हैं । हे नचिकेता ! मुझ ऐसे आचार्य से उपदेशित हुआ तू अवश्य अपने स्वरूप में स्थित होता हुआ शान्ति को प्राप्त होगा ॥ २ ॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ ४२-

आत्मानमिति—हे नचिकेता ! आत्मानं ॥ त्वं पदका अर्थ जी जीवात्मा है उसको तुम रथका स्वामी जानो, वह जीवात्मा शरीररूपी रथ करके ही संसार और मोक्षमार्ग में गमन करता है, हे नचिकेता ! शरीरको तुम गमन करने का साधनरूप रथ जानो, बुद्धि को शरीररूपी रथ का चलानेवाला सारथी जानो, और संकल्प विकल्पात्मक जो मन है, उसको तुम घोड़ों के चलाने का लगाम जानो ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ ४२-

इन्द्रियाणीति—हे नचिकेता ! चक्षुरादिक जो बाह्यविषयों के ज्ञान के कारण हैं, वे ही शरीररूपी रथ के ले जानेवाले घोड़े हैं, उन इन्द्रियरूपी घोड़ों के चलाने के मार्ग रूपादिक विषय हैं, और जीवात्मा सहित इन्द्रियों और मनके सुख दुःख का भोक्ता है ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ ४३-

यइति—जिसका बुद्धिरूपी सारथी अविज्ञानवाला होता है अर्थात् मन के निग्रहद्वारा इन्द्रियों को बाह्यविषयों की तरफ से हटाने के जो साधन कहे हैं उन करके शून्य होता है, और सर्वदा काल लगामरूपी मनको अपने वश नहीं कर सकता है, उसके इन्द्रियरूपी अशिक्षित घोड़े उसके शरीररूपी रथ के सहित जीवात्मा स्वामी को अनेक दुष्टयोनि-रूपी गड्ढों में गिरा देते हैं, जैसे मूर्ख सारथी अपने घोड़ों को सुमार्ग में चलाने को असमर्थ होता है, और वे दुष्ट घोड़े उसके रथको कंट-कादि दुर्गमस्थान में गिरा देते हैं, और रथ टूटफूट जाता है और रथी दुःख उठाता है ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ४४-

यस्त्विति—जिस पुरुष का बुद्धिरूपी सारथी विज्ञानयुक्त है अर्थात् मन के निग्रहद्वारा इन्द्रियों को बाह्यविषयों की तरफ से हटाने के जो साधन हैं उन साधनों करके जिसकी बुद्धि ज्ञानसम्पन्न निश्चल शान्त होगई है, उसी के वशवर्ती सब इन्द्रियां होती हैं, जैसे स्वाधीन सुशिक्षित घोड़ों करके चतुर सारथी रथ के स्वामी को सुमार्ग में लेचलकर उसके धामपर पहुँचा देता है, तैसे ही बुद्धि विज्ञानयुक्त अपने स्वामी जीव-आत्मा शरीरारूढ़ को निगृहीत मन आदिक इन्द्रियरूपी घोड़ों करके उसके परमधाम को पहुँचा देता है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ ४४-

यस्त्वविज्ञानवानिति—जो इस शरीररूपी रथ का स्वामी जीव विज्ञान से रहित है, और अनिरुद्ध मनवाला है, अर्थात् जिसका मन अपने वशवर्ती नहीं है, किंतु सदैवकाल विषयों की वासना करके अपवित्र रहता है, और इन्द्रियां जिसकी यथेष्टाचरण को करती हैं, वह आत्म-पद को नहीं प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ ४५-

यस्तु विज्ञानवानिति-जिस विवेकी पुरुष रथी का जो सुशिक्षित बुद्धि-रूपी सारथी है, और जिसने अपने मन को निगृहीत किया है, और जो सर्वदाकाल विषयवासना से रहित शुद्धचित्तवाला है, वही ब्रह्मपद को प्राप्त होता है, और फिर जन्म मरणरूपी संसार में नहीं आता है ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ९, पृष्ठ ४५-

विज्ञानसारथिरिति-जिस पुरुष रथी की विवेकवती बुद्धि और मन वशवर्ती है, वह विद्वान् पुरुष संसारसमुद्र से पार होकर मुक्त होजाता है, और जो संसार का पार स्थान है, वही व्यापकरूप ब्रह्म का स्वरूप है, वही विष्णुका परमपद है ॥ ९ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ४६-

इन्द्रियेभ्य इति-इन्द्रियेभ्यः ॥ श्रोत्रादि पांच ज्ञानेन्द्रियों से उत्कृष्ट शब्दादिक विषय हैं, क्योंकि इन्द्रियों की प्रवृत्ति विषयों के आधीन ही होती है, तात्पर्य यह है कि स्थूल शरीर से सूक्ष्म इन्द्रियां हैं, और इन्द्रियों से सूक्ष्म विषय हैं, और विषयों से भी सूक्ष्म मन है, क्योंकि मन ही विषयों का ग्राहक है, और संकल्प विकल्परूपी मन से भी सूक्ष्म बुद्धि है, क्योंकि मनका व्यापार भी बुद्धि के ही आधीन है, और अस्मदादि-व्यष्टिबुद्धि से सूक्ष्म समष्टिबुद्धि हिरण्यगर्भ अथवा महत्तत्त्व है ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ४७-

महत इति-और समष्टिबुद्धि से भी उत्कृष्ट अव्यक्त है, क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत् का कारण है, और तिस अव्यक्त से सर्वत्र पूर्ण जो पुरुष है वह सूक्ष्म है, क्योंकि वह पुरुष अथवा आत्मा संपूर्ण जडवर्ग का प्रकाशक है, और स्वयं प्रकाशरूप सर्वत्र परिपूर्ण है, उससे सूक्ष्म कोई भी वस्तु नहीं है, वही सबकी अवधि है और वही परमगति है ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ ४७-

एषइति—यह जो इन्द्रिय आदिकों से परे आत्मा कहा है, सोई ब्रह्मा से लेकर स्तंब पर्यंत प्राणियों में अविद्या करके आच्छादित है, इसीलिये तिसका प्रकाश सबको प्रतीत नहीं होता है ॥ प्र० ॥ पूर्व कहा है कि आत्मा को शोकरहित पुरुष देखता है, और अब कहते हैं कि किसी को भी उसका प्रकाश नहीं होता है, एकही उपनिषद् में परस्पर विरोधी दो बातें क्यों कही हैं ॥ उ० ॥ चित्त की शुद्धि और अशुद्धि के कारण दो प्रकार के अधिकारी पुरुष होते हैं, दोनों में जो कि शुद्धचित्तवाले हैं याने जिनकी बुद्धि साधनों करके और विचार करके शुद्ध होगई है, उन सूक्ष्मदर्शियों के हृदय में वह आत्मा साक्षात्कार सूर्यवत् भासने लगता है, और जिनकी बुद्धि मलिन है उनके हृदय में आत्मा का प्रकाश नहीं होता है ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ४८-

यच्छेद्वाङ्मनसीति—बुद्धि की एकाग्रता के बिना सूक्ष्म आत्मा का भान नहीं होता है, इसलिये बुद्धि के एकाग्र करने को कहते हैं ॥ यच्छेत् ॥ आत्मजिज्ञासु पुरुष प्रथम वागादिक इन्द्रियों को मन में लय करे, अर्थात् मन के व्यापार से भिन्न इन्द्रियों के व्यापार का अभाव कर देवे, फिर तिस मन को निश्चल बुद्धि में लय करे, याने बुद्धि के व्यापार से भिन्न मन के व्यापार का अभाव कर देवे, फिर तिस व्यष्टि बुद्धि को समष्टि बुद्धि में लय करे, अर्थात् समष्टि बुद्धिसे भिन्न व्यष्टि बुद्धि नहीं है, ऐसा चिन्तन करे, फिर तिस समष्टि बुद्धि को निर्विकार प्रत्यगात्मा में लय करे, आत्मा से अतिरिक्त जोकि समष्टि बुद्धि है उसका अभाव कर देवे, ऐसा चिन्तन करने से आत्मा से भिन्न सब कल्पित पदार्थ मिथ्या प्रतीत होने लगते हैं, तब ही नञ्चिक्तेता । वह पुरुष महान् आनन्द में मग्न होजाता है ॥ १३ ॥

भावार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ४८-

उत्तिष्ठेति-योगाभ्यास द्वारा चित्त की एकाग्रता को करके आत्मा में समष्टि बुद्धि का लय करना जिस अधिकारी के प्रति श्रुति ने कहा है उसी अधिकारी के प्रति आत्मज्ञान में यत्न करने को श्रुति कहती है ॥ उत्तिष्ठेति ॥ हे साधन सम्पन्न अधिकारी पुरुषो ! उठो, आत्मज्ञान के लिये यत्न करो, अज्ञानरूपी निद्रा से जागो, ब्रह्मवित् आचार्य के उपदेश को श्रवण करके आत्मज्ञान को प्राप्त हो, उन्हीं करके उपदेश किये हुये आत्मतत्त्व को जानो, और निश्चय करो, यह आत्मतत्त्व सब पुरुषों को प्राप्त होने योग्य नहीं है, यह आत्मज्ञान अतिशय करके कठिन है, और जैसे उस्तरे की तेज धारपर चलना अति कठिन है इसी तरह आत्मज्ञान का मार्ग भी अति कठिन है, उसपर चलना इस मार्ग से बड़े बड़े पण्डित भी भयभीत होते हैं ॥ १४ ॥

भावार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ ४८-

अशब्दमिति-प्र० ॥ आत्मज्ञान की प्राप्ति अति कठिन क्यों है ॥ उ० ॥ अशब्दं ॥ जो ब्रह्म शब्द रहित है, स्पर्श रहित है, रूप रहित है, नाश रहित है, रस रहित है, गन्ध रहित है, नित्य है, आदि रहित है, अन्त रहित है, महत्तत्त्व से परे है, अचल है, उसको जो पुरुष जानता है, वह मृत्युके मुख से छूट जाता है, याने जब मुमुक्षु माया और मायाके कार्य को गुणयुक्त नाशी पाता है, और ब्रह्म को उन सब का अधिष्ठान होते हुये भी उनसे विलक्षण पाता है, तब वह जीवन मुक्त होकर शरीरत्याग पश्चात् आवागमन से रहित होजाता है ॥ १५ ॥

भावार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ ५०-

नाचिकेतमिति-पूर्वोक्तज्ञान की स्तुति को श्रुति करती है ॥ नाचिकेतम् ॥ मृत्यु करके कथन किया हुआ जो आत्मज्ञान है, वह चिरकालस्थायी है, जिस ज्ञान को उपनिषद् की तीन वल्लियों करके मृत्यु ने

नचिकेता के प्रति कहा है, उस ज्ञान को जो आप आचार्य द्वारा श्रवण करके ब्राह्मणादि तीनों वर्णों को सुनाता है, वह ब्रह्मलोक में जाकर महान् महिमा को प्राप्त होकर ब्रह्मा की तरह पूज्य होजाता है ॥ १६ ॥

भावार्थ । मंत्र १७, पृष्ठ ५०-

यइममिति-प्रथम अध्याय की अब समाप्ति को करते हैं ॥ यइति ॥ जो पुरुष पवित्र होकर यत्न से इस परमउत्कृष्ट और गोपनीय उपनिषद् को ब्राह्मणों की सभा में पढ़कर सुनाता है और उसके अर्थ को समझाता है या श्राद्धकाल में जब ब्राह्मण भोजन करने लगते हैं तब सुनाता है तो उसको अनन्त फल प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

इति कठोपनिषदि तृतीयावलिः ॥ ३ ॥

अध्याय २

भावार्थ । मंत्र १, पृष्ठ ५१-

पूर्वले अध्याय में संक्षेप से जिस ब्रह्मका लक्षण कहा है, अब इस अध्याय में विस्तार करके तिसी ब्रह्म के लक्षण को कहते हैं ॥ परांचीति ॥ स्वयंभूः ॥ स्वतन्त्र जो परमेश्वर है, उसने इन्द्रियों को बाह्यशब्दादिक विषयों के प्रकाश करने में सामर्थ्यवाला रचा है और जिस कारण परमेश्वर ने इन्द्रियों को बाह्यमुख रचा है, इसी कारण इन्द्रियां बाह्यविषयों की तरफ ही दौड़ती हैं, और सम्पूर्ण प्राणी इन्द्रियों द्वारा बाह्यविषयों को ही देखते हैं, अन्तर्यामी प्रत्यगात्मा को नहीं देखते हैं, जो कोई एक विवेकी पुरुष है, वह विषयों की तरफ से चक्षुको हटा कर अन्तरात्मा को देखता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ ५२-

पराचइति-आत्मदर्शी को संसार की निवृत्ति और आत्मादर्शी को संसार की प्राप्ति अब इस मन्त्र करके कहते हैं ॥ पराचः ॥ जो कोई

अल्प बुद्धिवाला है, अर्थात् बालवत् मूढ़ अज्ञानी है, वह दृष्टाऽदृष्ट विषयों की तरफ ही दौड़ता है, अर्थात् पूर्वोक्त इन्द्रियों करके वह विषयों को ही अनुभव करता है, और यमराज की विस्तृत नाना प्रकार की पाशों में बार २ फँसता है, बार २ जन्म मरण को प्राप्त होता है, अज्ञान की ऐसी दुर्दशा को देखकर विवेकी पुरुष अपने अमररूप आत्मा को जानकर ब्रह्म और नित्यानन्द को अनुभवकर अनित्य संसारी भोगों से लेकर ब्रह्मलोक के भोगोंपर्यंत की इच्छा नहीं करता है ॥ २ ॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ ५२-

येनेति ॥ जिस अपरोक्ष साक्षीरूप आत्मा करके नीलपीतादिरूपों को, और मधुराम्लादिक रसों को, सुर भी असुर भी आदिक गन्धों को, ध्वन्यात्मिक वर्णात्मिक शब्दों को, शीत उष्णादिक स्पर्शों को, और स्त्रीसंसर्गजन्य सुखविशेष को, पुरुष अनुभव करता है, सोई धर्माऽधर्मादिकों से अतीत तत्त्वरूप ब्रह्म है, वही आत्मतत्त्व है। हे नचिकेता ! वह वही है जिसके प्रति तुमने पूंछा था ॥ प्र० ॥ सब लोक तो इन्द्रियादिकों करके ही रूपादिकों को जानते हैं, और ऐसा तो कोई नहीं कहता है कि साक्षी चेतन करके इस वस्तु को मैं जानता हूँ ॥ उ० ॥ इन्द्रिय आदिक सब जड़ हैं, उनमें रूपादिकों के जानने की सामर्थ्य नहीं है, उनसे अतिरिक्त दूसरा कोई चेतन आत्मा साक्षी सबका जानने-वाला अवश्य है, और जिसकी सत्ता से देह इन्द्रियादिक सब अपने २ व्यवहार को करते हैं वह देहादिकों से भिन्न है, जो अपने आत्मा को ब्रह्म करके जानता है उसको इसलोक में कुछ भी बाकी जानने योग्य वस्तु नहीं रहती है ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ ५३-

स्वप्नान्तमिति ॥ आत्मतत्त्व को अतिसूक्ष्म होने से दुर्विज्ञेय जानकर फिर भी यमराज उसी आत्मतत्त्व को प्रकारान्तर करके कहते हैं ॥

स्वप्नान्तमिति ॥ स्वप्नकाल के पदार्थ और जाग्रत्काल के पदार्थ जिस साक्षी चेतन करके जाने जाते हैं, और जो महान् व्यापक चेतन शरीरों में नानारूप करके स्थित है, और सम्पूर्ण कल्पना का अधिष्ठानभूत है, उसको जो कोई पुरुष अपना आत्मा जानकर साक्षात् हस्तानुमलकवत् करता है वह शोच को नहीं प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ ५४-

यइममिति ॥ जीव और ईश्वर के भेद को दूर करते हुये फिर भी यमराज आत्मतत्त्व का उपदेश करते हैं ॥ यइति ॥ जो कोई इस कर्मफल का भोक्ता समीपवर्ती कालत्रय का नियामक जीव है, उसको जो कोई ब्रह्मरूप सर्वका द्रष्टा चेतन आत्मा करके जानता है, वह पुरुष फिर अपने आत्मा की रक्षा के लिये किसी का भय नहीं करता है, क्योंकि जब द्वैतभाव नष्ट हो जाता है, तब न भय उसको दूसरे से और न दूसरे को भय उससे होता है सब में अपने ही को देखता है, और आपको सबमें देखता है, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ५४-

यःपूर्वमिति ॥ ब्रह्माण्ड का आरम्भक हिरण्यगर्भ जो पञ्चस्थूल महाभूत के प्रथम ज्ञानस्वरूप ब्रह्म से उत्पन्न हुआ है और जो कार्य कारण सहित हर एक के हृद्याकाशमुहा विषे स्थित है उसको जो कोई मुमुक्षु ब्रह्मरूप करके देखता है वह ब्रह्म ही को देखता है, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था, और सम्पूर्ण कार्य कारण संघात में मिल करके स्थित है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ ५५-

या प्राणोनेति ॥ जो चेतनरूप आत्मा शब्दादि विषयों का भोक्ता है, वही प्राणोपलक्षित सूक्ष्मशरीर उपाधि करके प्रथम देवता हिरण्यगर्भ-

नामक परब्रह्म से उत्पन्न होता है, उसी हिरण्यगर्भ देवता अथवा अदिति के हृद्याकाशरूपी गुहा बिषे ब्रह्म स्थित है, तिसको जो देखता है वह ब्रह्म को ही देखता है, हे नचिकेता ! तूने जो आत्मतत्त्व पूछा था वह यह ही है, जो सम्पूर्ण भूतों के साथ तादात्म्यता को प्राप्त होकर उत्पन्न हुआ सा दीख पड़ता है वास्तव से उत्पत्ति आदिकों से रहित है ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ ५६-

अरण्योर्निहितेति ॥ पूर्वले मन्त्र करके हिरण्यगर्भ को ब्रह्मरूप करके वर्णन किया है, अब इस मन्त्र करके विराटरूपी अग्नि को भी ब्रह्मरूप करके कथन करते हैं ॥ अरण्योरिति ॥ जातवेदरूपी जो अग्नि है और जो अरणियों के याने दो लकड़ियों के मथन करने से निकलता है, और जो यज्ञों बिषे हविका भोक्ता है, और जो प्रत्येक शरीर में स्थित होकर भुक्त वस्तुओं को पचाता है, और जिसकी रक्षा योगी और क्रतुकादि ऐसे करते हैं जैसे गर्भवती स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है, और जिसकी स्तुति प्रतिदिन स्वर्ग की इच्छावाले करते रहते हैं, वही ब्रह्मरूप है, क्योंकि ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ९, पृष्ठ ५६-

यतश्चोदेति ॥ यमराज ने अग्नि को हिरण्यगर्भ का अवयव रूप करके नचिकेता के प्रति पूर्वले मन्त्र करके कहा है, अब इस मन्त्र करके इतर देवतों को भी हिरण्यगर्भ का अवयव रूप करके निरूपण करते हैं ॥ यतश्चोदेतीति ॥ जिस प्राणवायुरूप अधिदेवता से सूर्य उदय होता है, और जिसमें अस्तभाव को प्राप्त होता है तिसी प्राणवायु में सम्पूर्ण अग्नि आदिक और वागादिक देवता अर्पित हैं, जैसे रथ के चक्र में अरे अर्देत होते हैं, तिस प्राणवायु हिरण्यगर्भ को कोई भी देवता

उल्लंघन नहीं कर सकता है ॥ यह प्राणवायु अधिदेवता ही ब्रह्म है जिसको हे नचिकेता ! तूने पूछा था ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ५७-

यदेवेति ॥ प्र० ॥ यह जो सम्पूर्ण प्राणियों को ब्रह्मरूप करके कहा है सो अयुक्त है, क्योंकि उपाधि अवच्छिन्न चेतन संसारी है, और उपाधि से रहित जो चेतन है वह ब्रह्म है, विरुद्ध धर्मो वालों की ऐक्यता नहीं होती है ॥ उत्तर ॥ इसमें कोई दोष नहीं है, यदेवेह ॥ जो चेतन जीव की उपाधि बुद्धि में साक्षीरूप करके रहता है, वही चेतन मायारूपी ईश्वर की उपाधि में भी रहता है, जो चेतन ईश्वर की उपाधि माया में है, वही चेतन जीव की उपाधि बुद्धि में भी है, जो पुरुष वस्तु के भेद से शून्य ब्रह्म में भी नानात्वभाव देखता है, और समझता है, कि मैं ब्रह्म से भिन्न हूं, और मेरे से ब्रह्म भिन्न है, वह मृत्यु से भी मृत्यु को अर्थात् पुनः २ जन्म मरण को प्राप्त होता है ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ५८-

मनसैवेदमिति ॥ जीवात्मा और ब्रह्मात्मा के अभेद ज्ञान के साधन को अब कहते हैं ॥ मनसा ॥ एकाग्र मन करके यह ब्रह्म प्राप्तव्य है याने जानने के योग्य है, ब्रह्म जीव में कुछ भी भेद नहीं है, जो मूढ़ पुरुष इस ब्रह्म में नानात्वभेद को देखता है, वह मर कर बार २ क्षुद्र योनियों को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ ५८-

अंगुष्ठमात्र इति ॥ आत्मज्ञान की दृढ़ता के लिये यमराज फिर अभेद का ही उपदेश करते हैं ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ अंगुष्ठपरिमाण मनुष्य का हृदयाकाशरूपी पुर है, तिसके भीतर रहने से आत्मा अंगुष्ठपरिमाणवाला कहा जाता है, उपाधिपरिमाण से पुरुष भी परिमाणवाला कहा जाता है, वास्तव से यह आत्मा सर्वत्र पूर्ण है, और शरीर के भीतर साक्षी-

रूप करके स्थित है और भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों में होनेवाले जितने पदार्थ हैं, उन सबका प्रेरक है, वह किसी का भय नहीं करता है । हे नचिकेता ! यही वह आत्मतत्त्व है जिसको तूने पूछा था ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ५६-

अंगुष्ठमात्रेति ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ उपाधि के परिमाण से अंगुष्ठमात्र परिमाणवाला आत्मा भी कहा जाता है, और पुर नाम शरीर का है, उसमें शयन करने से वह पुरुष भी कहा जाता है, और धूम से रहित अग्नि की तरह वह प्रकाशमान है, और भूत भव्यपदों करके सम्पूर्ण प्रपंच का ग्रहण करनेवाला है, अर्थात् सम्पूर्ण प्रपंचकों का प्रेरक है, और वर्तमान काल और भविष्यकाल विषे एकरस होकर रहता है और जैसे काल खण्डरहित है, तैसे आत्मा भी अखण्ड है, हे नचिकेता ! यह वही आत्मा है, जिसको तूने पूछा था ॥ १३ ॥

भावार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ५६-

यथोदकमिति ॥ आत्मा के भेददर्शी को संसार की प्राप्ति और आत्मा के एकत्वदर्शी को मोक्ष की प्राप्ति यमराज नचिकेता के प्रति कह चुके हैं, अन्न तिसी प्रसंग की समाप्ति को कहते हैं ॥ यथोदकमिति ॥ जैसे बड़े ऊंचे पर्वतों पर गिरा हुआ जल नीचे के देश में दौड़ जाता है, और जैसी २ उसको जगह मिलती है उसी २ आकार को प्राप्त होकर दिखलाई देता है, तैसे ही आत्मा शरीरादि उपाधियों के भेद करके भिन्न भिन्न हो रहा है, जो आत्मा को भिन्न २ करके ही जानता है, एक रूप करके नहीं जानता है, वह शरीरों को ही प्राप्त होता है, और जो नाना शरीरों में एक ही आत्मा देखता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

भावार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ ६०-

यथोदकमिति ॥ जैसे स्वच्छ जल मेघ से गिरा हुआ स्वच्छ जल में स्वच्छ जल बना रहता है, तैसेही आत्मा अभेद ज्ञानवाले के शुद्ध मन में स्थित होकर अपने शुद्ध ज्ञानस्वरूप से च्युत नहीं होता है, वह ज्यों का त्यों वैसा ही बना रहता है, हे नचिकेता ! ॥ १५ ॥

इति कठोपनिषदि चतुर्थवल्लीः ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र १, पृष्ठ ६१-

पुरमिति ॥ जीवाभिन्न ब्रह्म के प्रतिपादन करने के लिये प्रथम देहादि संघात से आत्मतत्त्व का विवेचन करते हैं ॥ पुरमिति ॥ जन्मादि षट् विकारों से रहित जो चेतन है और जो सूर्य के प्रकाश की तरह सर्वत्र ज्ञानरूप से शुद्ध मायारूपी शरीर बिषे स्थित है उसके साथ अपने स्थूल शरीररूपी पुरके स्वामी आत्मा से अभेद जान करके जो शोक को नहीं करता है याने शोक का हेतु जितना दृश्य प्रपञ्च है उससे अपने को पृथक् देखता है, वह मुक्ति को प्राप्त है, अथवा अद्वितीय आत्मज्ञान करके उसका कल्पित अज्ञानरूपी बंध नष्ट हो जाता है, और जैसे पुर के द्वार होते हैं तैसेही इस शरीररूपी पुरके भी एकादश द्वार हैं, दो श्रोत्र, दो चक्षु, दो नासिका, एक मुख, एक ब्रह्मन्ध्र (जिसको दशवां द्वार कहते हैं) एक नाभि, एक लिंग, एक गुदा ये सब मिलाकर एकादश द्वार हैं, इन एकादश द्वारोंवाला जो शरीर है, तिसका स्वामी जो आत्मा चेतन है सोई ब्रह्म है, हे नचिकेता ! जिसको तूने पूछा था, वह यह ही है ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ ६१-

हृत्सइति ॥ प्र० ॥ तुमने एक के शरीर के स्वामी आत्मा को ब्रह्म कहा पर एक शरीर का स्वामी तो परिछिन्न होता है इस कारण उस ब्रह्म को परिछिन्नता और अनेकता भी सिद्ध होगी क्योंकि शरीर अनेक हैं ॥

उ० ॥ सूर्यरूप होकर पवित्र आकाश में गमन करने से आत्मा का नाम “ शुचिषत् ” है और हंस भी है, वायुरूप होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने में निवास देने से उसका नाम “ वसु ” है और वायुरूप होकर आकाश में गमन करने से उसका नाम “ अन्तरिक्षसत् ” है, होतारूप होकर याने अग्निरूप होकर पृथिवीरूपी वेदी में स्थित होने से उसका नाम “ वेदिषत् ” है और सोमरूप होकर कलश में स्थित होने से उसका नाम “ दुरोणसत् ” है अथवा अतिथिरूप ब्राह्मण होकर यज्ञशाला में गमन करने से उसका नाम “ दुरोणसत् ” है, मनुष्यों में स्थित होने से उसका नाम “ नृषत् ” है, श्रेष्ठ देवताओं में स्थित होने से उसका नाम “ वरसत् ” है सत्यरूप होकर यज्ञ में स्थित होने से उसका नाम “ ऋतसत् ” है आकाश में व्यापक और सूक्ष्मरूप होकर स्थित होने से उसका नाम “ व्योमसत् ” है और शंख मकरादिरूप हो करके जल में उत्पन्न होने के कारण उसका नाम “ अञ्जा ” है, पृथिवी में उद्भिद्रूप हो करके उत्पन्न होने से उसका नाम “ गोजा ” है और कर्मों का फल जो देह है उसके साथ तद्रूप करके उत्पन्न न होने से उसका नाम “ क्रतुञ्जा ” है और पर्वतों से नदीरूप हो करके उत्पन्न होने से उसका नाम “ अद्रिजा ” है, इसप्रकार बाधा से रहित सर्वव्यापकरूपता ब्रह्म को ही कही है, वह न उपाधियों के परिच्छेद करके परिच्छेदवाला है, और न उपाधियों के नाना होने से नाना है, उपाधि सब मिथ्या है, वह सत्यरूप है । हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥२॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ ६२-

ऊर्ध्वमिति ॥ पूर्वोक्त ब्रह्मात्मा के स्वरूप के जानने के लिये अथ चिह्न को बताते हैं ॥ ऊर्ध्वम् ॥ हे नचिकेता ! जो आत्मा प्रणवायु को हृदयाकाश से ऊपर के देश में प्राप्त करता है, और जो अपानवायु

को हृदयाकाश से अधोदेश में फैकता है वही आत्मा शरीर के भीतर हृदयाकाश बिषे स्थित है और हृदय के परिमाण से परिच्छिन्न भान भी हो रहा है, अर्थात् जैसा छोटा हृदय है वैसा ही वह भी छोटे रूप से प्रतीत हो रहा है, (वामन का अर्थ प्रशस्त फल को प्राप्त करनेवाला भी है अर्थात् सर्व फलों को इन्द्रियों के प्रति प्राप्त करनेवाला जो आत्मा है उसी का नाम वामन है) उसी की चक्षुरादि सम्पूर्ण इन्द्रियां उपासना करती हैं, और उसी को अपने अपने व्यापाररूपी संपूर्ण बलियों को समर्पण करती हैं और जिस आत्मा के आधीन प्राणादि सम्पूर्ण करण हैं सो आत्मा प्राणादिकों से पृथक् है वह उनके नाश से नाश नहीं होता है हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ ६३-

अस्येति ॥ इस शरीर में वर्तमान जो आत्मा है जब वह शरीर से बाहर निकल कर चला जाता है तत्पश्चात् इस शरीर में फिर शेष क्या रहता है ? इस शरीर की स्थिति का कारण वही है जब वह चला जाता है तब कुछ नहीं रहता है, जब आत्मा देह का त्याग कर देता है तब यह देह जलाने के योग्य हो जाता है इसी वास्ते फिर लोक इस देह को जला भी देते हैं, इसी से सिद्ध होता है, कि देह की स्थिति का हेतु आत्मा ही है, हे नचिकेता ! जिसको तूने पूछा था वह वही आत्मा है ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ ६३-

न प्राणेनेति ॥ प्र० ॥ देह की स्थिति का हेतु तो अन्वयव्यतिरेक करके प्राण अपान ही प्रसिद्ध होते हैं, इनसे भिन्न तो कोई भी आत्मा सिद्ध नहीं होता है ॥ उ० ॥ न प्राणेनेति ॥ कोई भी जीव प्राणादि-वायु करके जीवता नहीं है, किन्तु प्राणादिकों से विलक्षण जो चेतन है, तिसी की सत्ता करके सब जीव जीवते हैं, सर्वका कारणीभूत जो

आत्मा है, उसी के आश्रय ये प्राण अपान आदि भी स्थित हैं, हे नचिकेता ! वही यह ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ६४-

हंतेति ॥ यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! पूर्वोक्त जो गोप्य और सनातन नित्य ब्रह्म है उसी को मैं फिर भी तुम्हारे प्रति कहूंगा, हे गौतम ! जिस तरह जीव ब्रह्म को भली प्रकार जानकर जन्म मरण से रहित हो जाता है और उसको न जानकर फिर जन्म मरणरूपी संसार को प्राप्त होता है उन सबको तुम्हारे प्रति कहूंगा, तुम सावधान होकर श्रवण करो ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ ६४-

योनिमिति ॥ जो कोई अज्ञानी पुरुष है अर्थात् देहधारी अहंकारी जीव है, वे मरण को प्राप्त होकर पुनः शरीर ग्रहण के लिये कर्मानुसार अथवा प्रवृत्तिशाल श्रवण अनुसार अनेक योनि को प्राप्त होते हैं, वीर्यद्वारा स्त्री की योनि में प्रवेश कर जाते हैं, वहां अन्य शरीर धारण कर निकल आते हैं, और जो अति पापिष्ठ हैं, वे वृद्धादि योनियों को प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ ६५-

यएषइति ॥ जो यह चेतन इन्द्रियों के सुप्त होने पर भी निद्रा से रहित होकर जागता रहता है, और स्वप्न में वाञ्छित विषयों को याने पशु पुत्रादिकों को रच लेता है, और जो स्वप्न के पदार्थों का द्रष्टा है, वही उसका अपना आत्मा है, वही शुद्ध है, और सम्पूर्ण उपाधियों से रहित है, वही ब्रह्म अविनाशी व्यापक है, उसी को श्रुतियां मोक्षस्वरूप भी कहती हैं, उसी के सब लोक आश्रित हैं उसको कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता है ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ६६-

अग्निरिति ॥ जैसे एक ही अग्नि भवन में याने मन्दिर में प्रविष्ट होकर उस मन्दिर के भीतर जितने रूपवाले काष्ठादि पदार्थ होते हैं उनको जलाते हुये उतने ही रूपोंवाला होता है याने गोले काष्ठ के साथ गोला लम्बे के साथ लम्बा टेढ़े के साथ टेढ़ा और सीधे के साथ सीधा दिखलाई देता है, परन्तु वास्तव से तेजोरूप अग्नि काष्ठ आदि उपाधियों से विलक्षण है, न वह गोला है, न वह लम्बा है, न वह टेढ़ा है, न चौड़ा है, तैसे सम्पूर्ण भूतों का एक ही अन्तरात्मा भी सब शरीरों के साथ तादात्म्याध्यास करके, शरीरों के आकार की तरह प्रतीत होता है, पर वास्तव से वह सब शरीरों से भिन्न है, शरीरों के गुण दोषों के साथ लिप्यमान कदापि नहीं होता है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ६६-

वायुरिति ॥ जैसे एक ही वायु मंदिर आदिकों में प्रवेश करके सब कोठरी और छत आदि के साथ मिल करके तत्तद्रूपवाला हो जाता है अर्थात् कोठरी आदिकों के भेद करके भेदवाला प्रतीत होने लगता है, परन्तु वह खुद मन्दिर या कोठरी या उनमें जो विकार है नहीं हो जाता है, तैसे ही एक ही आत्मा सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों के साथ मिल कर तत्तद्रूपवाला प्रतीत होने लगता है परन्तु उन उपाधियों के गुण दोषों करके दोषवाला नहीं होता है ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ६७-

सूर्योयथेति ॥ जैसे प्राणिमात्र के चक्षु में देवतारूप से सूर्य स्थित है और चक्षुओं करके निषिद्ध दर्शनजन्य या अधर्मजन्य पाप या चक्षु-द्वारा बाह्य दोष अर्थात् अपवित्र वस्तुओं के साथ संसर्ग भी रखता है पर उनके पाप या अपवित्रता से लिप्यमान नहीं होता है, और जैसे बाह्य तेजरूप सूर्य आकाश में स्थित है और सम्पूर्ण प्रवित्र अपवित्र वस्तुओं को

अपने किरणों करके स्पर्श करता है पर न वह पवित्र, न अपवित्र होता है, और जैसे वह एक रस ज्योंका त्यों आदि, अन्त, मध्य रहित प्रकाश सम्बन्ध रखते हुये भी असम्बन्ध स्थित है, तैसे ही सजातीय, विजातीय, स्वगत आदि भेदों से रहित सम्पूर्णभूतों का अन्तरात्मा सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धि में स्थित हुआ बुद्धि के गुण-दोषों करके लिप्यमान नहीं होता है ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ ६८-

एकइति ॥ जो सजातीय विजातीयादि भेद से शून्य परमात्मा है, वह एक ही है, और सम्पूर्ण जगत् को अपने वश करके बर्त्तता है, वह सम्पूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है, और सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धि में स्थित होकर अपने निरुपाधिरूप एक चिद्रूप को उपाधियों करके नाना-प्रकार का कर लेता है, उसी आत्मा को जो विवेकी पुरुष आचार्य के उपदेश के अनन्तर अपने में साक्षात् अनुभव करते हैं, उनको ही नित्य सुख की प्राप्ति होती है ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ६८-

नित्य इति ॥ नित्योऽनित्यानां ॥ जितने संसार में विनाशी पदार्थ हैं उनको भी व्यवहारिक नित्यत्व की सत्ता देनेवाला एक आत्मा ही है, अथवा नैयायिकों के मत में जो आकाश कालादि नित्य हैं उनमें व्यापकरूप होकर उनको जो सत्तास्फुरती नित्य देनेवाला है वह आत्मा ही है, और जितने चेतन ब्रह्माइन्द्रादिक हैं उन सबका भी नियन्ता आत्मा ही है, अथवा चेतनत्व करके लोकों को अभिमत जो बुद्धि आदिक हैं उनको भी जो अपनी चैतन्यता देकर चेतन करनेवाला है वह आत्मा ही है, जो दूसरे किसी की सहायता से रहित हो करके सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति वाञ्छित कामना को देता है वह आत्मा ही है, ऐसे आत्मा को जो विवेकी पुरुष देखते हैं अर्थात् अपना आत्मा

ज्ञानकर साक्षात्कार करते हैं उनको ही नित्य सुख की प्राप्ति होती है इतरों को नहीं ॥ १३ ॥

भावार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ६६-

तदेतदिति ॥ जो पूर्व कथन किया हुआ निरतिशय आत्मानन्द है अर्थात् जिससे अधिक और आनन्द नहीं है, जो आनन्द कथन करने को अशक्य है, जिस आनन्द को ज्ञानी लोग अपरोक्षता करके जानते हैं, और जो आनन्द विद्वानों को अनुभव करके ही सिद्ध है उस आनन्द को हम किस प्रकार से जानें, अर्थात् किस प्रकार से उसको हम मुमुक्षु लोग अपरोक्षता करके अपनी बुद्धिका विषय करें ॥ १४ ॥

भावार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ ७०-

न तत्रेति ॥ जब उस स्वात्मस्वरूप ब्रह्म में सूर्य जो सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशक है, प्रकाश नहीं कर सक्ता है, न चन्द्रमा सहित तारों के प्रकाश कर सक्ता है और न यह बिजुली प्रकाश कर सकती है, तब यह अग्नि उस ब्रह्म में क्या प्रकाश कर सकती है, उस आत्मा के प्रकाश से ही सब सूर्यादिक प्रकाशमान होते हैं, स्वतन्त्र न वे प्रकाशमान हैं और न दूसरों को प्रकाशमान कर सक्ते हैं ॥ १५ ॥

इति कठोपनिषदि पञ्चमवल्लीः ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र १, पृष्ठ ७१-

पूर्ववाली वल्ली में यमराज ने नचिकेता के प्रति कहा है कि आदित्यादिकों का भी प्रकाशक ब्रह्म है, अब इस छठी वल्ली में और प्रकार करके ब्रह्म के स्वरूप को कहते हैं ॥ ऊर्ध्वमिति ॥ यह जो प्रत्यक्षका विषय ब्रह्मा से लेकर स्थावरपर्य्यंत संसार है वह प्राचीन काल के एक वृक्ष के समान है ॥ प्र० ॥ मूल और शाखा से रहित संसार को

वृक्षरूपता कैसे है ॥ ३० ॥ ऊर्ध्व अर्थात् सब से उत्कृष्ट जो ब्रह्म है सोई इस संसार का मूल है और कार्योपाधि हिरण्यगर्भ इसके नीचे की शाखा है, जो संसाररूपी वृक्ष का मूल कारण ब्रह्म है वह शुद्ध है व्यापक है और अविनाशी है ॥ १ ॥

भावार्थ । मंत्र २, पृष्ठ ७१-

यदिति ॥ जो कुछ जगत् में प्रत्यक्ष का विषय दिखाई देता है वह सब ब्रह्म से ही उत्पन्न हुआ है, जिस ब्रह्म के व्यापक होने से और तीनों कालों में विद्यमान होने से सम्पूर्ण जगत् के प्राणीमात्र अपने अपने व्यापारों को करते हैं उसी ब्रह्म का नाम महद्भय है, जो सब से महान् हो, और संपूर्ण जगत् जिससे भय को प्राप्त हो उसी का नाम महद्भय है, और जैसे वज्र को हाथ में लिये हुये इन्द्र दूसरों के भय का कारण होता है तैसे ही ब्रह्म भी सब पुरुषों के लिये भय का हेतु है अर्थात् संपूर्ण जगत् उसी के भय से कांपता है जो विद्वान् इस प्रकार संपूर्ण जगत् के प्रवर्तक ब्रह्म को जानता है और उसी ब्रह्म को अपना आत्मा भी जानता है वही मुक्तस्वरूप होता है ॥ २ ॥

भावार्थ । मंत्र ३, पृष्ठ ७२-

भयादिति ॥ इस परमात्मा के भय से अग्नि तपता है अर्थात् अपने कार्य दाह प्रकाशादिकों को किया करता है, सूर्य प्रतिदिन पूर्व से पश्चिम ऊपर से नीचे चलकर संपूर्ण लोकों को प्रकाश करता रहता है, इन्द्र भी अपना कार्य याने वर्षा किया करता है, वायु रात्रि दिन अंतरिक्ष में दौड़ता ही रहता है, और मृत्यु यमराज उसी परमात्मा के भय से अहर्निशि पापियों को दण्ड देने के लिये दौड़ता फिरता है, जिस परमात्मा के भय से ऐसे २ बड़े सूर्यादिक भयभीत हो रहे हैं तब औरों की कौन सी गिनती है ॥ ३ ॥

भावार्थ । मंत्र ४, पृष्ठ ७३-

इहेति ॥ शरीर के पतन होने से पूर्व ही इस मनुष्यदेह में जो पुरुष ब्रह्मबोध में समर्थ होता है अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति के साधनों करके संपन्न होता है वही ब्रह्म को जान कर संसार से मुक्त हो जाता है, यदि ब्रह्मज्ञान के साधनों करके संपन्न नहीं होता है तो वह संसारचक्र में घटीयन्त्र की तरह शरीर धारण किया करता है ॥ ४ ॥

भावार्थ । मंत्र ५, पृष्ठ ७३-

यथेति ॥ प्र० ॥ यदि इस मनुष्यशरीर में आत्मज्ञान की प्राप्ति न होगी तो पितृआदिक लोकों में प्राप्ति होगी बहुत परिश्रम क्यों करना चाहिये ॥ उ० ॥ ब्रह्मलोक से अतिरिक्त पितृआदिक लोकों में आत्मज्ञान की प्राप्ति दुर्लभ है, ब्रह्मलोक में जाकर आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है परन्तु बिना उपासना के ब्रह्मलोक की प्राप्ति अति दुर्लभ है, और उपासना बहुत कठिन है, इसलिये इसी जन्म में आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये यत्न करना अवश्य है ॥ यथेति ॥ जैसे शुद्ध दर्पण में स्पष्ट अपना प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है तैसे ही साधनचतुष्टयसंपन्न मनुष्य की बुद्धि में आत्मा का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है, और जैसे इन्द्रियों से अजन्य विषयों को विषय करनेवाली अंतःकरण की वृत्तिरूपी स्वप्न-वस्था में कोई पदार्थ साफ नहीं दिखाई पड़ता है सब धुँधला सा दिखाई देता है वैसे ही आत्मा का स्वरूप पितृलोक में स्पष्ट नहीं दिखाई देता है, और जैसे कंपादिकों सहित जल में अपने शरीर का प्रतिबिम्ब कटाकुटा सा दिखाई पड़ता है तैसे ही गंधर्वलोक में आत्मा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट भान नहीं होता है और जैसे छाया और धूप पृथक् २ प्रतीत होते हैं तैसे ही ब्रह्मलोक में उपाधि से रहित चेतन आत्मा का स्वरूप सूर्यवत् दिखाई देता है ॥ ५ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ७४-

इन्द्रियाणामिति ॥ आत्मा के साक्षात्कार में विवेकरूपी ज्ञान के साधन को और उसके फल को अब कहते हैं ॥ इन्द्रियाणां ॥ श्रोत्रादिक ज्ञान इन्द्रियां जो ज्ञान के कारण हैं याने साधन हैं वे आकाशादिक भूतों से पृथक् २ उत्पन्न हुये हैं इसलिये वे सब आत्मा के स्वरूप से भिन्न हैं, उनके परस्पर भेद को जो चेतन पुरुष शरीर में स्थित होकर जानता है, अर्थात् जाग्रत् में इन्द्रियों के व्यापारों को जानता है, और स्वप्न में उनके शयन करने के व्यापार को जानता है, उस साक्षी चेतन पुरुष की साक्षात्कार करके विद्वान् शोक से तरजाता है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र ७, पृष्ठ ७५-

इन्द्रियेभ्य इति ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों से संकल्प विकल्परूपी मन श्रेष्ठ है और संकल्प विकल्परूपी मन से बुद्धि श्रेष्ठ है और व्यष्टिरूपी बुद्धि से समष्टिरूपी बुद्धि श्रेष्ठ है और समष्टिरूपी बुद्धि से अव्याकृत जो संपूर्ण जड़ जगत् आदि का मूल कारण प्रकृति है वह श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

भावार्थ । मंत्र ८, पृष्ठ ७५-

अव्यक्तादिति ॥ अव्यक्त से परे जो सब विषे व्यापक पुरुष है वह आत्मा है, वह उत्कृष्ट है, वह साक्षात् सर्वत्र पूर्ण है ॥ प्र० ॥ आत्मा का तो प्रत्यक्ष नहीं होता है, वह सुख दुःखादिक गुणों का आश्रयत्व करके अनुमेय है ॥ सुखदुःखादिः साश्रयः गुणत्वात् रूपादिवत् ॥ सुख दुःखादिक गुण होने से किसी के आश्रित अवश्य होते हैं क्योंकि जो २ गुण होता है वह द्रव्य के आश्रित ही होता है, जैसे रूप रसादिक गुण पृथ्वी आदिक द्रव्य के आश्रित ही होते हैं तैसे ही पृथ्वी आदि से अलग नहीं रह सकते हैं सुख दुःखादिक गुण भी किसी के आश्रित ही मानने पड़ेंगे ये गुण जड़ पृथ्वी आदिकों के आश्रित तो नहीं रह सकते हैं और चूंकि सुख दुःख चेतन ही में

प्रतीत होते हैं इसलिये आत्मा ही इनका आश्रय सिद्ध होता है और सुख दुःखादिक गुणों करके अनुमेय है ॥ ३० ॥ सुख दुःखादिक सब अन्तःकरण के आश्रित हैं अर्थात् अन्तःकरण के धर्म हैं आत्मा के नहीं, इन करके आत्मा अनुमेय यानी अनुमान प्रमाण का विषय नहीं है क्योंकि धर्म धर्मी को दिखाता है अन्य को नहीं, आत्मा अनुभितिका जनक जो सुख दुःखादि लिंग याने चिह्न हैं उनसे भी वह परे है, श्रुति कहती है ॥ न तस्य कार्यं करणं च विद्यते ॥ न उसका कोई कार्य यानी शरीर है, और न कोई उसका करण अर्थात् इन्द्रिय है, वह आत्मा निर्गुण है, अर्थात् गुणों से रहित है, ऐसे आत्मा को साक्षात्कार करके विद्वान् पुरुष मुक्त हो जाता है ॥ ८ ॥

भावार्थ । मंत्र ६, पृष्ठ ७६-

नसंदृशे तिष्ठतीति ॥ आत्मा का स्वरूप इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय न होने से चक्षु या किसी अन्य इन्द्रिय करके नहीं जाना जासक्ता है ॥ प्र० ॥ तत्र फिर वह आत्मा कैसे जाना जाता है ॥ ३० ॥ हृदय में एकाग्रता को प्राप्त हुई जो शुद्ध शंकलरहित बुद्धि है उसी करके आत्मा जानने को शक्य है, ऐसी बुद्धि उस पुरुष की होती है जिसने विचार करके प्रथम ही मनको अपने आधीन कर लिया है और श्रवण मनन करके असम्भावनादिक दोषों को दूर किया है, जब सब विकार पुरुष के नष्ट हो जाते हैं तब वह आत्मतत्त्व को जानकर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ॥ ६ ॥

भावार्थ । मंत्र १०, पृष्ठ ७६-

यदेति ॥ जिस काल में अविद्या के नाश होने पर मन के सहित पाचों ज्ञानेन्द्रियां अपने २ व्यापार से निवृत्त हो जाती हैं और निश्चयात्मिक बुद्धि भी अपने व्यापार को त्याग देती है अर्थात् जब मन,

बुद्धि और ज्ञान इन्द्रियां अविचारहित शुद्ध आत्मा में लीन हो जाती हैं उस अवस्था को योगी परमगति कहते हैं ॥ १० ॥

भावार्थ । मंत्र ११, पृष्ठ ७७-

तामिति ॥ जिस काल में इन्द्रियों की धारणाशक्ति स्थिर हो जाती है अर्थात् किसी विषय की ओर मन चलायमान नहीं होता है उस अवस्था को योगिजन योग कहते हैं, योग के आरम्भकाल में योगी अप्रमत्त हुआ २ चित्त की एकाग्रता के प्रति प्रयत्न करता है, क्योंकि जब तक वह अपने को सर्व विषयों से पृथक् नहीं कर लेता है तब तक वह योगी नहीं है, जब वह स्वआत्मा में और परमात्मा में भेद नहीं पाता है तब वह यथार्थ योगी है, यह समझ करके योगी अहर्निश चित्तवृत्ति को अन्तर्मुख रखने का यत्न किया करता है ॥ ११ ॥

भावार्थ । मंत्र १२, पृष्ठ ७७-

नैव वाचेति ॥ यह जो अपना आत्मा है अर्थात् जीवाभिन्न जो प्रत्यगात्मा है सो वाग्निन्द्रिय करके या इदन्ता करके कथन करने के योग्य नहीं है, और न मन करके अथवा चक्षु इन्द्रिय करके भी देखने को शक्य है ॥ प्र० ॥ जो वागादि इन्द्रियों का विषय नहीं है उसकी स्थिति भी नहीं है आत्मा यदि वागादि करणों का विषय नहीं है तो उसकी स्थिति भी नहीं है ॥ उ० ॥ यदि आत्मा वागादिकों का अविषय है तो “ नहीं है ” इस पद की स्थिति न होनी चाहिये, अस्ति और नास्ति इन दोनों की स्थिति अस्ति ही में घटती है, और चूंकि अस्ति सत् रूप है और सत् परमात्मरूप है और यावत् पदार्थ हैं सब अस्ति से ही सम्बन्ध रखते हैं इसलिये सब सत् रूप परमात्मा हैं, यह भावना केवल श्रद्धासंयुक्त ही पुरुष में होती है, इसलिये जो श्रद्धावाले अस्तित्ववादी पुरुष हैं उन्हींको ही ब्रह्म प्राप्त होता है नास्तिक को नहीं ॥ १२ ॥

भावार्थ । मंत्र १३, पृष्ठ ७८-

अस्तीति ॥ अब आत्मा की उपलब्धि के कारण को बतलाते हैं ॥ अस्तीति ॥ प्रथम तो जगत् का कारण जो सत् है उस करके आत्मा की उपलब्धि होती है याने आत्मा का ज्ञात होता है, जितने लोक लोकान्तर हैं और जितनी स्थावर जङ्गम सृष्टि और पदार्थ हैं उनकी सिद्धि केवल अस्तिपद करके होता है चाहे वह अस्तिपद उसके संग प्रयोग हो चाहे नहीं हो, यह पट है, यह पृथ्वी है, यह जल है, यह मनुष्य है, यह लोक है, यह परलोक है इन सब की सिद्धि अस्ति शब्द करके होती है और आत्मा का स्वरूप अस्ति है इसलिये सब पदार्थों में आत्मा है यह सिद्धि होता है । यदि अस्तिपद को निकाल दिया जाये तो कोई पदार्थ नहीं सिद्ध होगा, इस रीति से उपाधि करके विशिष्ट आत्मा की उपलब्धि होती है । पश्चात् शुद्ध मन के मनन से उपाधिरहित निर्मल आत्मा की उपलब्धि होती है, इसीलिये आत्मा को विदित अविदित से पृथक् श्रुति ने कथन किया है । जो पुरुष प्रथम आत्मा को अस्तित्वरूप करके जानता है उसी के शुद्ध बुद्धि में आत्मा अपने प्रकाश को प्रगट करता है और वह साक्षात् आत्मस्वरूप हो जाता है ॥ १३ ॥

भावार्थ । मंत्र १४, पृष्ठ ७९-

यदेति ॥ आत्मज्ञान से पूर्व जितनी कामना इस विद्वान् के हृदय में स्थित होती हैं वे आत्मज्ञान के पश्चात् छूट जाती हैं अर्थात् सर्वत्र आत्मदृष्टि करके नाश को प्राप्त हो जाती हैं, और उसी क्षण में वह अमर हो जाता है अर्थात् बारम्बार जन्म मरण से रहित होकर इसी शरीर में ही ब्रह्मरूप हो जाता है ॥ १४ ॥

भावार्थ । मंत्र १५, पृष्ठ ७९-

यदा सर्वेति ॥ जिस काल में विद्वान् की हृदय स्थित ग्रन्थियां

अर्थात् बुद्धि विषे स्थित अनेक कामनारूपी ग्रन्थियां टूट जाती हैं और अहंमम वृत्तियां नाश हो जाती हैं तबही वह विद्वान् ब्रह्म रूप हो जाता है, यहीं तक सम्पूर्ण वेदों का उपदेश है, इससे परे वेदों का उपदेश नहीं है क्योंकि ब्रह्म की प्राप्ति से परे और कोई प्राप्ति नहीं है॥ १५॥

भावार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ ८०—

शतं चैकेति ॥ ब्रह्मवित् को इसी शरीर में ब्रह्म की प्राप्ति कही है, और जो पुरुष आत्मतत्त्व को नहीं जानते हैं उनको अग्निविद्या करके ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है और उनसे विपरीत जो अज्ञानी हैं उनको संसारचक्र की प्राप्ति होती रहती है, एक सौ एक प्रधान नाड़ी हृदय देश से निकसी हैं और उन नाड़ियों के मध्य में एक सुषुम्णा नाड़ी ब्रह्मरंध तक गई है, वह ब्रह्मलोक के सम्मुख रहती है, इसी सुषुम्णा नाड़ी द्वारा शरीर त्याग पश्चात् अग्नि का उपासक ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है, और प्रलय पर्यन्त निवास करता है, वह ब्रह्मलोक सब लोकों के ऊपर है, और ब्रह्मा से उपदेश पाकर मुक्त हो जाता है, और नाड़ियां इतर लोकों के सम्मुख हैं, उनके द्वारा जब जीव उत्क्रमण करता है तब वह शरीरान्तर को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

भावार्थ । मंत्र १७, पृष्ठ ८०—

अङ्गुष्ठमात्र इति ॥ जो उपाधि सम्बन्ध करके प्रत्यक् आत्मा अंगुष्ठ परिमाण प्राणियों के हृदयाकाशदेश विषे सर्वकाल स्थित है तिस आत्मा को अपने शरीरत्रय से धीरता के साथ पृथक् करे और जैसे मूंज से सक्कड़े को पृथक् करते हैं तैसे ही आत्मा को शरीर के सब विकारों से पृथक् करके शुद्ध अमररूप जाने ॥ १७ ॥

भावार्थ । मंत्र १८, पृष्ठ ८१—

मृत्युप्रोक्तेति ॥ यमराज करके कथन करी हुई जो ब्रह्मविद्या है उस ब्रह्मविद्या को नचिकेता प्राप्त होकर और अविद्याजन्य कर्मादिकों से

रहित होकर और मृत्यु से मुक्त होकर अमरभाव को प्राप्त होता भया, और भी जो कोई मुमुक्षु पुरुष इस अभ्यात्मविद्या का जाननेवाला है वह भी ब्रह्म को प्राप्त होकर आवागमन से छूट जाता है ॥ १८ ॥

भावार्थ । मंत्र १६, पृष्ठ ८२-

ॐ सहनायवतु ॥ हम शिष्य और आचार्य दोनों को उपनिषद् प्रकाशित परमेश्वर रक्षा करे, हम दोनों को विद्या के फल करके पालना करे, हम दोनों के विद्याकृत सामर्थ्य को बढ़ावे, हम दोनों का अध्ययन किया हुआ तेजवान् होंवे, हम दोनों परस्पर द्वेष को न प्राप्त होवें ॥ १६ ॥ ओं शान्तिः ३ ॥

इति कठोपनिषदि षष्ठीवेङ्गली समाप्ता ६ ॥

इति कठोपनिषद् भावार्थः समाप्तिमगात् ॥
